3 राजधानी
प्रदूषण पर लगाम लगाएंगी 500 इलेक्ट्रिक बसें

6 अभिमत
भारत में लोकतंत्र की विजय

10 राष्ट्रीय
विस्फोट में बीएसएफ का एक जवान बलिदान

11 विदेश
अमेरिकी हिन्दू प्राणप्रतिष्ठा समारोह का मनाएंगे जश्न

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 41
नई दिल्ली, शुक्रवार, 15 दिसंबर, 2023
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

सूर्य कुमार का शतकीय प्रहार
स्पोर्ट्स-12

लोकतंत्र पर हमला बर्दाश्त नहीं किया जाएगा: पीएम

मोदी ने देश विरोधी तत्वों को चेताया, कहा- किसी भी गलतफहमी में न रहें

● प्रधानमंत्री ने अपने वरिष्ठ कैबिनेट मंत्रियों से लोकसभा में सुरक्षा उल्लंघन को गंभीरता से लेने को कहा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक दिन पहले संसद में बड़े पैमाने पर सुरक्षा उल्लंघन पर चर्चा के लिए बृहस्पतिवार को अपने मंत्रिपरिषद के शीर्ष मंत्रियों के साथ बैठक बुलाई। सूत्रों ने कहा कि पीएम ने इस मामले पर गंभीर चिंता व्यक्त की और घटना पर खेद भी व्यक्त किया, जिसे उन्होंने लोकतंत्र के मंदिर पर हमला बताया।

प्रधानमंत्री ने अपने वरिष्ठ कैबिनेट मंत्रियों से लोकसभा में सुरक्षा उल्लंघन को 'गंभीरता' से लेने को कहा। समझा जाता है कि प्रधानमंत्री ने बृहस्पतिवार को संसद की शुरुआत से पहले एक बैठक में अपने मंत्रिपरिषद से कहा, 'इस घटना को गंभीरता से लें। राजनीति में शामिल न हों। हम सभी को सावधानी बरतनी होगी।' सूत्रों ने कहा कि मोदी ने घटनाओं के बाद की गई कार्रवाई और जांच के निर्देशों के बारे में नवीनतम जानकारी चाही और कहा कि राष्ट्र के खिलाफ युद्ध के अपराधियों को जल्द से जल्द पकड़ा जाए ताकि यह स्पष्ट संदेश दिया जा सके कि वर्तमान शासन ऐसे मामलों में बेहद सख्त है। समीक्षा बैठक से संबंधित एक सूत्र ने पीएम के हवाले से कहा, 'ऐसी किसी भी राष्ट्र विरोधी घटना के प्रति जीरो टॉलरेंस होनी चाहिए।' लोकसभा सचिवालय ने सुरक्षा चूक की घटना के लिए आठ कर्मियों को निलंबित कर दिया, जिससे 2001 में संसद पर आतंकवादी हमले की 22वीं बरसी पर बड़े पैमाने पर दहशत फैल गई।

निलंबित कर्मी दिल्ली पुलिस के थे जो संसद सुरक्षा के लिए प्रतिनियुक्ति पर थे और उन्हें आगंतुकों और मीडियाकर्मियों की तलाशी का काम सौंपा गया था। एक पदाधिकारी ने कहा कि हालांकि वे संसद की सुरक्षा के लिए प्रतिनियुक्ति पर हैं, लेकिन उनका कैडर-नियंत्रण प्राधिकारी वह संगठन है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं, न कि लोकसभा सचिवालय। नई संसद भवन के लिए नई सुरक्षा व्यवस्था में दिल्ली पुलिस के जवानों को संसद परिसर के साथ-साथ इमारत में प्रवेश करने वालों की जांच के लिए तैनात किया गया है। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) परिधि सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है। समर्पित संसद सुरक्षा सेवाएँ, जो पुरानी योजना में पूरी सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार थीं, अब केवल सिफारिशों के अनुसार प्रवेश पास जारी करने तक ही सीमित हैं। सरकार ने बृहस्पतिवार को कहा कि लोकसभा सुरक्षा उल्लंघन की घटना की उच्च स्तरीय जांच शुरू कर दी गई है और विपक्ष से इस मुद्दे का राजनीतिकरण नहीं करने को कहा। उल्लंघन पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कई संसद सदस्यों ने कहा कि आगंतुकों को परिसर में प्रवेश करने से पहले पांच स्तरों की सुरक्षा से गुजरना पड़ता है और आगंतुक गैलरी में जाने के लिए एक सांसद के कार्यालय से हस्ताक्षर की आवश्यकता होती है। यह उल्लंघन 2001 में संसद पर हमले के 22 साल बाद हुआ था।

जोशी ने कहा कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने घटना के बाद तुरंत सदन के नेताओं के साथ बैठक की और संसद की सुरक्षा को और मजबूत करने के सुझावों को सुना। उन्होंने कहा कि सांसदों द्वारा दिए गए कुछ सुझावों को पहले ही लागू किया जा चुका है और अध्यक्ष ने खुद कहा है कि भविष्य में संसद की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए और उपाय किए जाएंगे। जोशी ने कहा कि यह मामला हम सभी से जुड़ा है और हमें एक स्वर में बोलना होगा। 'मंत्री ने कहा कि इतने गंभीर राष्ट्रीय मुद्दे पर किसी से भी राजनीति करने की उम्मीद नहीं की जाती है। गृह मंत्रालय (एमएचए) ने लोकसभा सचिवालय के अनुरोध (शेष पेज 9)

एमएचए सक्रिय: एनआईए ने जांच तेज की, पूरे देश में फैली टीम

● सुरक्षा एजेंसियों को अभी तक आरोपियों का किसी आतंकी समूह से कनेक्शन नहीं मिला, यूएपीए लगाया

राजेश कुमार। नई दिल्ली

वाहनों की जांच करते दिल्ली पुलिस कर्मी: फोटो: रंजन डिमरी

कई जांच एजेंसियों द्वारा सिलसिलेवार पूछताछ के बाद बुधवार को संसद में सुरक्षा उल्लंघन के मामले में गिरफ्तार किए गए चार आरोपियों पर आतंकवाद विरोधी गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत आरोप लगाए गए हैं। वहीं इस घटना के मुख्य आरोपी ललित झा को बृहस्पतिवार शाम गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि झा को राष्ट्रीय राजधानी से गिरफ्तार किया गया। झा पर मुख्य साजिशकर्ता होने का संदेह है। हालांकि सुरक्षा एजेंसियों को अभी तक किसी आतंकी समूह से कनेक्शन नहीं मिला है। दिल्ली पुलिस ने कई टीमों का गठन किया है और वे देश भर में कई स्थानों पर जांच के लिए घूम रही हैं और मोबाइल और इंटरनेट ऑपरेटरों सहित अन्य एजेंसियों से सहयोग मांग रही हैं। दिल्ली की एक अदालत ने चारों आरोपियों-सागर शर्मा (26), मनोरंजन डी (34), अमोल शिंदे (25) और नीलम देवी (37) को सात दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। शहर पुलिस ने उन्हें एनआईए मामलों की विशेष न्यायाधीश हरदीप कौर के समक्ष पेश किया, जिन्होंने उनसे 15 दिनों के लिए हिरासत में पूछताछ की मांग की। 15 दिन की रिमांड मांगते हुए दिल्ली पुलिस ने कोर्ट से कहा कि यह संसद पर सुनियोजित हमला था। पुलिस का कहना है कि लखनऊ में विशेष जूते बनाए जाते थे, जिसकी जांच होनी चाहिए। जांच के लिए उन्हें मुंबई, मैसूर और लखनऊ ले जाने की जरूरत है। दिल्ली पुलिस ने अदालत को आगे बताया कि उन्होंने उनके खिलाफ (शेष पेज 9)

राजस्थान के नए सीएम का शपथ ग्रहण आज

पायनियर समाचार सेवा। जयपुर

भजनलाल शर्मा शुक्रवार को यहां राजस्थान के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेंगे। ऐतिहासिक अल्बर्ट हॉल के बाहर होने वाले समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह तथा भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा भी शामिल होंगे। राज्यपाल कलराज मिश्र, भजन लाल शर्मा को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाएंगे। साथ ही दीया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा को मंत्रिमंडल सदस्य की शपथ दिलाएंगे।

समारोह के लिए व्यापक सुरक्षा बंदोबस्त किए गए हैं और तैयारियों को अंतिम रूप देने का काम बृहस्पतिवार को भी जारी रहा। समारोह में बड़ी संख्या में लोगों के आने की संभावना है। पार्टी के एक प्रवक्ता ने कहा कि समारोह के लिए केंद्रीय नेताओं और राज्य के मुख्यमंत्रियों को निमंत्रण भेजा गया है। समारोह से पहले राजधानी के मुख्य मार्गों और प्रवेश मार्गों को सजाया गया है। इनमें भाजपा के झंडे और होर्डिंग कटआउट सहित केंद्र सरकार की तमाम जनकल्याणकारी योजनाओं से जुड़े पोस्टर और बैनर भी लगाए गए हैं।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की गारंटी ही मोदी की गारंटी: योगी

आजमगढ़, वाराणसी (भाषा)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की गारंटी ही मोदी की गारंटी है और यह शत-प्रतिशत जमीन पर उतरेगी। मुख्यमंत्री ने आजमगढ़ और वाराणसी में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रमों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा, देश और प्रदेश में खुशहाली, सुरक्षा, समृद्धि के साथ भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की गारंटी ही मोदी की गारंटी है। यह शत प्रतिशत क्रियान्वित होने वाली गारंटी है। उन्होंने कहा, हम सभी भारतीयों का संकल्प होना चाहिए कि हमारा देश दुनिया की सबसे बड़ी ताकत बने। इसके लिए आतंकवाद, नक्सलवाद, जातिवाद और भ्रष्टाचार को समाप्त करना होगा। देश की जनता की खुशहाली से ही भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बनेगा। आदित्यनाथ ने पिछली सरकारों पर आरोप लगाते हुए कहा, पहले योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता था, मिलता था तो केवल चूरन। योजनाओं में भ्रष्टाचार और बंदरबांट होती थी, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने (शेष पेज 9)

निलंबन के बाद संसद के बार टीएमसी सांसद डेरेक ओ ब्रायन तथा अन्य

संसद में हंगामा, 14 सांसद निलंबित

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● लोकसभा के 13 और राज्यसभा से एक सांसद पूरे सत्र के लिए सस्पेंड, निलंबन के बावजूद सदन में पहुंचे टीएमसी नेता डेरेक ओ ब्रायन

संसद की कार्यवाही में व्यवधान के आरोप में बृहस्पतिवार को राज्यसभा के एक सदस्य सहित विपक्षी बेंच के कुल 14 सांसदों को शीतकालीन सत्र की शेष अवधि के लिए निलंबित कर दिया गया। विभिन्न दलों के तेरह विपक्षी सांसदों को लोकसभा से निलंबित कर दिया गया, जबकि एक टीएमसी सांसद डेरेक ओ ब्रायन को उच्च सदन में कार्रवाई का सामना करना पड़ा।

लोकसभा में सुरक्षा उल्लंघन पर गृह मंत्री अमित शाह और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के बयान की विपक्ष की मांग के बीच संसदीय कार्य मंत्री प्रल्हाद जोशी ने सांसदों के निलंबन के लिए अलग-अलग मौकों पर दो प्रस्ताव पेश किए। अपने निलंबन से पहले, सांसद बुधवार के सुरक्षा उल्लंघन पर सरकार से बयान की मांग के साथ नारे लगाते हुए सदन के वेल में चले गए। लोकसभा में पहला स्थगन प्रश्नकाल के दौरान देखने को मिला जब विपक्ष के हंगामे के बीच इसे दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया गया। दोपहर दो बजे जोशी ने सरकार की ओर से बयान पढ़ा और कहा कि संसद में आंतरिक सुरक्षा स्पीकर के दायरे में आती है।

इसके बाद उन्होंने हंगामे के बीच पांच सांसदों को निलंबित करने का प्रस्ताव पेश किया। प्रस्ताव में कहा गया कि मैं निम्नलिखित प्रस्ताव पेश करता हूं कि इस सदन ने टी एन प्रतापन, हिबी ईडन, जोथिमानी, राम्या हरिदास और डीन कुरियाकोस के (शेष पेज 9)

श्रीकृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह परिसर का होगा सर्वे

● इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने हिंदू पक्ष की याचिका स्वीकार की

पायनियर समाचार सेवा। प्रयागराज

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर से सटी शाही ईदगाह मस्जिद के परिसर का सर्वेक्षण करने के लिए अदालत की निगरानी में अधिवक्ता आयुक्त नियुक्त करने की मांग करने वाली याचिका बृहस्पतिवार को स्वीकार कर ली। न्यायमूर्ति मयंक कुमार जैन ने याचिका स्वीकार करते हुए कहा, आयोग गठित करने के लिए वादी की याचिका स्वीकार की जाती है।

जहां तक इस आयोग के तौर तरीकों और प्रारूप का संबंध है, इस अदालत को यह उचित प्रतीत होता है कि इस उद्देश्य के लिए पक्षकारों के वकीलों को सुना जाए। अदालत ने सुनवाई की अगली तारीख 18 दिसंबर तय की है। यह याचिका भगवान श्री कृष्ण विराजमान और सात अन्य लोगों द्वारा अधिवक्ता हरिशंकर जैन, विष्णु शंकर जैन, प्रभाष पांडेय और देवकी नंदन के जरिए दायर की गई थी जिसमें दावा किया गया है कि भगवान कृष्ण की जन्मस्थली उस मस्जिद के नीचे मौजूद है और ऐसे कई संकेत हैं जो यह साबित करते हैं कि वह मस्जिद एक हिंदू मंदिर है। अधिवक्ता विष्णु शंकर जैन के मुताबिक, इस याचिका में कहा गया है कि वहां कमल के आकार का एक स्तंभ है जोकि हिंदू मंदिरों की एक विशेषता है। इसमें यह भी कहा गया है कि वहां शेषनाग की एक प्रतिकृति है जो हिंदू देवताओं में से एक हैं और जिन्होंने जन्म की रात भगवान कृष्ण की रक्षा की थी। याचिका में यह भी बताया गया कि मस्जिद के स्तंभ के आधार पर हिंदू धार्मिक प्रतीक हैं और नक्काशी में ये साफ दिखते हैं। आयुक्त की नियुक्ति के लिए आवेदन स्वीकार करते हुए अदालत ने कहा, यहां यह उल्लेख करना उचित है कि इस अदालत द्वारा आयुक्त की नियुक्ति के लिए सुनवाई में प्रतिवादी हिस्सा ले सकते हैं।

इसके अलावा, यदि वे आयोग की रिपोर्ट से पीड़ित महसूस करते हैं तो उनके पास उस रिपोर्ट के खिलाफ आपत्ति दाखिल करने का अवसर होगा। अदालत ने आगे कहा, आयुक्त द्वारा दाखिल रिपोर्ट हमेशा पक्षकारों के साक्ष्य से संबंधित होती है और यह साक्ष्य में स्वीकार्य है। आयुक्त सक्षम गवाह होते हैं और किसी भी पक्ष की इच्छा पर उन्हें सुनवाई के दौरान साक्ष्य के लिए बुलाया जा सकता है। दूसरे पक्ष के पास जिरह करने का हमेशा एक अवसर होगा। अदालत ने कहा, यह भी ध्यान रखना होगा कि तीन अधिवक्ताओं के पैनल वाले आयोग की नियुक्ति से किसी भी पक्ष को कोई नुकसान नहीं होगा। आयुक्त की रिपोर्ट इस मामले की मेरिट को प्रभावित नहीं करती। आयोग के क्रियान्वयन के दौरान परिसर की पवित्रता सख्ती से बनाए रखने का निर्देश दिया जा सकता है। अदालत ने आगे कहा, यह भी निर्देश दिया जा सकता है कि किसी भी तरीके से ढांचे को कोई नुकसान ना पहुंचे। आयोग उस संपत्ति की वास्तविक स्थिति के आधार पर अपनी निष्पक्ष रिपोर्ट सौंपने को बाध्य है। वादी और प्रतिवादी के प्रतिनिधि अधिवक्ताओं के पैनल के साथ रहकर उनकी मदद कर सकते हैं जिससे जगह की सही स्थिति इस अदालत के समक्ष लाई जा सके। इससे पूर्व, सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड की ओर से इस आवेदन का यह कहते हुए विरोध किया गया था कि इस चरण में आवेदन पर कोई आदेश पारित करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वाद की पोषणीयता को लेकर उनकी आपत्ति लंबित (शेष पेज 9)

घटते रिहायश के कारण मानव बस्तियों में जा रहे वन्य पशु

कुमार चेलप्पन। कोच्चि

● केरल में लगातार बढ़ रही मानव-पशु संघर्ष की घटनाएं

केरल पुलिस के क्रैक शूटरों की 70 सदस्यीय टीम, वन विभाग के ट्रैंकुलाइजिंग विशेषज्ञ, वन रक्षक और मैसूर से विशेष रूप से बुलाए गए 'कुमकी' हाथी केरल के वायनाड जिले में आदमखोर के रूप में घोषित बाघ की तलाश में हैं। वायनाड के स्थानीय निवासियों का आरोप है कि पिछले हफ्ते बाघ ने एक व्यक्ति को मार डाला था जो वन उपज इकट्ठा करने के लिए आरक्षित जंगलों में गया था और उसका आधा खाया हुआ शव बरामद किया गया था।

नवंबर के अंत में वायनाड के जंगलों के बाहरी इलाके में लोगों ने एक तेंदुए का शव देखा। फिर भी कन्नूर जिले में उन अधिकारियों द्वारा एक और तेंदुए को मार दिया गया, जिन्हें इसकी सुरक्षा का काम सौंपा गया था। सरकारी बयान यह है कि बड़ी बिल्ली की मृत्यु तब हुई जब उसे एक कुएं से निकालने के मिशन के हिस्से के रूप में ट्रैंक्वलाइजर दिया गया था। दो दिनों के भीतर कोझिकोड जिले में साढ़े तीन साल के तेंदुए का शव मिला। वन अधिकारियों के मुताबिक साही से भिड़ंत में उसकी मौत हुई थी। इन मौतों ने केरल को 'जंगली जानवरों की कब्रगाह' की संज्ञा दे दी है। हालांकि वायनाड की महिला जिला वन अधिकारी ने बड़ी बिल्ली को बेहोश करने के आदेश जारी किए थे लेकिन वहां के मूल निवासी संतुष्ट नहीं हुए और उन्होंने पीड़ित के शव के साथ प्रदर्शन किया और मांग की कि बाघ को मार दिया जाए। जले पर नमक छिड़कते हुए, टीवी समाचार चैनल केरल-तमिलनाडु सीमा के एक गांव वलपराई में एक बाघ

प्रतीकात्मक चित्र

का हवाला देकर प्रसारित कर रहे हैं। वालपराई आरक्षित वनों से भरा हुआ था और बाघों, तेंदुओं, हाथियों और सूअरों के साथ-साथ खरगोश, सियार, लोमड़ी और हिरण जैसे छोटे और मध्यम जानवरों का निवास स्थान था। लेकिन अब नहीं है। वालपराई के आसपास होने वाली घटनाओं पर नज़र रखने वाले त्रिशूर स्थित पारिस्थितिकीविज्ञानी सुधीर दामोदरन ने कहा कि आरक्षित वनों ने चाय बागानों को रास्ता दिया और जैसे-जैसे बागानों की संख्या बढ़ी, जानवरों के घर सिकुड़ते गए। इसलिए बाघों और तेंदुओं का हवाला देना 'ब्रेकिंग न्यूज़' घटनाएँ हैं जैसे कि कोई बड़ी दुर्घटना हुई हो।' उन्होंने कहा कि आरक्षित वनों में बड़े पैमाने पर अतिक्रमण के कारण जंगली जानवर अपनी ही भूमि में पराये हो गये हैं।

सहायक वन संरक्षक पद से सेवानिवृत्त पायस ने कहा कि केरल के जंगलों में तेंदुए, बाघ और अन्य जंगली जानवरों की संख्या में कोई खास बढ़ोतरी नहीं हुई है। 'उनमें से कई जो अपने निवास स्थान से विस्थापित हो गए हैं, उन्हें नई बस्तियों में प्रवेश करने के लिए मजबूर किया गया है जिसके परिणामस्वरूप मानव-पशु संघर्ष हुआ है। बाघ, चीता और तेंदुआ शर्मीले जानवर हैं और हमेशा इंसानों से दूर रहते हैं। वे मनुष्यों पर तभी हमला करते हैं जब वे बूढ़े और अशक्त हो जाते हैं।' पायस के पास जंगली जानवरों से निपटने का तीन दशकों से अधिक का अनुभव है। इस साल की शुरुआत में केरल के इडुक्की जिले में अरी कोम्बन नामक एक जंगली हाथी द्वारा किए गए 'हमले' को लेकर हंगामा हुआ था। यह हाथी राशन की दुकानों में रखे चावल (अरी) को चुराने में माहिर है, जो उसका विशेष पसंद है। पानी और भोजन की कमी के कारण हाथी भी अपने प्रतिबंधित निवास स्थानों से बाहर आने को मजबूर हैं। इंजीनियर से पर्यावरणविद् बने सी आर नीलकांतन ने कहा, 'निहित स्वार्थों द्वारा वन भूमि के अतिक्रमण के परिणामस्वरूप जानवरों के लिए जगह कम हो गई है। हमें इन जानवरों को बचाने के लिए एक समाधान निकालना होगा।' दामोदरन ने कहा, दुर्भाग्य से, बाघ, तेंदुए और हाथियों का नाम मतदाता सूची में नहीं है और यही उनकी पीड़ा का कारण हो सकता है।

न्यू नोएडा से मालामाल होंगे ग्रेनो के किसान

जमीन मालिकों की लगी लॉटरी, शहर बसाने के लिए खरीदी जाएगी 84 गांवों की जमीन

पायनियर समाचरार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा क्षेत्र के किसानों की लॉटरी लग गई है। यहां बनने वाला न्यू नोएडा शहर ग्रेटर नोएडा क्षेत्र के 84 गांवों की 21 हजार हेक्टेयर जमीन पर विकसित होगा। न्यू नोएडा शहर बसाने के लिए 84 गांवों के किसानों की जमीन खरीदी अधिग्रहण की जाएगी। जमीन अधिग्रहण होने से ग्रेटर नोएडा क्षेत्र के 84 गांवों के किसान मालामाल हो जाएंगे।

न्यू नोएडा की सांकेतिक फोटो।

आपको बता दें कि उत्तर प्रदेश सरकार ग्रेटर नोएडा क्षेत्र में न्यू नोएडा शहर बसाने का फैसला कर चुकी है। न्यू नोएडा शहर को बसाने के लिए मास्टर प्लॉन भी तैयार हो चुका है। मास्टर प्लॉन को अंतिम मंजूरी के लिए नोएडा प्राधिकरण की बोर्ड बैठक में आखिरी बार रखे जाने की औपचारिकता मात्र शेष है। नोएडा प्राधिकरण की दिसंबर 2023 में होने वाली बैठक में न्यू नोएडा शहर बसाने पर अंतिम मोहर लग जाएगी। उत्तर प्रदेश सरकार व नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों का दावा है कि न्यू नोएडा पूरे उत्तर भारत का सबसे सुंदर शहर बनेगा। न्यू नोएडा बसाने के लिए ली जाने वाली जमीन के बदले किसानों को एक हजार करोड़ रूपये बजट दिए जाएंगे। आपको बता दें कि जब से ग्रेटर नोएडा क्षेत्र में न्यू नोएडा शहर बसाने का प्रस्ताव पास हुआ है तब से इस क्षेत्र में जमीनों के भाव दोगुने से भी अधिक बढ़ गए हैं।

न्यू नोएडा शहर बसाने के लिए किसानों को उनकी जमीन के बदले नए भूमि अधिग्रहण कानून के अनुरूप रेट दिया जाएगा। 84 गांवों के जिन किसानों की जमीन का अधिग्रहण किया जाएगा उनको सरकार एक हजार करोड़ रूपये का भुगतान करेगी। इस पैसे से 84 गांवों के किसान करोड़पति बन जाएंगे।

आपको बता दें कि ग्रेटर नोएडा क्षेत्र के जिन गांवों पर न्यू नोएडा शहर बसेगा उनमें ग्रेटर नोएडा क्षेत्र के 21 गांव गौतमबुद्धनगर जिले के तथा 63 गांव बुलंदशहर जिले के हैं। गौतमबुद्धनगर जिले के गांवों के नाम बेरंगपुर उर्फ नई बस्ती, फ जलपुर, चंद्रावल, चीरसी, फू लपुर, रघुनाथपुर पार्ट, चीती, छायसा, दयानगर, देवटा, खंडेरा, गिरजापुर, कोट, मिल्क खंडेरा, नगला चमरू, नगला चीती, नगला नैनसुख, आनंदपुर, बील अकबरपुर, राजपुर कला और शाहपुर खुर्द गांव हैं। इसी प्रकार बुलंदशहर जिले के गांव खैरपुर तिला, लौथर, लुहाकर, महिपा जागीर, किशनपुर, कोनाड्डु, नैथला हसनपुर, मोहिद्दीनपुर नगला, मेहताब नगर, मलहपुर, मसौता, मोरादाबाद, नगला बड़ौदा, नगला शेख, अगराई, आशादेवी उर्फ पूरणगढ़, आसफ पुर, बडौदा, भराना, भटोला आदि गांव न्यू नोएडा में हैं।

प्राधिकरण कार्यालय के बाहर जमे हुए हैं किसान

नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों के साथ किसानों की वार्ता विफल हो जाने के बाद भारतीय किसान परिषद का धरना नोएडा प्राधिकरण के कार्यालय के बाहर आज भी जारी रहा। किसानों ने हवन के बाद धरने पर बैठकर आगामी रणनीति बनाई। भारतीय किसान परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखवीर खलीफा ने बताया कि बीते दिनों नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों के साथ हुई वार्ता में कोई निष्कर्ष नहीं निकला। जिसके बाद उन्होंने प्राधिकरण कार्यालय के बाहर धरना जारी रखने का निर्णय लिया है।

खाना पकता है तो सभी को खाने का रहता है इंतजार : ओपी राजभर

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

लोकसभा चुनाव.2024 में प्रदेश की 80 सीटों को जीतने के इरादे से भाजपा ने कई छोटी पार्टियों से गठजोड़ किया है। काफी समय से पार्टी के अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर को योगी मंत्रिमंडल में शामिल करने की बातें होती रही। लेकिन अभी तक उन्हें शामिल नहीं किया गया। पिछले दिनों ओपी राजभर की गृहमंत्री अमित शाह से भी मुलाकात हुई, इसके बाद फिर से उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल करने की बात होने लगी।

गाजियाबाद बुधवार को आए ओपी राजभर ने अपने अंदाज में कहा कि जब खाना पकता है तो सभी को खाना खाने का इंतजार रहता है। अभी भी खाना पक रहा है। जैसे ही खाना बन जाएगा, सभी को मिलेगा। जल्द ही वह समय आएगा जब उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल किया जाएगा। इसके लिए उनकी ओर से कोई जल्दबाजी नहीं है। पांच राज्यों का चुनाव निपट जाने के बाद अब लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जुटेंगे। हो सकता है कि इससे पहले मंत्रिमंडल का विस्तार हो जाए। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी ने अभी तक भाजपा से सीटें नहीं मांगी है लेकिन जो भी सीटें भाजपा दे देगी, चाहे वह पूरब में हो या पश्चिम में, उनकी पार्टी सभी सीटों पर जीतकर दिखाएगी। पश्चिम में भी उनकी पार्टी का जनाधार है। ओमप्रकाश राजभर ने अखिलेश यादव की ओर से बैलेट पेपर पर चुनाव कराने की मांग पर पलटवार करते हुए कहा कि जब वे मैनपुरी जीतते है, घोसी जीतते है तो ईवीएम अच्छी है लेकिन जब दूसरी जगहों से हार जाते हैं तो ईवीएम खराब है।

व्यापारियों ने ओपी राजभर का किया जोरदार स्वागत

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कविनगर स्थित राष्ट्रीय व्यापार मंडल के कार्यालय में व्यापारियों से मुलाकात की। संगठन के जिलाध्यक्ष बालकिशन गुप्ता के नेतृत्व व्यापारियों ने उनका जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम में अशोक भारतीय, अशोक अग्रवाल, मनोज गुप्ता, प्रदीप चौधरी, संदीप त्यागी रसम, अजय सिंघल, विशाल जैन, परमानंद सिंघल, रितेश शर्मा, अनिल त्यागी, राजीव अग्रवाल, उमेश गर्ग, सौरभ यादव आदि उपस्थित रहे। वहीं, गाजियाबाद का नाम परिवर्तित अभियान को लेकर राजभर का समर्थन मांगा गया। अभियान के संयोजक संदीप त्यागी ने उन्होंने इस आशय का पत्र सौंपा।

पोलियो ड्रॉप पिलाने पहुंची आशा कार्यकर्ता की पिटाई

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा में बच्चों को पोलियो ड्रॉप्स पिलाने के लिए घर घर जा रही आशा कार्यकत्रियों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रेटर नोएडा से सटे दादरी में बच्चों को पोलियो ड्रॉप्स पिलाने के लिए पहुंची एक आशा कार्यकत्री को एक युवक ने अपने परिवार के लोगों के साथ मिलकर पिटाई कर घायल कर दिया।

हमलावरों ने आशा कार्यकत्री पर जहर देने का आरोप लगाया है। घायल आशा कार्यकत्री की ओर से थाना दादरी पुलिस से शिकायत की गई है। ग्रेटर नोएडा के दादरी नगर के जीटी रोड स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर सविता शर्मा, विमला देवी और ललिता आशा कार्यकत्री हैं। बुधवार को तीनों दादरी के ठाकुरान मोहल्ले में घर.घर जाकर पोलियो ड्रॉप्स पिला रही थीं। तीनों मोहल्ले की एक गली में पहुंची।

सविता छोटे-छोटे बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने लगीं। आरोप है कि तभी एक युवक आया और जहर पिलाने का आरोप लगाते हुए शोर मचाने लगा। शोर सुनकर घर की महिलाएं भी बाहर आ गईं। आरोप है कि उन लोगों ने सविता का बाल पड़कर कर जमीन पर पटक दिया और लात.घूसों से पिटाई की।

कस्तूरबा विद्यालय में मिली खामियां

गाजियाबाद। राज्य बाल अधिकार सरंक्षण आयोग की सदस्या अनिता अग्रवाल आज गाजियाबाद के भ्रमण पर है। सबसे पहले उन्होंने रजापुर ब्लॉक के कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय का निरीक्षण किया।

इस दौरान उन्होंने विद्यालय की छात्राओं से पढाई व आवास व्यवस्था के बारे में जाना और उन्हें हेल्पलाइन नम्बरों की जानकारी दी। आयोग की सदस्या ने कहा कि अगर किसी को कोई समस्या पर वह मुश्किल में हो तो तत्काल हेल्पलाइन नम्बरों पर कॉल करें उन्हें तुंरत मदद मिलेगी। इसके बाद उन्होंने छात्रों के लिए आने वाले राशन का रजिस्टर चेक किया तो उसमें खामी मिली।

पिंक बूथ बनेगी महिला पुलिस चौकी

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

- आधी आबादी की सुरक्षा के लिए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने बढ़ाया एक और कदम

सूबे की आधी आबादी की सुरक्षा को और अधिक मजबूत करने के क्रम में सरकार ने एक और कदम बढ़ाया है। इस क्रम में सरकार ने अब सूबे में बनाये गये पिंक बूथों के अस्तित्व में आमूल.चूल पविर्तित करके इन्हें महिला पुलिस चौकियो में बदलने की कवायद शुरू कर दी है। इसकी शुरुआत भी वाराणसी कमिश्नरेट से शुरू कर दी गई है।

सूत्रों के अनुसार पिंक बूथ के स्थान बनाई जाने वाली महिला पुलिस चौकियों की प्रभारी जहां महिला उननिरीक्षक होंगी वहीं इन चौकियों पर की जाने वाली तैनाती भी महिला मुख्य आरक्षी/आरक्षियों की ही होगी।

सूत्रों के अनुसार ये महिला पुलिस चौकियां जहां हर थाना क्षेत्र में होंगी वहीं ये पुलिस चौकियां थानों की पुलिस चौकियों व स्थाई पिकेट से मात्र पचास मीटर के दायरे में स्थापित की जायेंगी।

सूत्रों के अनुसार इन चौकियों में जहां महिला मुख्य आरक्षी के सहित आधा दर्जन महिला आरक्षियों को तैनात किया जायेगा वहीं उनकी ड्यूटी दो शिफ्टों में लगाई जायेगी।

सूत्रों के अनुसार पहली शिफ्ट सुबह 7 बजे से लेकर दोपहर 3 बजे तक और द्वितीय शिफ्ट सांय 3 बजे से लेकर रात 11 बजे तक होगी। इन महिला पुलिस चौकियों को जहां हाईटैक सिस्टम एवं संसाधनों से लैस किया जायेगा वहीं चौकी प्रभारी एवं बीट प्रभारियों को वायरलैस एवं सीयूजी नंबर भी प्रदान किये जायेंगे।

इन पुलिस चौकियों में आगंतुकों के बैठने एवं पानी पीने की व्यवस्था भी होगी। इन महिला पुलिस चौकियों की देख.रेख का जिम्मा जहां थाना प्रभारियों का होगा वहीं थाना प्रभारी निरीक्षक प्रति दिन इन चौकियों पर तैनात चौकी प्रभारी एवं पुलिसकर्मियों की ब्रीफिंग करेंगे।

संक्षिप्त समाचार

जल जीवन सर्वेक्षण में देश में मिला तीसरा स्थान

गाजियाबाद। गाजियाबाद जिले को एक और उपलब्धि हासिल हुई है। हाल ही में नगर पालिका व नगर निगम में स्वच्छता अभियान के तहत अव्वल रहा है तो वहीं अब जल जीवन सर्वेक्षण 2023 में जिले को देश भर में तीसरी रैंक प्राप्त हुई है। अमृत महोत्सव के तहत यह सर्वेक्षण कराया गया था जिसमें जिले को 78.22 फीसदी अंक के साथ तीसरी रैंक प्राप्त हुई है। यह रैंक एक अक्टूबर 2022 से 31 मार्च 2023 के बीच हुए सर्वे में परफार्मेंस के आधार पर मिली है। डीएम आरके सिंह के कार्यकाल में जिला लगातार नई.नई उपलब्धियों को हासिल कर रहा है।

बच्ची से दुष्कर्म करने वाले हैवान चढ़े पुलिस के हत्थे

गाजियाबाद। 10 दिसंबर की रात लोनी निवासी एक 10 वर्षीय बच्ची को अगवा करके उसके साथ गैंग रेप करने वाले दो हैवानों को लोनी थाने के एसएचओ अनिल सिंह राजपूत की टीम ने मुखबिर की सूचना के बाद गिरफ्तार कर लिया। यह जानकारी देते हुए एसीपी लोनी सूर्यबली मौर्य ने बताया कि पुलिस ने जिन हवशी भेडियों को गिरफ्तार किया है उनके नाम 58 वर्षीय जाकिर उर्फ पप्पू नाजिम हैं। मौर्य ने कहा कि पुलिस गिरफ्त में आये दोनों अभियुकतों को सख्त से सजा दिलवाने में कसर नहीं छोड़ेगी।

ट्रेन की चपेट में आए युवक की मौत

नोएडा। ग्रेटर नोएडा के दादरी रेलवे स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक पार कर रहे एक व्यक्ति की ट्रेन की चपेट में आने से मौके पर ही मौत हो गई, बुधवार को एक व्यक्ति ग्रेटर नोएडा के दादरी रेलवे स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक पार कर रहा था। इस दौरान वह तेज गति में आ रही एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आ गया और उसने मौके पर ही दम तोड़ दिया। हादसे की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे दादरी जीआरपी ने मृतक की शिनाख्त कराने का प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिल पाई। जीआरपी ने शव को पोस्टमार्टम भिजवा दिया है और मृतक की शिनाख्त कराने का प्रयास कर रही है।

नर कंकाल मिलने से फैली सनसनी

नोएडा। नोएडा के थाना सेक्टर.39 क्षेत्र के सोम बाजार में बुधवार को बिजली घर के पास एक नर कंकाल मिलने से सनसनी फैल गई। नर कंकाल किस व्यक्ति का है। इस बारे में पुलिस को कोई जानकारी नहीं मिल पाई है। थाना प्रभारी जितेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि बुधवार को किसी व्यक्ति ने सूचना दी कि सदरपुर में लगने वाले सोम बाजार के पास एक नर कंकाल पड़ा हुआ है। मौके पर पहुंची पुलिस ने नर कंकाल का पंचनामा भरकर उसे पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। उन्होंने बताया कि उक्त नर कंकाल कई माह पुराना प्रतीत हो रहा है। उन्होंने बताया कि आसपास के लोगों से पूछताछ की गई लेकिन नर कंकाल के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली।

फ्लैट में मिला युवक का शव

नोएडा। नोएडा के थाना सेक्टर.113 क्षेत्र के उन्नति बिहार में एक युवक अपने घर में संदिग्ध परिस्थितियों में मृत अवस्था में पड़ा हुआ मिला। मौत के कारणों का पता लगाने के लिए पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। थाना प्रभारी सर्वेश सिंह ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली कि उन्नति विहार में एक मकान में युवक का शव पड़ा हुआ है। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। मृतक की पहचान बदायूं निवासी भूरा पुत्र जसराम के रूप में हुई।

गैंगरूटा एक्ट में वांछित ईनामी डकैत गिरफ्तार

नोएडा। ग्रेटर नोएडा के थाना दादरी पुलिस ने गैंगस्टर एक्ट में वांछित चल रहे एक शातिर डकैत को गिरफ्तार किया है पकड़ा गए आरोपी पर 25000 रुपये का इनाम घोषित था। थाना प्रभारी सुजीत उपाध्याय ने बताया कि मुखबिर की सूचना के आधार पर संभल निवासी राहुल पुत्र प्रेमपाल को गिरफ्तार किया गया। राहुल के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट का मामला पंजीकृत था और वह इसमें वांछित चल रहा था लगातार वंचित चलने के कारण उसे पर 25000 रुपये का इनाम घोषित था उन्होंने बताया कि राहुल पर लूट डकैती सहित विभिन्न मामले पंजीकृत हैं।

भाजपा प्रवक्ता ने नमो सेवा केंद्र का उद्घाटन किया

नोएडा। जेवर में नमो सेवा केंद्र का उद्घाटन बुधवार को ज़ेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह और भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने किया। विधायक धीरेन्द्र सिंह ने कहा, पीएम मोदी के सार्थक प्रयास से देश विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है। इस मौके पर जेवर नगर पंचायत के चेयरमैन नारायण महेश्वरी एवं जहांगीरपुर नगर पंचायत के चेयरमैन गजेंद्र मीणा भी मौजूद थे।

पार्किंग विवाद को लेकर घंटाघर रामलीला मैदान में हुई महाभारत

गाजियाबाद। शहर की सबसे पुरानी एवं ऐतिहासिक श्री सुल्लामल रामलीला का मैदान एक फिर से अखाड़े में बदल गया, एक बार फिर से मैदान में हुई रार आम जनता के बीच आ गई। ब्राम्हण एकता दल और कमेटी के पदाधिकारियों के बीच मैदान के बीच में जमकर बहस हुई। मुद्दा रामलीला कमेटी की पार्किंग गलत तरीके से दूसरे लाभ पाने के लिए समुदाय विशेष को देने का आरोप लगाया गया। विरोध में बाह्मण एकता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष सत्यम शर्मा मैदान में धरने पर भी बैठे। बात बढ़ी तो पुलिस के अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर हस्तक्षेप भी किया और मामले को किसी तरह से शांत कराया गया। दरअसल, श्री सुल्लामल रामलीला कमेटी विवाद का दूसरा नाम होता जा रहा है। यहां पूर्व पदधिकरियों एवं समिति के बीच चुनाव कराए जाने को लेकर चल रही जंग सार्वजनिक हो चुकी है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के लिए शिविर

गाजियाबाद। विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत केंद्र सरकार की 25 योजनाओं की जानकारी देने के लिए आज राजनगर स्थित सेंट्रल पार्क में विशेष शिविर का आयोजन किया गया।

नगर निगम और जिला नगरीय विकास अभिकरण यानि डूडा के सहयोग से लगाए गए शिविर में केंद्र सरकार की योजनाओं के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन भी किया गया। शिविर में मोबाइल वैन के जरिए योजनाओं की जानकारी दी गई। प्रदेश के पिछड़ा वर्ग कल्याण राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार नरेंद्र कश्यप ने शिविर का शुभारंभ किया।

महंगा होगा यमुना एक्सप्रेसवे पर सफर, टोल टैक्स में बढ़ोत्तरी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

यमुना एक्सप्रेसवे का सफ र महंगा होने जा रहा है। यमुना एक्सप्रेसवे का संचालन करने वाली कंपनी ने तीसरे साल भी टोल टैक्स के रेट बढ़ाने का फैसला लिया है। आपको बता दें कि तीन साल से यमुना एक्सप्रेसवे पर टोल टैक्स की कीमतों में वृद्धि की जा रही है।

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा बनाए गए यमुना एक्सप्रेस वे पर रोजाना लगभग 35 हजार से ज्यादा वाहनों का आवागमन होता है। सप्ताह के अंत इस एक्सप्रेसवे से गुजरने वाले वाहनों की संख्या 50 हजार तक पहुंच जाती है। इस एक्सप्रेसवे का संचालन कर जेपी इंफ्राटेक कंपनी कर रही है। जेपी इंफ्राटेक कंपनी ने यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण को टोल टैक्स की दरों में बढ़ोतरी किए जाने का प्रस्ताव दिया है। यह लगातार तीसरा साल होगा जब यमुना एक्सप्रेस वे पर टोल टैक्स के मूल्य में बढ़ोतरी होगी। हालांकि यमुना प्राधिकरण बोर्ड टोल दरों में बढ़ोतरी का फैसला करेगा।

दुबई-फ्रांस की तर्ज पर चमकेंगी नोएडा की सड़कें

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा प्राधिकरण ने नोएडा की सड़कों का नेटवर्क दुबई, सिंगापुर और फ्रांस की तर्ज पर तैयार करने का प्लान तैयार किया है। विदेशों की सड़कों के नेटवर्क की तर्ज पर नोएडा की सड़कों का विकास करने के लिए प्राधिकरण ने रीजनल कांग्रेसिव मोबिलिटी प्लान लिए रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल, जारी कर दी है।

नोएडा में सड़कों का जाल। (फाइल फोटो)

आपको बता दें कि दुबई, फ्रांस और सिंगापुर आदि देशों की तर्ज पर सड़कों का नेटवर्क प्लान तैयार करने के लिए नोएडा प्राधिकरण ने विदेश में काम करने वाली कई कंपनियों से सलाह मशविरा किया और सुझाव प्राप्त किए। अब नए सिरे से आरएफप्री तैयार की जा रही है। इस बार आरएफपी के तहत जिस सलाहकार कंपनी का चयन किया जाएगा। वह नोएडा, ग्रेटर नोएडा, यमुना, गाजियाबाद, हापुड़, बुलंदशहर में विकसित होने वाले डीएनजीआईआर दादरी नोएडा गाजियाबाद विशेष निवेश क्षेत्र समेत पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यातायात को बेहतर बनाएगा। मोबिलिटी प्लान तैयार करने को नोएडा प्राधिकरण ने अक्टूबर में आरएफपी जारी की थी। कंपनियों से 14 अक्टूबर तक आवेदन मांगे गए थे। इस दौरान दो कंपनियों ने इसमें हिस्सा लिया।

नोएडा से होगा 60 हजार करोड़ रुपये के कपड़ों का निर्यात

- उद्यमियों को दी जा रही सुविधाओं के चलते शहर बनेगा बड़ा हब

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

यूपी सरकार द्वारा नोएडा के परिधान कपड़ा उद्योग से जुड़े उद्यमियों की दी जा रही सुविधाओं के बलबूते आने वाले दो सालों में नोएडा कपड़ा निर्यात का एक बड़ा हब बन जाएगा। अकेले नोएडा से ही 60 हजार करोड़ रूपये के कपड़े दुनिया भर में निर्यात किये जाएंगे।

गारमेंट हब में काम करते लोग। (फाइल फोटो)

नोएडा क्लस्टर से इस समय सालाना 40 हजार करोड़ रूपये का कपड़ा निर्यात किया जाता है। वर्ष 2024 में 26 से 29 फरवरी के बीच नई दिल्ली के भारत मंडपम और यशोभूमि में कपड़ा निर्यात से जुड़ा भारत टेक्स एक्सपो 2024 का आयोजन किया जाएगा। इस एक्सपो में अपनी भागीदारी के लिए नई दिल्ली में एक रोड़ शो आयोजित किया गया जिसमें बड़ी संख्या में नोएडा क्लस्टर आरएमजी निर्यातकों ने अपनी भागीदारी की। रोड शो में 300 से अधिक निर्यातक पहुंचे। भारत टेक्स एक्सपो 2024 का आयोजन कपड़ा मंत्रालय के सहयोग से किया जाएगा।

भारत टेक्स एक्सपो 2024 के लिए हुए रोड शो में नोएडा के सांसद डा महेश शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में शमिल हुए। निर्यातकों को संबोधित करते हुए सांसद व पूर्व केन्द्रीय मंत्री डा महेश शर्मा ने कहा कि भारत को विनिर्माण केन्द्र बनाने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सपने को साकार करने में इस सबसे बड़े वैश्विक कपड़ा शो से काफी मदद मिलेगी।

नोएडा शहर यूपी का शो.विंडो है और यूपी की योगी सरकार परिधानों के इस शहर में व्यापार वृद्धि के लिए अनुकूल माहौल प्रदान कर रही है। रोड शो में एईपीसी के महासचिव मिथिलेश्वर ठाकुर ने कहा कि भारत टेक्स एक्सपो 2024 दुनिया का सबसे बड़ा कपड़ा शो होगा जिसमें 3500 से अधिक प्रदर्शक, 3000 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय खरीददार और 60 हजार से अधिक घरेलू खरीददार शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि कच्चे माल की प्रचुरता के कारण भारत से कपास, रेशम, जूट, पॉलिस्टर विस्कोस, नायलॉन और एक्रेलिक सहित अन्य फैब्रिक्स से बने परिधान निर्यात किये जा रहे हैं।

नोएडा परिधान निर्यात क्लस्टर के अध्यक्ष ललित ठुकराल ने इस रोड शो में बताया कि नोएडा क्लस्टर से आरएमजी निर्यात 40 हजार करोड़ रूपये है और अगले दो वर्षों में यह निर्यात 60 हजार करोड़ रूपये तक पहुंच जाएगा। यूपी की योगी सरकार ने नोएडा को परिधानों का शहर बनाया है और कई उपयुक्त सुविधाएं प्रदान की हैं जिससे व्यवसाय में वृद्धि हुई है।

PUBLIC NOTICE
I am Anu Gupta D/o Ved Prakash Sarna R/o F-96,Kirti Nagar,N.Delhi-15, selling a property in Paschim Vihar Flat No. 209-B, SFS CAT-2, Block-B, BG-1,Paschim Vihar, Delhi-63. This property was my parents property, after my parents, now I am the only Legal heir of this property. Now I am selling this property.If anyone have any issue,please contact to me with in 1 week from public notice. Anu Gupta 9871484842

Public Notice
In The Pioneer Newspaper our publication was published on dated 09-12-2023 in Page No. 10/4 that the borrower's name was mentioned as Yukta Gulati and Ruhi Gulati instead of Arun Kumar. Please read Borrower Name as Arun Kumar who is purchasing and Mortgaging the Ground Floor (without Roof right) of Property Bearing No. 157 Built on area measuring 67 Sq. Yds (56.012 Sq. Mts.) Situated at Gali No. 6 Than Singh Nagar, Anand Parbat area of village Sadhora Khurd, Delhi with SMFG India Home Finance Co.
Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301; Landline(s): +910120-3101683 / 4562809; e-mail: accounts@lvnorth.in

PUBLIC NOTICE
It is to inform to the public at large that Mr. Daljit Kaur Gill who is purchasing the Flat bearing No. TF-02, on Third floor, area measuring 100 Sq. Yds., part of Property bearing No. 1 & 1-A, out of Khasra No. 30/21, 30/22, 30/11, 31/2, 33/10, 30/5, 30/6, 29/25 & 29/ [illegible] 33/1, Situated in the area of Village Khureji Khas, Illaqa Shahdara, Delhi [illegible] from Mrs. Madhu Jaidka w/o Mr. Rakesh Jaidka Vide Conveyance deed dated 25.08.2021, Duly Registered as Document No. 5094, in Book No. 1, Volume No. 2171, on Pages 20 to 24, on Dated 31.08.2021, SRO-VIII A Preet Vihar. and same to be financed by Aditya Birla Housing Finance Limited,. That, Original General Power of Attorney Executed by Jagat Ram and Co through Mr. Jagat Ram S/o Mr. Uttam Chand in favour of Mr. Gopi Chand Lagan S/o Mr. Kanhaia Lal in respect of the subject property, Alongwith ATS & WILL have been lost/misplace/or not available. If any Person having any type of claim/right/title/interest over the said property, may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within 7 days from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc. Lucem Legal LLP Office No.G-03, at Ground Floor, on Plot No.D-61, Sector-2,Noida,UP-201301,Contact#0120-4130438

ICICI Bank
शाखा कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, शाल टावर, प्लॉट नंबर 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, नई दिल्ली–110007
सार्वजनिक सूचना :
बिल्डर निरसन
आपको सूचना दी जाती है कि प्रदीप कुमार/कल्पना कुमारी (कर्जदार/रों) ने सुविधा अनुबंध संख्या एलबीडीईएल00005192363 तथा पता फ्लैट नंबर 4155, सीआरसी सब्लीमिस–टावर 4, 15वां तल, प्लॉट नंबर जीएच –11ए, सेक्टर–1, ग्रेटर नोएडा–201307 के माध्यम से आवास ऋण सुविधा प्राप्त की है। कर्जदार अनुबंध के नियम एवं शर्तों के अनुसार बिल्डर को संविदात्मक राशि का भुगतान करने में असफल रहे हैं।
बैंक उसकी सूचना कर्जदार को पत्र दिनांकित 25 अगस्त, 2023 के माध्यम से दे चुका है, जिसमें सूचित किया गया है कि एन्टाइसमेंट इन्फ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड ने उपरिवर्णित सम्पत्ति का आबंटन निरस्त कर दिया है। अतएव आपसे अनुरोध किया जाता है कि बिल्डर के साथ यह मामला इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 7 दिन के भीतर सुलझा लें।
कृपया आगे सूचित हों कि उक्त सम्पत्ति का आबंटन निरस्त होने के बाद आईसीआईसीआई बैंक बिल्डर द्वारा किसी अन्य आबंटन के लिए बाध्य तथा/अथवा जिम्मेदार नहीं होगा।
दिनांक : 15 दिसम्बर, 2023 वास्ते आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड
स्थान : दिल्ली/एनसीआर हस्ता./–

ICICI Bank
शाखा कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, शाल टावर, प्लॉट नंबर 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, नई दिल्ली–110007
सार्वजनिक सूचना :
बिल्डर निरसन
आपको सूचना दी जाती है कि विवेक पाल/राजेश पाल (कर्जदार/रों) ने सुविधा अनुबंध संख्या एलबीएनओडी00004967934 एवं एलबीएनओडी00005112925 तथा पता फ्लैट नंबर सी 1502 14वां तल, सेवी विले डी, राजनगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश के माध्यम से आवास ऋण सुविधा प्राप्त की है। कर्जदार अनुबंध के नियम एवं शर्तों के अनुसार बिल्डर को संविदात्मक राशि का भुगतान करने में असफल रहे हैं।
बैंक उसकी सूचना कर्जदार को पत्र दिनांकित 14 सितम्बर, 2023 के माध्यम से दे चुका है, जिसमें सूचित किया गया है कि एलेन्ट बिल्डटेक प्राइवेट लिमिटेड ने उपरिवर्णित सम्पत्ति का आबंटन निरस्त कर दिया है। अतएव आपसे अनुरोध किया जाता है कि बिल्डर के साथ यह मामला इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 7 दिन के भीतर सुलझा लें।
कृपया आगे सूचित हों कि उक्त सम्पत्ति का आबंटन निरस्त होने के बाद आईसीआईसीआई बैंक बिल्डर द्वारा किसी अन्य आबंटन के लिए बाध्य तथा/अथवा जिम्मेदार नहीं होगा।
दिनांक : 15 दिसम्बर, 2023 वास्ते आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड
स्थान : दिल्ली/एनसीआर हस्ता./–

सांकेतिक कब्जे की सूचना
ICICI Bank
शाखा कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंजिल, प्लॉट नंबर– 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली– 110005.
जबकि
अधोहस्ताक्षरी ने आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के तहत और प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के साथ पठित अधिनियम की धारा 13(12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कर्जदार और डीएचएफएल के बीच हुए ऋण अनुबंध के अनुसरण में मंजूर की गई आवास ऋण सुविधा के संबंध और प्रतिभूति के संबंध में निम्न वर्णित कर्जदारों को (बुनियादी समूह दीवान हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड द्वारा आईसीआईसीआई बैंक को समनुदेशित किए जाने पर) माँग सूचनाएँ जारी की थीं, जिसमें उनसे सूचना में वर्णितानुसार बकाया राशि का भुगतान, उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर करने की माँग की गई थी।
कर्जदार उपरोक्त राशि चुकाने में असफल रहे हैं, एतद् द्वारा कर्जदार और जनसाधारण को सूचना दी जाती है कि अधोहस्ताक्षरी ने उक्त नियमावली के नियम 8 के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नीचे वर्णित संपत्ति का कब्जा निम्न वर्णित तिथि को प्राप्त कर लिया है।
कर्जदार को विशेष रूप से तथा जनसाधारण को एतद्द्वारा उक्त संपत्ति के संबंध में संव्यवहार नहीं करने हेतु सावधान किया जाता है तथा उक्त संपत्ति के संबंध में कोई भी संव्यवहार इसमें वर्णित राशि तथा उस पर आगे ब्याज हेतु आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभाराधीन होगा।

क्र. सं.	कर्जदार का नाम/(ऋण खाता नंबर) (डीएचएफएल पुराना ऋण खाता नंबर एवं आईसीआईसीआई नया ऋण खाता नंबर)	संपत्ति का विवरण/ सांकेतिक कब्जे की तिथि	मांग सूचना की तिथि/ मांग सूचना में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	सुभाषचंद्र/ सुनीता देवी (01400003099 & QZDEL00004999218)	506, 5वीं मंजिल, टॉवर–सी4, एवलॉन होम्स, अलवर बायपास, भिवाड़ी, राजस्थान/ दिसंबर 11, 2023	मार्च 28, 2023 रु. 6,95,703/-	दिल्ली/ एनसीआर और भिवाड़ी

उपरोक्त दर्शाए गए कर्जदार/सह–कर्जदार एवं जमानतदारों को सूचित किया जाता है कि इस सूचना के प्रकाशन से 30 दिनों के अंदर राशि का भुगतान करें, अन्यथा 30 दिनों की समाप्ति के पश्चात् अधिग्रहित संपत्ति की नीलामी कर दी जाएगी जो प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के अंतर्गत है।
दिनांक : दिसंबर 15, 2023 प्राधिकृत अधिकारी
स्थान : दिल्ली/एनसीआर आईसीआईसीआई बैंक लि.

पायनियर
नई दिल्ली, शुक्रवार, 15 दिसंबर, 2023

प्रदूषण कम करने सड़कों पर उतरीं 500 इलेक्ट्रिक बसें

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इंद्रप्रस्थ डिपो से झंडी दिखाकर किया रवाना

● सीएनजी की एक बस प्रति किमी 800 ग्राम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करती है जबकि इलेक्ट्रिक बस का उत्सर्जन शून्य रहता है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राजधानी में प्रदूषण मुक्त सार्वजनिक परिवहन के लिए एलजी विनय सक्सेना और सीएम अरविंद केजरीवाल ई-बसों को हरी झंडी दिखाते हुए। फोटो : रंजन डिमरी

हर साल सर्दियों के मौसम में प्रदूषण बढ़ने से राजनीतिक दलों में आरोप-प्रत्यारोप तेज हो जाता है। इसी के मद्देनजर दिल्ली सरकार ने लोगों को प्रदूषण से राहत दिलाने के लिए बड़ा कदम उठाया है। उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने 500 नई इलेक्ट्रिक बसों को रवाना किया है। इसके साथ ही राष्ट्रीय राजधानी में इलेक्ट्रिक बसों की संख्या 1,300 हो गई है। शोध में पता चला है कि एक सीएनजी बस प्रति किलोमीटर 800 ग्राम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करती है जबकि एक इलेक्ट्रिक बस शून्य कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करती है।

दिल्ली सरकार ने कहा कि राजधानी की सड़कों पर दौड़ने वाली इलेक्ट्रिक बसों की संख्या देश में सबसे अधिक है। सभी बसें शून्य कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करने वाली बस हैं। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने एलजी सक्सेना को धन्यवाद दिया और शहरी परिवहन में सुधार जारी रखने का वादा किया। केजरीवाल ने मीडिया से बातचीत में कहा, वह इस अवसर पर दिल्ली के लोगों को बधाई देना चाहते हैं। सीएम ने बताय कि अब दिल्ली परिवहन निगम के बड़े में 1300 इलेक्ट्रिक बसें हो गई हैं। उनकी सरकार दिल्ली की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को मजबूत करना जारी रखेंगे।

सोशल मीडिया एक्स पर परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने कहा, बधाई हो दिल्ली हम आज एक और बड़ी उपलब्धि का जश्न मना रहे हैं। मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल ने 500 नई इलेक्ट्रिक बस को हरी झंडी दिखाई। सफलता कभी रातों-रात नहीं मिलती, यह निरंतरता का परिणाम है। हम एक बार फिर रिकॉर्ड 1300 इलेक्ट्रिक बस के साथ आगे बढ़ रहे हैं। मंत्री ने कहा कि प्रदूषण पर अंकुश लगाने के प्रयासों में इलेक्ट्रिक बस को शामिल करना एक मजबूत कदम है। बृहस्पतिवार को नई बस की खेप शामिल होने से पहले राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 800 इलेक्ट्रिक बसें दौड़ रही थीं। इलेक्ट्रिक बस के इस्तेमाल से अब तक 34,000 टन से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन रोका गया है।

दिल्ली सरकार के एक अधिकारी ने बताया कि दिल्ली में 2025 तक कुल 10,480 बस हो जाएंगी, इससे हर साल 4.67 लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन रोकने में मदद मिलेगी।

केंद्र सरकार ने फेम योजना के तहत दीं है ई-बसें : सचदेवा

दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने 500 नई इलेक्ट्रिक बसों का तोहफा देने के लिए पीएम मोदी का आभार व्यक्ति किया है। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि ये बसें केंद्र सरकार ने भारी उद्योग मंत्रालय की फेम योजना के तहत पिछले एक साल में दिल्ली को कुल 1300 इलेक्ट्रिक बसों का तोहफा दिया है।

नजफगढ़ नाले पर पुल निर्माण में गलत सर्वेक्षण पर आपत्ति

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● उपराज्यपाल ने 130.48 वर्गमीटर भूमि के लिए संपूर्ण भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया में देरी पर जताई नाराजगी, मुख्य सचिव को जिम्मेदार अधिकारियों की पहचान कर तीन सप्ताह के भीतर कार्रवाई रिपोर्ट मांगी

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने नजफगढ़ नाले पर चार लेन के आरसीसी पुल के निर्माण के लिए गांव बडुसराय में परियोजना के लिए आवश्यक भूमि के गलत सर्वेक्षण पर आपत्ति जताई है। साथ ही उन्होंने परियोजना के लिए केवल 3 बिस्वा भूमि के लिए पूरी भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया में 3 वर्ष से अधिक की देरी पर भी नाराजगी व्यक्त की है। एलजी ने मुख्य सचिव को भूमि के गलत सर्वे के लिए और संपूर्ण भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया में हुई देरी के लिए जिम्मेदार अधिकारियों की पहचान करने का निर्देश दिया है और तीन सप्ताह में कार्रवाई रिपोर्ट मांगी है।

उपराज्यपाल ने कहा कि यह परियोजना अपेक्षित भूमि पार्सल के बिना शुरू की गई थी, जिसके कारण यह 8 जनवरी 2021 की निर्धारित समय सीमा को पार कर गई है। फरवरी, 2022 में ही भूमि अधिग्रहण के लिए अनुरोध किया गया था और अधिसूचना जारी करने की फाइल काफी समय बीतने के बाद, अब दिसंबर, 2023 में जमा की गई है। एलजी ने कहा वह भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया में तेजी लाने, भूमि और भवन विभाग को नियमित बैठकें करने, निष्पादन को वेब आधारित ऑनलाइन निगरानी तंत्र के साथ समयसीमा निर्धारित करने वाली उपयुक्त एसओपी तैयार के निर्देश दे चुके हैं

संसद सुरक्षा चूक मामले में आठ सुरक्षा कर्मी निलंबित

● निलंबित किए गए लोग विभिन्न सुरक्षा एंजेंसियों से संबंधित हैं, इससे पहले 2001 में हुआ था हमला

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

संसद में सुरक्षा में चूक के एक दिन बाद खोजी कुत्तों के साथ हर कोने की जांच करते सुरक्षा दल के सदस्य।

संसद की सुरक्षा में चूक की घटना के सिलसिले में आठ सुरक्षाकर्मियों को निलंबित किया गया है। निलंबित किए गए लोग विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों से संबंधित हैं जो संसद भवन की सुरक्षा के लिए प्रतिनियुक्ति पर थे। निलंबित किए गए लोगों की पहचान रामपाल, अरविंद, वीर दास, गणेश, अनिल, प्रदीप, विमित और नरेंद्र के रूप में की गई है।

एक अधिकारी ने कहा, ये सुरक्षाकर्मी संसद की सुरक्षा के लिए प्रतिनियुक्ति पर हैं, लेकिन उनका कैडर नियंत्रण प्राधिकार वह संगठन है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं, न कि लोकसभा सचिवालय। दिल्ली पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के जवानों को संसद परिसर के साथ-साथ भवन में प्रवेश करने वाले लोगों की जांच के लिए तैनात किया गया है। संसद पर वर्ष 2001 में किए गए आतंकी हमले की बरसी के दिन बुधवार को, सुरक्षा में सेंधमारी की बड़ी घटना उस वक्त सामने आई जब लोकसभा की कार्यवाही के दौरान दर्शक दीर्घा से दो लोग सदन के भीतर कूद गए और केन से पीले रंग का धुआं फैला दिया। घटना के तत्काल बाद दोनों को पकड़ लिया गया। इस घटना के कुछ देर बाद ही पीले और लाल रंग का धुआं छोड़ने वाली केन लेकर संसद के बाहर एक पुरुष और एक महिला को गिरफ्तार किया गया। सदन में कूदने वाले दोनों व्यक्तियों की पहचान सागर शर्मा और मनोरंजन डी. के रूप में हुई है। संसद के बाहर से गिरफ्तार दो की पहचान जींद के गांव घासो खुर्द नीलम और लातूर के निवासी अमोल शिंदे के रूप में हुई है।

घटनाक्रम : संसद में घुसने की साजिश और स्मोक अटैक

नई दिल्ली। देश का ध्यान आकर्षित करने के लिए संसद में घुसने की साजिश रचने वाले ललित झा, सागर शर्मा और मनोरंजन डी, मैसूरु में वर्ष 2022 में मिले थे। जिसके बाद में नीलम और अमोल भी इस साजिश में शामिल हो गए। चार साल तक सोशल मीडिया पर एक-दूसरे के संपर्क में रहने के बाद पांचों फेसबुक पर भगत सिंह फैन पेज से जुड़े।

कथित मुख्य साजिशकर्ता ललित झा के निर्देश पर मनोरंजन ने इस साल जुलाई में मानसून सत्र के दौरान संसद भवन की रेकी की और गौर किया कि आगंतुकों के जूतों की जांच नहीं की जा रही। पांचों रविवार को गुरुग्राम निवासी विशाल शर्मा के घर एकत्र हुए और मंगलवार तक वहीं रहे। बुधवार सुबह यानी 13 दिसंबर को पांचों संसद भवन के लिए रवाना हुए। मनोरंजन ने मैसूर-कोडागु के सांसद प्रताप सिम्हा के जरिए दर्शक दीघा के पास हासिल किए। सागर और मनोरंजन नए संसद भवन में प्रवेश कर दर्शक दीर्घा तक पहुंचे। दोपहर लगभग एक बजे सागर दर्शक दीर्घा से लोकसभा कक्ष में कूद गया। मनोरंजन ने भी कूदने की कोशिश की और उसे दर्शक दीर्घा की रेलिंग से लटकते हुए देखा गया।

सार्वजनिक परिवहन पर कांग्रेस ने आप को घेरा

नई दिल्ली। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अरविन्दर सिंह लवली ने कहा कि राजधानी में महिला सुरक्षा, बढ़ते प्रदूषण, खस्ताहाल सार्वजनिक परिवहन, जैसे अहम मुद्दो का हल निकालने में अभी तक दिल्ली सरकार पूरी तरह विफल रही हैं।

लवली ने जिला अध्यक्षों और जिला पर्यवेक्षकों की बैठक में कहा कि दिल्लीवालों की समस्याओं के निवारण लिए नीति बननी चाहिए। डीटीसी बेड़े में 5 हजार के बसें है जिनमें से आधी की लाईफ पूरी हो चुकी है और जो हैं वो प्रदूषण फैला रही है। नई 500 इलेक्ट्रिक बसों से परिवहन व्यवस्था दुरुस्त नहीं होगी।

विधानसभा का दो दिवसीय विशेष सत्र आज से

संजय राय। नई दिल्ली

● सत्र हंगामेदार होने के आसार, विधायक पूछ सकेंगे सवाल

विधानसभा का दो दिवसीय विशेष शुक्रवार से शुरू हो रहा है। बजट सत्र के बाद ये पहला पत्र होगा जिसमें प्रश्नकाल भी होगा। ऐसे में सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों को लंबे समय बाद सरकार से सवाल पूछने का मौका मिल सकेगा। इसके अलावा सदन की बैठक में नियम 280 के तहत विशेष उल्लेख के मामले भी उठाए जाएंगे। कुछ विषयों पर अल्पकालिक चर्चा भी होगी। सत्ता पक्ष और विपक्ष के तीखे तेवरों को देखते हुए माना जा रहा है कि यह सत्र भी काफी हंगामेदार रहेगा। दिल्ली सरकार ने 15 दिसंबर से विधानसभा का दो दिवसीय विशेष सत्र बुलाया है। इस दौरान 15 और 18 दिसंबर को सदन की दो बैठकें होंगी। इस सत्र को विधानसभा के शीतकालीन सत्र के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया गया है, बल्कि सातवीं विधानसभा के चौथे सत्र के चौथे भाग के रूप में सदन की ये बैठकें बुलाई गई हैं। सूत्रों का कहना है कि जरूरत पड़ने पर सत्र की अवधि बढ़ाई जा सकती है। इस सत्र की सबसे खास बात यह है कि इसकी घोषणा सदन बैठक शुरू होने से 15 दिन पहले ही कर दी गई थी। ऐसे में नियमों के अनुसार अब इस सत्र में प्रश्नकाल का आयोजन भी हो सकेगा। इसको लेकर विपक्ष अक्सर सरकार पर सवाल उठाता रहा है और सरकार पर सवालों से बचने के आरोप लगाता रहा है।

नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने कहा है कि सरकार ने 15 से शुरू होने वाले विशेष सत्र को केवल औपचारिकता बना दिया है। इस सरकार के पास जनता के सवालों का कोई जवाब नहीं है। इसीलिए सत्र को मात्र दो दिन का ही रखा गया है ताकि जनता के हितों और समस्याओं पर चर्चा ही नहीं की जा सके।

पूर्व मंत्री सत्येंद्र जैन की अंतरिम जमानत आठ जनवरी तक बढ़ी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली के पूर्व मंत्री सत्येंद्र कुमार जैन को धन शोधन के मामले में दी गई अंतरिम जमानत बृहस्पतिवार को 8 जनवरी तक बढ़ा दी। जैन ने हाईकोर्ट द्वारा उनकी जमानत अर्जी खारिज करने के उच्च न्यायालय के छह अप्रैल के आदेश को चुनौती दी है। धन शोधन के मामले की ईडी जांच कर रहा है।

न्यायमूर्ति बेला एम त्रिवेदी और न्यायमूर्ति एससी शर्मा की पीठ ने यह उल्लेख करने के बाद जैन को राहत दी कि नौ दिसंबर को उनके पैर में फ्रैक्चर हो गया था। पीठ ने कहा, मामले के गुण-दोष पर कोई राय व्यक्त किए बिना, हम अंतरिम आदेश का विस्तार करने के इच्छुक हैं। अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने आग्रह का विरोध करते हुए दावा किया कि वह जांच में सहयोग नहीं कर रहे हैं। शीर्ष अदालत ने 26 मई को दिल्ली के पूर्व मंत्री को चिकित्सा आधार पर छह सप्ताह की अंतरिम जमानत दी थी।

संक्षिप्त समाचार

मैं भी केजरीवाल हस्ताक्षर अभियान की बैठक को संबोधित करते पार्टी के संगठन महामंत्री व राज्यसभा सांसद संदीप पाठक।

केजरीवाल को चक्रव्यूह तोड़ना आता है : पाठक

नई दिल्ली। मैं भी केजरीवाल हस्ताक्षर अभियान को लेकर चल रही बैठक की अध्यक्षता आम आदमी पार्टी के संगठन महामंत्री और राज्यसभा सांसद डॉक्टर संदीप पाठक और राष्ट्रीय सचिव पंकज गुप्ता ने की। इस मौके पर पाठक ने कहा कि पार्टी इस समय मुश्किल दौर से गुजर रही है। उन्हें विश्वास है कि कल नया सूरज उगेगा और नई रोशनी लाएगा। हमें अब पहले से ज्यादा मेहनत से अपना काम करना है। सभी से अपील है कि अपने-अपने मोहल्ले और अपने क्षेत्र में पार्टी को मजबूत बनाएं। पीएम मोदी ने अरविंद केजरीवाल को फंसाने के लिए जाल बिछा रखा है। इनको यह मालूम नहीं है कि जिनके लिए यह जाल बिछाया गया है उनका नाम अरविंद केजरीवाल है। जिनको चक्रव्यूह में जाना भी आता है और तोड़कर बाहर निकलना भी आता है।

हेलमेट पहनने के लिए जागरूकता अभियान

नई दिल्ली। यातायात पुलिस ने चेतक फाउंडेशन के साथ मिलकर महिला दोपहिया सवारों के बीच हेलमेट सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक अभियान चलाया। ट्रैफिक पुलिस दोपहिया वाहन चालकों को दोपहिया वाहन पर सवारी करते समय या पीछे बैठे व्यक्ति को अच्छी गुणवत्ता वाले हेलमेट पहनने की आवश्यकता के बारे में जागरूक करने की दिशा में लगातार काम कर रही है। यह देखा गया है कि महिला सवारियां और दोपहिया वाहनों पर पीछे की सीट पर बैठी सवारियां हेलमेट पहनने से बचती हैं। जिसके परिणामस्वरूप सड़क पर होने वाली मौतों के ज्यादातर मामलों में वे ही शिकार होती हैं।

ट्रॉमा सेंटर में सफाई कर्मी ड्यूटी से नदारद, कार्रवाई के निर्देश

● मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कई अस्पतालों का किया औचक निरीक्षण

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अस्पताल में मरीजों से बात करते स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल निर्देश पर स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज बृहस्पतिवार को दिल्ली सरकार के चार अस्पतालों का औचक निरीक्षण किया। दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल, दादा देव अस्पताल, इंदिरा गांधी अस्पताल एवं सुश्रुत ट्रॉमा सेंटर अस्पताल में भर्ती मरीजों से बातचीत की और अस्पताल की वर्तमान सुविधाओं के बारे में जाना।

दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल में भर्ती कई मरीजों से स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने बातचीत की। इस दौरान एक मरीज से उसके भर्ती होने की वजह पूछी, नजफगढ़ से आए मरीज ने बताया की गले में छोटी सी एक गांठ हो जाने की वजह से वह अस्पताल में भर्ती हुआ है। पेशे से टेंपो ड्राइवर था। अस्पताल में सभी प्रकार की दवाइयां, इलाज, देख-रेख बिल्कुल मुफ्त है। वहीं दादा देव अस्पताल में जच्चा बच्चा विभाग में महिलाओं से भी मंत्री ने बात की। औचक निरीक्षण के दौरान भारद्वाज ने सभी अस्पतालों में पर्चा बनवाने की लाइन में खड़े मरीजों से भी बात की। इस दौरान एक मरीज के पर्चे में लिखी 4 दवाइयां में से एक दवाई मरीज को नहीं मिली थी। इस पर मंत्री ने अस्पताल प्रशासन को इस दवाई की उपलब्धता की जांच के आदेश दिए।

आप की याचिका पर सुनवाई से कोर्ट का इनकार

बस मार्शल योजना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● एलजी के निर्णय के बाद मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल के बीच तनातनी जारी

उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) की बसों में मार्शल के तौर पर काम कर रहे सभी नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों को सेवा से बर्खास्त करने के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना के फैसले के खिलाफ दायर दिल्ली सरकार की एक याचिका पर सुनवाई करने से बृहस्पतिवार को इनकार कर दिया। एलजी के इस निर्णय के बाद अरविंद केजरीवाल सरकार और उपराज्यपाल के बीच तनातनी जारी है।

प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने आम आदमी पार्टी सरकार की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी की दलीलों पर गौर किया और उन्हें दिल्ली उच्च न्यायालय जाने का निर्देश दिया। सिंघवी ने कहा कि सरकार की लोकप्रियता बढ़ाने वाली सभी अच्छी योजनाओं पर रोक लगाई जा रही है। उन्होंने कहा, क्या यह (मार्शलों को सेवा से बर्खास्त करना) उपराज्यपाल के तहत आता है? वह इसे कैसे रोक सकते हैं। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, लेकिन हमें (संविधान के) अनुच्छेद 32 के तहत इस पर विचार क्यों करना चाहिए। दिल्ली उच्च न्यायालय इसपर फैसला करेगा। हम पहले ही संवैधानिक मामलों (सेवाओं पर नियंत्रण के लिए सरकार और उपराज्यपाल के बीच कानूनी रस्साकशी) पर फैसला सुना चुके हैं।

उन्होंने कहा, याचिका में बस मार्शल योजना को फिर से शुरू करने की मांग की गई है। हमारे विचार से, उचित उपाय उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाना होगा यदि याचिकाकर्ता उच्च न्यायालय का दरवाजा रुख करता है, तो उच्च न्यायालय इस पर शीघ्र विचार करेगा।

डीयू कर्मचारियों के लिए बनाएगा सोशल मीडिया नीति

विश्वविद्यालय की आलोचना करने वाले शिक्षाविदों पर निगरानी के लिए उठाया गया कदम : प्रशासन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

फाइल फोटो

दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने कर्मचारियों के सोशल मीडिया मंचों का इस्तेमाल करने के संबंध में नीति तैयार करने के लिए एक समिति का गठन किया है। गत आठ दिसंबर को जारी अधिसूचना में कहा गया है, विश्वविद्यालय के सक्षम प्राधिकारी द्वारा कर्मचारियों के संबंध में सोशल मीडिया मंचों के उपयोग को लेकर नीति तैयार करने के लिए एक समिति का गठन किया गया है।

विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों ने आरोप लगाया कि यह कदम सोशल मीडिया पर विश्वविद्यालय की आलोचना करने वाले शिक्षाविदों पर निगरानी के लिए उठाया गया है। दिल्ली विश्वविद्यालय की एक शिक्षिका ने कहा, हमारे में से कई लोग सोशल मीडिया मंच पर शिक्षकों के विस्थापन, पदोन्नति में देरी और अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में लिखते रहते हैं। ऐसी नीति हमारे अभिव्यक्ति के अधिकार पर अंकुश लगा सकती है। उन्होंने कहा कि नीति क्या विनियमित करेगी, इसको लेकर कोई स्पष्टता नहीं है। मसौदा तैयार होने और स्थाई समिति के समक्ष प्रस्तुत होने के बाद स्पष्टता आएगी। समिति में डीयू कंप्यूटर सेंटर के निदेशक संजीव सिंह और स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग के प्राचार्य अजय जायसवाल सहित छह सदस्य शामिल होंगे।

कोचिंग केंद्रों का निरीक्षण करें फायर विभाग-एमसीडी : कोर्ट

नई दिल्ली। उच्च न्यायालय ने बृहस्पतिवार को शहर के दमकल सेवा विभाग और नगर निकाय को यहां सभी कोचिंग केंद्रों का निरीक्षण कर यह पता लगाने का निर्देश दिया है कि उनमें अग्नि सुरक्षा नियमों का पालन किया जा रहा है या नहीं। न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा की अध्यक्षता वाली पीठ ने दिल्ली नगर निगम और दिल्ली अग्निशमन सेवा से कहा कि वे कोचिंग केंद्रों में खामियों के बारे में बताएं और यदि वे आग की घटनाओं के प्रति संवेदनशील पाए जाते हैं तो उचित निर्देश जारी करें।

पीठ ने अधिकारियों से कहा, आप प्रत्येक कोचिंग सेंटर, शिक्षण केंद्रों को खामियों के बारे में बताएं। उन्हें अनुपालन सुनिश्चित करने का अवसर प्रदान करें। अदालत ने कहा, एमसीडी और दिल्ली दमकल सेवा दोनों संयुक्त निरीक्षण करें। उन्हें अनुपालन करने के लिए समय दें। कोई भी केंद्र जो पूरी तरह से संवेदनशील पाया जाता है, उसे निर्देश जारी करें और वे अदालत से संपर्क कर सकते हैं।

लॉरेंस बिश्नोई गैंग का शार्प शूटर गिरफ्तार

● पंजाब के पूर्व विधायक के घर पर बरसाई थीं गोलियां

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

गिरफ्तार शार्प शूटर के साथ क्राइम ब्रांच की टीम।

अपराध शाखा ने लॉरेंस बिश्नोई और गोल्डी बरार गैंग के एक और शूटर को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया है। इसके पास से पिस्तौल और कारतूस बरामद किए गए हैं। आरोपी की पहचान सोमवीर उर्फ तोतला के रूप में हुई है। वह सोनीपत के भटगांव का रहने वाला है। इसकी गिरफ्तारी पंजाबी बाग इलाके में पंजाब के पूर्व विधायक के यहां हुई फायरिंग के मामले में की गई है।

विशेष पुलिस आयुक्त रविंद्र सिंह यादव ने बताया कि इस मामले में पुलिस टीम पहले ही आकाश उर्फ कासा और नितेश उर्फ सींटी को गिरफ्तार कर चुकी है। वह दोनों भी सोनीपत के भटगांव और घीकारा तहसील के रहने वाले हैं। आरोपी समेत गिरफ्तार 3 लोगों ने कुछ दिन पहले पूर्व विधायक और शराब व्यापारी दीप मल्होत्रा के पंजाबी बाग स्थित घर पर कई राउंड गोली चलाई थी। उस मामले में पंजाबी बाग थाने में एफआईआर दर्ज हुई थी और पुलिस टीम छानबीन कर रही थी। उस मामले में एक्स एमएलए को व्हाट्सएप पर धमकी की कॉल की गई थी। फायरिंग से पहले उन्होंने पंजाब में दो शराब की दुकानें जला दी थीं। पुलिस उपायुक्त अमित गोयल की देखरेख में एक पुलिस टीम ने तकनीकि सर्विलांस की मदद से पता लगा करके सोमवीर को ट्रैक किया लेकिन पुलिस टीम को देखने के बाद सरेंडर करने के बजाय पुलिस टीम पर गोली चला दी और मौके से भागने लगा।

पुलिस की वर्दी में बदमाश को करना था अपहरण, पुलिस ने पहले ही दबोचा

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

आरोपी को पहली बार वर्ष 2017 में महेंद्रगढ़ पुलिस ने अपहरण केस में किया था गिरफ्तार

काफी समय से फरार एक लाख रुपये के ईनामी बदमाश द्वारा पुलिस की वर्दी पहनकर किसी का अपहरण करना था। इससे पहले कि वह अपहरण की घटना को अंजाम देता, गुरुग्राम पुलिस ने उसे दबोच लिया। एसीपी अपराध वरुण दहिया ने गुरुवार को बताया कि आरोपी मूलरूप से महेंद्रगढ़ का रहने वाला है, जो फिलहाल नोएडा में रहता था। उसे पहली बार वर्ष 2017 में महेंद्रगढ़ पुलिस ने अपहरण के केस में ही गिरफ्तार किया था। बता दें कि 31 मई 2023 को गुरुग्राम पुलिस ने 3 बदमाशों को राजीव चौक के पास से अवैध हथियार समेत काबू किया गया था। आरोपियों के खिलाफ सदर थाना में केस दर्ज किया गया।

पुलिस जांच में सामने आया कि अपराध शाखा सेक्टर-17 गुरुग्राम की पुलिस टीम ने गिरफ्तार किए गए आरोपियों को हथियार

गुरुग्राम पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया ईनामी बदमाश विकास उर्फ विक्की।

उपलब्ध कराने वाले विकास उर्फ विक्की निवासी गांव गुढ़ा जिला महेंद्रगढ़ नामक आरोपी को 11 दिसम्बर को गुरुग्राम अदालत से प्रोडक्शन वारंट पर 4 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया।

कई गैंगस्टर से संबंधों का पता चला : आरोपी से पुलिस पूछताछ में पता चला कि उसे पुलिस की वर्दी पहनकर अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर एक अपहरण की वारदात को अंजाम देना था। इस वारदात वारदात को अंजाम देने से पहले ही गुरुग्राम पुलिस द्वारा इसके साथियों को गिरफ्तार कर लिया। इन्होंने आरोपी को पुलिस यूनिफॉर्म तथा हथियार इसके एक अन्य साथी ने उपलब्ध कराए थे। पुलिस पूछताछ में यह भी पता चला आरोपी के कई गैंगस्टरों के साथ भी संबंध है। गुरुग्राम पुलिस द्वारा आरोपी की गिरफ्तारी पर 1 लाख का ईनाम भी घोषित किया गया था।

आरोपी पर एक दर्जन केस: आरोपी विकास के खिलाफ लूट, मारपीट, चोरी, अपहरण, अवैध हथियार रखने के अपराधों के 5 केस राजस्थान में, लूट करने के संबंध में 1 केस महेंद्रगढ़ में, चोरी, शस्त्र अधिनियम, लूट, लूट/डकैती की योजना बनाने के संबंध में 4 केस गुरुग्राम में तथा 2 केस जिला दादरी में दर्ज हैं। पुलिस टीम द्वारा पुलिस हिरासत रिमांड के दौरान जयपुर से आरोपी की निशानदेही पर उसके कब्जा से 1 डोगा, 1 मैगजीन व 1 पुलिस यूनिफॉर्म बरामद की गई।

संक्षिप्त समाचार

नप सफाई कर्मियों ने फिर दिया मांगों को लेकर धरना

मांगों को लेकर धरना पर बैठें सोहना नगर परिषद कार्यालय के बाहर सफाईकर्मी।

सोहना। नगर परिषद सफाई कर्मियों ने अपनी मांगों को लेकर गुरुवार से दो दिवसीय धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान सफाई कर्मियों ने प्रदेश सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। नगर परिषद सफाई कर्मियों ने यूनिट प्रधान विक्रम सिंह की अध्यक्षता में मांगों को लेकर दो दिन के धरना की शुरुआत गुरुवार से शुरू की। सफाई कर्मी शुक्रवार को भी परिषद कार्यालय के मुख्य द्वार पर धरना देंगे। धरना में महिला एवं पुरुष सफाई कर्मी शामिल रहे। इस दौरान यूनिट प्रधान विक्रम सिंह ने बताया कि प्रदेश स्तर पर यूनियन के आदेश पर यह धरना शुरू किया है। उनकी पुरानी मांगों प्रदेश की भाजपा सरकार आश्वासन के बाद भी पूरा नहीं कर रही है। लेकिन सफाईकर्मी भी अपना आंदोलन को मांग पूरी हुए बिना समाप्त करने वाली नहीं है। अभी यह धरना दो दिन का है। जैसे ही यूनियन के प्रदेश स्तरीय पदाधिकारियों का आदेश आएगा। वैसे ही उनके द्वारा धरना प्रदर्शन किया जाएगा। नगर परिषद के सफाई कर्मियों की मुख्य मांगों में कच्चे कर्मचारियों का पक्का करना, कर्मचारियों का पीएफ समय पर जमा करना, कर्मचारियों को चिकित्सा सुविधा समय पर दिवाना, सफाई कर्मियों को सफाई के लिए उपकरण की सुविधा, हर माह साबून से लेकर तेल और वर्दी उपलब्ध कराना। मृतक सफाई कर्मचारियों के किसी एक सदस्य को रोजगार उपलब्ध कराना आदि मांगें हैं।

सोहना विधानसभा पन्ना प्रमुख सम्मेलन 24 दिसंबर को

गुरुग्राम। सोहना विधानसभा में भाजपा का पन्ना प्रमुख सम्मेलन 24 दिसंबर को होगा। सम्मेलन में हरियाणा प्रदेश भाजपा प्रभारी बिप्लब कुमार देब मुख्य अतिथि होंगे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष नायब सिंह सैनी, विधायक संजय सिंह व कई बड़े नेता भी पन्ना प्रमुख सम्मेलन को संबोधित करेंगे। संगठन को मजबूत करने के लिए तमाम बड़े नेता पन्ना प्रमुखों को मूल मंत्र देंगे। भाजपा जिला अध्यक्ष गार्गी कक्कड़ ने बताया कि कार्यकर्त्ता पार्टी की रीढ़ हैं और उन्ही के बल पर पार्टी की नीतियां आगे बढ़ती हैं। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं के दम पर ही 2014 से भारतीय जनता पार्टी की विजय यात्रा शुरू हुई। भाजपा जिला मीडिया प्रमुख अजीत यादव ने बताया कि मुख्य अतिथि बिप्लब कुमार देब और प्रदेश अध्यक्ष नायब सैनी पन्ना प्रमुखों को 2024 के लिए जीत का मंत्र देंगे। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जिला अध्यक्ष गार्गी कक्कड़ ने पन्ना प्रमुखों की बैठक लेकर तैयारियों के लिए दिशा निर्देश दे दिए हैं। सोहना विधानसभा का पन्ना प्रमुख सम्मेलन पहले 17 दिसंबर को होना था, लेकिन अब यह 24 दिसंबर को होगा। अजीत यादव ने बताया कि गुरुग्राम जिला की पटौदी, बादशाहपुर और गुरुग्राम विधानसभा के पन्ना प्रमुख सम्मेलन संपन्न हो चुके हैं।

गुरुग्राम की सड़कें राजधानी दिल्ली के शांतिपथ की तर्ज पर होंगी विकसित

प्रथम चरण में कोर्ट रोड का किया गया चयन, लगाए जाएंगे रंग-बिरंगे फूलों के पौधे

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

अधिकारियों की बैठक लेते जीएमडीए के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त पीसी मीणा।

गुरुग्राम शहर की कुछ सड़कों को नई दिल्ली के शांतिपथ की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। वहां रंग-बिरंगे फूलों के पौधे लगाए जाएंगे। इस कार्य के लिए प्रथम चरण में कोर्ट रोड को चुना गया है। अन्य सड़कों का सौंदर्यकरण भी शांतिपथ की तर्ज पर करवाया जाएगा। अगले 10 दिन में सड़कों को चिन्हित किया जाए।

यह निर्देश गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के सीईओ एवं नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त पीसी मीणा ने अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक में दिए। बैठक में उन्होंने कहा कि जीएमडीए व एमसीजी के अधिकारी अपने-अपने क्षेत्रों में सड़कों व फुटपाथों की मरम्मत, ग्रीन बेल्ट्स की सफाई एवं सौंदर्यीकरण, मैनहॉल दुरुस्तीकरण तथा साइकिल ट्रैक को ठीक करने के लिए एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार करके कार्य शुरू करें, ताकि शहर स्वच्छ, सुंदर एवं बेहतर बनें। उन्होंने कहा कि तालाबों को टूरिस्ट स्पॉट की तरह विकसित करें।

इसके साथ ही बेहतर पार्क व ग्रीन बेल्ट बनाएं। उन्होंने गैर-मुमकिन नालों तथा क्रीक्स का पुर्नविकास करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए। साथ ही इन स्थानों पर होने वाले अतिक्रमण को हटाने को कहा। हॉर्टिकल्चर वेस्ट के निष्पादन के लिए 2 बड़े प्लांट लगाने की योजना तैयार करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए गए। स्ट्रीट लाईट की समीक्षा के दौरान उन्होंने कहा कि विशेष स्वच्छता अभियान की तर्ज पर अगले 15 दिन सभी स्ट्रीट लाईटों को दुरूस्त करने के लिए संयुक्त रूप से एक विशेष अभियान चलाया जाएगा। अभियान में एमसीजी, जीएमडीए, एचएसवीपी तथा एचएसआइआइडीसी के क्षेत्र शामिल होंगे। इसके तहत सभी कनिष्ठ अभियंता अपने-अपने क्षेत्र का निरीक्षण करके 7 दिन के भीतर खराब पड़ी स्ट्रीट लाइटों की जानकारी संबंधित कार्यकारी अभियंताओं को भेजेंगे।

इसके बाद अगले 7 दिन के भीतर इन सभी खराब स्ट्रीट लाईटों को दुरूस्त करने का कार्य किया जाएगा। पीसी मीणा ने कहा कि 15 दिन के इस अभियान के दौरान यह सुनिश्चित किया जाएगा कि कोई भी स्ट्रीट लाइट खराब ना रहे। बैठक में निगमायुक्त ने कहा कि भविष्य में पार्कों में हाईमास्ट लाईटें ना लगाई जाएं। जो पहले लगाई जा चुकी हैं, उन्हें बदलने का कार्य किया जाए। इसके साथ ही संबंधित अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि किसी भी पेड़ पर सीधे लाइट ना पड़े, ताकि वहां पक्षियों के लिए समुचित वातावरण मिल सके।

बैठक में निगमायुक्त ने कहा कि कचरे, मलबे व हॉर्टिकल्चर वेस्ट के उठान के लिए 1 दिसंबर से चलाया जा रहा विशेष स्वच्छता अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा। अभियान के तहत संबंधित कनिष्ठ अभियंता अपने-अपने क्षेत्र में कचरे, मलबे व हॉर्टिकल्चर से संबंधित शिकायत भेजते रहें। उन्होंने कहा कि डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन वेंडरों की समीक्षा की जाए तथा ऐसे वेंडरों को हटाया जाए, जो अपना कार्य सही ढंग से नहीं कर रहे हैं।

नाबालिग के वीडियो से छेड़छाड़ के केस में तय हुए आरोप

अदालत की अगली सुनवाई 21 को

गुरुग्राम। नाबालिग के वीडियो को तोड़-मरोड़कर प्रसारित करने के मामले में जिला एवं सत्र न्यायाधीश शशि चौहान की अदालत में सुनवाई हुई। सभी 8 आरोपियों पर अदालत ने विभिन्न आपराधिक धाराओं में आरोप भी तय कर दिए हैं। अब गवाहों की गवाहियां शुरू हो जाएंगी। अदालत अब इस मामले में आगामी 21 दिसंबर को सुनवाई करेगी।

सामाजिक संस्था जनजागरण मंच के अध्यक्ष हरी शंकर कुमार व वरिष्ठ अधिवक्ता धर्मेंद्र मिश्रा से प्राप्त जानकारी के अनुसार सुनवाई के दौरान 8 आरोपी अजीत अंजुम, सैय्यद सोहेल, दीपक चौरसिया, राशिद, सुनील दत्त, ललित, चित्रा त्रिपाठी व अभिनव राज अदालत में पेश हुए। उनका कहना है कि पालम विहार के थाना प्रबंधक को आदेश दिए गए कि 14 दिसंबर 2013 को शिकायतकर्ता द्वारा जो रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। इस रिपोर्ट को नोएडा के सेक्टर-39 पुलिस थाना में स्थानांतरित कर दिया गया था, उस रिपोर्ट को अदालत में प्रस्तुत किया जाए। पुलिस इस रिपोर्ट को अदालत में प्रस्तुत नहीं कर रही थी। अदालत ने इस मामले में जोधपुर शहर महिला थाना प्रभारी को भी अदालत में अगली तारीख पर उपस्थित होने का नोटिस जारी किया है। उनका कहना है कि अदालत इस मामले में पूरी तरह से गंभीर है।

गौरतलब है कि 2 जुलाई 2013 को पालम विहार क्षेत्र के अनिल कुमार (काल्पनिक नाम) के घर संत आसाराम बापू आए थे। बापू ने परिवार के सदस्यों सहित उनकी 10 वर्षीय भतीजी को भी आशीर्वाद दिया था। उस समय सतीश के घर के कार्यक्रम की वीडियो आदि भी बनाई गई थी। बापू आसाराम प्रकरण के बाद टीवी चैनलों ने बनाई गई वीडियो को प्रसारित किया था। परिजनों ने आरोप लगाए थे कि उनकी व आसाराम बापू की छवि धूमिल करने के लिए वीडियो को तोड़-मरोड़कर अश्लील व अभद्र तरीके से प्रसारित किया गया था। जिससे परिवार व मासूम बालिका को मानसिक व सामाजिक रूप से कष्ट झेलना पड़ा था। आहत होकर परिजनों ने पालम विहार पुलिस थाना में शिकायत दर्ज कराई थी।

टेक्नोलॉजिकल एडवांसमेंट और फिनटेक के प्रसार के साथ भारत के बीएफएसआई सेक्टर ने किया उल्लेखनीय विकास : बिपिन प्रीत सिंह

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री के नॉर्दर्न रीजन द्वारा 10वें सीआईआई बैंकिंग एंड फाइनेंस समिट का आयोजन किया गया। सम्मेलन में बैंकिंग, फाइनेंशियल सर्विसेज एंड इंश्योरेंस (बीएफएसआई) सेक्टर की बड़ी कंपनियों ने हिस्सा लिया और भारत के वित्तीय क्षेत्र के भविष्य की रूपरेखा तय की गई।

चर्चा के दौरान मोबिक्विक के सह-संस्थापक एवं सीईओ बिपिन प्रीत सिंह ने कहा, 'टेक्नोलॉजिकल एडवांसमेंट और फिनटेक के प्रसार के साथ पिछले 20-30 साल में भारत के बीएफएसआई सेक्टर ने उल्लेखनीय विकास किया है और फाइनेंशियल इकोसिस्टम में अहम भूमिका निभा रहा है। इस विकास को रेगुलेटरी फ्रेमवर्क से भी मदद मिली है, जिससे विकास की राह पर बढ़ते रहना संभव हुआ है। एक बड़ी उपलब्धि भारत का अनूठा डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर भी है, जहां इनोवेशन का नेतृत्व किसी बड़ी सार्वजनिक कंपनी के हाथ में नहीं है। इसे लोगों के हित में विकसित किया जा रहा है और इससे बैंकों एवं फिनटेक कंपनियों के बीच गठजोड़ को गति मिल रही है। इनोवेशन के हब के रूप में इस गठजोड़ वाले फ्रेमवर्क से फाइनेंशियल इन्क्लूजन का एजेंडा भी आगे बढ़ रहा है, जो भारतीय बीएफएसआई सेक्टर की सफलता एवं प्रगति के लिए अहम है।' डॉलर के कम होते वर्चस्व और मल्टीपोलर करेंसी के इस दौर का उल्लेख करते हुए रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर श्री राधा श्याम राठो ने कहा, 'मैक्रोइकोनॉमिक पैरामीटर और विकास के अन्य मानक दिखा रहे हैं कि सुस्त पड़ते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य के बीच भारत की स्थिति मजबूत है। ऐसे में भारतीय रुपये का अंतरराष्ट्रीयकरण भविष्य की सहज राह है।' बीएफएसआई को विकास एवं इनोवेशन के नए मानक के रूप में स्थापित करने की थीम पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में इस उद्योग में हो रहे बदलाव और भविष्य की रूपरेखा पर विमर्श हुआ। सम्मेलन ने आर्थिक उदारीकरण, टेक्नोलॉजिकल एडवांसमेंट, रेगुलेटरी रिफॉर्म्स और उपभोक्ताओं के व्यवहार में बदलाव समेत बीएफएसआई सेक्टर के सफर पर विमर्श का मंच प्रदान किया।

सम्मेलन में बीएफएसआई सेक्टर के सामने आने वाली चुनौतियों को भी सामने रखा गया। साथ ही, रियल-टाइम एडॉप्शन, हाइपर कस्टमाजेशन और बिजनेस प्रोसेस में एआई एवं एनालिटिक्स के सरलीकरण की जरूरत पर भी जोर दिया गया। उपस्थित विशेषज्ञों ने 5जी को भारतीय बीएफएसआई सेक्टर के लिए कैटेलिस्ट के रूप में स्वीकार किया, इससे क्लाउड टेक्नोलॉजी को अपनाने में तेजी आएगी, जिससे ज्यादा इफिशिएंट ऑर्गनाइजेशन तैयार करने, लागत कम करने और एंड-यूजर सपोर्ट को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

सोहना बार एसोसिएशन के प्रधान व सचिव का चुनाव आज

सोहना। आज होने वाला बार एसोसिएशन चुनाव को लेकर प्रत्याशियों की प्रतिष्ठा दाव पर लगी हुई है। चुनाव मैदान में उतरे प्रत्याशियों ने जीत के लिए अपनी सारी ताकत झौंक दी है। चुनाव में कुल वोटों की संख्या 542 है। सोहना बार एसोसिएशन का चुनाव आज सुबह 9 शुरु होगा और सायं 4 बजे तक चलेगा। चुनाव प्रधान व सचिव पदों का होगा।

प्रधान पद पर सतीश खटाना व सुनील में आमने सामने की टक्कर है। इसी प्रकार सचिव पद पर नवीन गर्ग व बलजीत में सीधी जंग होगी। सोहना बार एसोसिएशन का चुनाव वकीलों के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। जिसमें इस बार कुल 542 वकील मतदाता उम्मीदवारों की किस्मत का फैसला करेंगे। उम्मीदवारों ने मतदाताओं को अपने समर्थन में लाने के लिए जमकर जोर आजमाइश की है। लेकिन मतदाता किसी भी प्रत्याशी समक्ष अपने मन की बात को नहीं खोल रहे है।

राम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या में स्वास्थ्य सेवाओं का दायित्व संभालेगा सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर

हरियाणा के दर्पत्ति सिक्स सिग्मा का कर रहे हैं संचालन

अभी तक दुर्गम यात्राओं में स्वास्थ्य सेवाएं देती आ रही है सिक्स सिग्मा

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव और विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष चंपत राय से मुलाकात के दौरान सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर के सीईओ डा. प्रदीप भारद्वाज व मेडिकल निदेशक डॉ. अनीता भारद्वाज।

अभी तक दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं दे रही सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर की ओर से अब अयोध्या में राम जन्म मंदिर में भी स्वास्थ्य सुविधाएं दी जाएंगी। हरियाणा के भारद्वाज दपंत्ति द्वारा संचालित सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर 10 जनवरी 2024 से राम मंदिर में अपनी स्वास्थ्य सेवाओं की शुरुआत करेगी। सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर के सीईओ डा. प्रदीप भारद्वाज कहते हैं कि त्रेता युग में जो कार्य हनुमान जी ने संजीवनी लाकर किया था, वही कार्य सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर भगवान श्रीराम के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर पधारे जरूरतमंद श्रद्धालुओं को संजीवनी देकर करेगा। उनका कहना है कि श्री राम जन्मभूमि मंदिर में 10 जनवरी से स्थायी चिकित्सा सेवाएं स्थापित करने के लिए सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर को आमंत्रित किया गया है। उन्होंने कहा कि राम के काज में सेवा का अवसर मिलने पर हम बहुत धन्य महसूस करते हैं। यह सिक्स सिग्मा के लिए बहुत सम्मान की बात है, जिन्हें राष्ट्र के लिए ऐसी महान नि:स्वार्थ सेवाओं को देने का अवसर मिला। डॉ. प्रदीप भारद्वाज व मेडिकल निदेशक डॉ. अनीता भारद्वाज ने कारसेवकपुरम स्थित श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव और विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चंपत राय से मुलाकात कर स्वास्थ्य सेवाओं को देने पर चर्चा की।

सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर देश के कठिन पर्वतीय क्षेत्रों में आयोजित होने वाली सभी धार्मिक यात्राओं में मेडिकल सर्विस देता है। उन प्रमुख यात्राओं में श्री कैलाश मानसरोवर, श्री अमरनाथ, श्री बदरीनाथ, श्री केदारनाथ, श्री रुद्रनाथ, श्री मद्महेश्वर शामिल है। सनातन धर्म के गौरवशाली परम्परा के अनुसार होने वाली उक्त यात्राओं से जहां धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलता है, वहीं संबंधित क्षेत्र में आर्थिक विकास भी होता है। उन्नति से देश-विदेश में ख्याति मिलती है और संस्कृति को विश्व पटल पर ले जाने का अवसर देती है।

बता दें कि श्री राम मंदिर का डिजाइन चंद्रकांत सोमपुरा ने बनाया है। नागर शैली में बनाए जा रहे इस मंदिर का प्रवेश द्वार पूर्व की ओर बनाया गया है, जो गोपुरम शैली में है। यह द्वार दक्षिण के मंदिरों का प्रतिनिधित्व करेगा। मंदिर की दीवारों पर भगवान श्रीराम के जीवन को दर्शाने वाली कलाकृतियां प्रदर्शित होंगी। मंदिर का गर्भगृह अष्टकोणीय आकार का है। गर्भ गृह को ऐसे डिजाइन किया गया है, ताकि सूर्य की किरणें सीधे रामलला पर पड़े।

ग्रामीणों को अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने के लिए किया प्रेरित

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

सोहना गांव मोहम्मदपुर गुर्जर में चुनाव सुपरवाइजर रोहताश सिंह ग्रामीणों को मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने को लेकर जागरूक करते हुए।

सोहना विधानसभा क्षेत्र में तैनात चुनाव सुपरवाइजर ने अपनी टीम के साथ खंड के चार गांवों का दौरा कर लोगों को अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने के लिए प्रेरित किया। विशेष रूप से युवाओं को अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज कराते हुए मत का अधिकार प्राप्त करने के लिए जागरूक किया जा रहा है।

दौला के राजकीय सीनियर सैकेंडरी स्कूल में प्राध्यापक के पद पर तैनात रोहताश सिंह अपने शिक्षण के साथ-साथ वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा और विधानसभा चुनाव को लेकर तैयार की जा रही मतदाता सूची में अहमं योगदान दे रहे है। विधानसभा क्षेत्र में चुनाव सुपरवाइजर की भूमिका निभा रहे रोहताश सिंह ने बुधवार को खंड के चार गांवों को दौरा किया। जिनमें सोहना ढाणी, मोहम्मदपुर गुर्जर, गुंडवास और रायसीना शामिल है। जहां पर रोहताश सिंह ने अपनी टीम को लेकर गांवों की गलियों से लेकर चौक-चौराहों पर ग्रामीणों को इक्कठा किया। ग्रामीणों को मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने, जिनका वोट कट गया है। वह फिर से अपना नाम फार्म नंबर 8 भरकर फिर से मत डालने का अधिकार प्राप्त करने के लिए जागरूक किया। जिस भी मतदाता के नाम, पता और अन्य कोई त्रुटियां हैं, उन्हें सही कराने के लिए प्रेरित किया गया। रोहताश सिंह ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य 18 वर्ष की उम्र पार चुके युवाओं को देश और प्रदेश की सरकार बनाने में अपना योगदान मत के द्वारा देने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। ताकि युवा देश और प्रदेश को विकसित बनाने में सही सरकार का चयन कर सकें।

रेलवे स्टेशन के पास से डंपिंग यार्ड हटाने के लिए डॉ. डीपी गोयल के प्रयास लाए रंग

गुरुग्राम। गुरुग्राम के रेलवे स्टेशन के पास बने डंपिंग यार्ड को हटाने के लिए रेलवे सलाहकार समिति के सदस्य द्वारा हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवीपी) से किये गये अनुरोध के बाद इस विषय पर कार्यवाही शुरू हुई है। एचएसवीपी मुख्यालय से गुरुग्राम एचएसवीपी ईओ-1 को पत्र भेजकर इस पर नियमानुसार कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं।

डॉ. डीपी गोयल ने बताया कि उनकी ओर से 31 अक्टूबर 2023 को हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के मुख्य प्रशासक को पत्र भेजकर अनुरोध किया गया था कि गुरुग्राम के रेलवे स्टेशन के पास डंपिंग यार्ड बना है। इससे लोगों को काफी परेशानी हो रही है। लोग यहां गंदगी डालते हैं, लेकिन आसपास के लोग इससे प्रभावित हो रहे हैं। हम सब स्वच्छ भारत मिशन के तहत काम करते हुए गुरुग्राम शहर को स्वच्छता की सूची में टॉप-10 में लाने के लिए प्रयासरत हैं। नगर निगम, जीएमडीए, एचएसवीपी, जिला प्रशासन सब मिलकर इस पर काम कर रहे हैं। केंद्र और हरियाणा सरकार भी स्वच्छता को सर्वोपरि मानते हुए काम कर रही है। तंदुरुस्त रहने का सबसे बड़ा पहला कारण स्वच्छता है। पर्यावरण स्वच्छ होने के लिए भी स्वच्छता ही चाहिए।

डॉ. डीपी गोयल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान में हम सबकी भागीदारी ही इस अभियान को सिरे चढ़ा सकती है। सरकार अपने स्तर पर बहुत कुछ कर रही है, लेकिन जनता को भी इसमें आगे आकर काम करना चाहिए। स्वच्छता के लिए पर्यावरण संरक्षण विभाग भाजपा हरियाणा के बैनर तले विभाग के प्रदेश प्रमुख नवीन गोयल के नेतृत्व में गुरुग्राम में लगातार अभियान भी चलाए जा रहे हैं। इसका असर भी शहर में नजर आ रहा है।

जनस्वास्थ्य विभाग की ऊंचाई वाले घरों को नहरी पेयजल आपूर्ति देने की कवायद शुरू

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

जनस्वास्थ्य विभाग ने शहर के ऊँचाई वाली कॉलोनियों को भी नहरी पेयजल आपूर्ति से जोड़ने की कवायाद शुरु कर दी है। विभाग की साढ़े 5 करोड़ की योजना से करीब 4 हजार घरों में पेयजल की आपूर्ति की जाएगी। ताकि केंद्र सरकार की नल से जल योजना से जोड़ा जा सके।

50 हजार की आबादी वाले शहर की 8 से 10 ऐसी कॉलोनियों है। जिनमें नहरी पानी की आपूर्ति न होकर ट्यूबवैल से की जा रही है। गूर्जर घाटी, भूड़पाडा और ठाकूरवाड़ा कॉलोनी में ट्यूबवेल से निकलने वाला गर्म पानी होता है। यह पानी गर्मी पानी को गर्मी के मौसम में उपयोग लेना से पहले बड़ें बर्तनों में ठंडा करना पड़ता है।

पीने के लिए कॉलोनीवासियों को बाजार से बोतल बंद पानी खरीदकर ही गले की प्यास को शांत करना होता है। जनस्वास्थ्य विभाग ने अब ऊंचाई वाली कॉलोनियों में रहने वाले लोगों को पूरे साल नहरी पानी की आपूर्ति करने के लिए तैयार की गई साढ़े 5 करोड़ की योजना को अमलीजामा पहनाना शुरू कर दिया है।

कहां-कहां बिछाई जाएगी पाइप लाइन : शहर के वार्ड-17 की गूर्जर घाटी, ठाकूरवाड़ा, वार्ड नंबर पहाड़ी स्कूल, भूड़पाड़ा, दुर्गा कॉलोनी, न्यू फ्रेड्स कॉलोनी, बांध कॉलोनी, पहाड़ कॉलोनी आदि शामिल है। इसके साथ नगर परिषद का वार्ड-20 का गांव सांप की नंगली शामिल है। यहा के निवासी अभी ट्यूबवैल होने वाली पानी की सप्लाई से अपनी प्याज बुझा रहे हैं। जबकि सांप की नंगली का अनुसूचित जाति का मौहल्ला ऊंचाई पर होने के कारण यहा के निवासियों को आज भी पेयजल की आपूर्ति नहीं होती। महिलाएं व बच्चें दूसरे मौहल्ले या खेतों में लगे ट्यूबवेलों से पानी लेकर आते हैं।

तीन वाटर टैंक बनेंगे : जनस्वास्थ्य विभाग ने ऊँचाई वाली कॉलोनियों में रहने वाले प्रत्येक परिवार को को नल से जल जोड़ने के लिए तीन वाटर टैंक बनाएं जाएंगे। यें वाटर टैंक भूड़पाड़ा में एक लाख लिटर का, ठाकुरवाड़ा में सवा लाख लिटर का और बांध कॉलोनी में 6 लाख लिटरक का बनेंगा। सभी ऊंचाई वाली कॉलोनियों से लेकर सांप की नंगली तक कुल 9 किलोमीटर लंबी पेयजल आपूर्ति की लाइन बिछाई जाएगी।

> **कार्य** को युद्ध स्तर पर शुरु किया है। वैसे तो यह एक साल में पूरा करना है। लेकिन कोशिश रहेगी की जून-जुलाई 2024 तक अधिक से अधिक कॉलोनीवासियों को नहरी पानी की आपूर्ति की जा सके।
>
> **(खुर्शीद अहमद-जेई जनस्वास्थ्य विभाग)**

> **ग्रामीण** और शहरी क्षेत्र में केंद्र सरकार की नल से जल योजना से जोड़ने का कार्य पूरा हो चुका है। अभी ऐसे स्थानों को चिंहित किया जा रहा है। जहां पर अभी भी पेयजल की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। ऐसे स्थानों को केंद्र सरकार की योजना से जोड़ने का कार्य तेजी से किया जाएगा।
>
> **(ओमप्रकाश-एसडीओ जनस्वास्थ्य विभाग)**

डेढ करोड़ रुपये की लागत से बसंतगढ़ विद्यालय की सुधरेगी हालत

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

सीनियर सेकेंडरी स्कूल बसंतगढ़ में पढ़ने वाले सैकेड़ों छात्रों को जल्द ही सर्दी-गर्मी व बरसात में खुले में पढ़ने से छूटकारा मिलेगा। लगभग डेढ़ करोड़ रुपये की लागत से स्कूल में नया भवन बनाया जाएगा। नए भवन में करीब 15 नए कमरे बनाए जाएंगे। सभी कमरे चौड़े व हवादार होंगे। जिससे कमरों में रोशनी और हवा आ-जा सके।

बसंतगढ़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पढ़ने वाले सैकड़ों छात्रों की सुविधा के लिए जल्द ही सर्व शिक्षा अभियान की तरफ से नया भवन बनाया जाएगा। इस भवन में छात्र छात्राओं की सुविधा के लिए उनकी संख्या के हिसाब से नए कमरे बनाए जाएंगे।

दो साल पहले स्कूल को आठवीं से सीनियर सेकेंडरी स्तर पर अपग्रेड करने के बाद स्कूल में कमरों की कमी बनी हुई थी। छात्र छात्राओं को गर्मी, सर्दी व बरसाद में खुले में बैठकर अपनी पढ़ाई करनी पड़ती है। जिससे वह कई बार बीमार तक पड़ जाते थे। कई बार

छात्रों को खुले में बैठने से मिलेगी राहत

बरसात होने पर छात्रों की छुट्टी बीच में ही करनी पड़ जाती थी। जिससे उनकी पढ़ाई बाधित होती थी। परंतु अब एसएसए ने नए कमरों को बनाने का फैसला छात्रों के हक व सुविधाओं को देखते हुए लिया है। स्कूल के नए भवन को बनाने की मंजूरी मिल जाने के बाद इसका टेंडर लगाकर कार्य जल्द ही शुरू करवा दिया जाएगा।

> **बसंतगढ़** मिडिल स्कूल को सीनियर सेकेंडरी तक अपग्रेड होने के बाद दो साल से स्कूल में कमरों की कमी बनी हुई थी। जिसकी वजह से छात्र छात्राओं को दिक्कत का सामना करना पड़ता था। नए भवन बनने के बाद छात्रों को खुले में बैठने से छुटकारा मिलेगा।
> **-नवीन कुमार, निवासी बंसतगढ़**

> बसंतगढ़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल के नए भवन को बनाने का कार्य जल्द ही शुरू हो जाएगा। यह भवन लगभग डेढ़ करोड़ रुपये की लागत से बनाया जाएगा।
> **-विनीत सैनी, उपमंडल अभियंता, सर्व शिक्षा अभियान**

स्कूल के भवन का निर्माण 2024 के अंत तक पूरा करवा दिया जाएगा। जिससे 2025 से शुरू होने वाले नए सत्र में बच्चे नए भवन में बैठकर शिक्षा प्राप्त कर सकें। नए भवन बनने के बाद आसपास के गांव किठवाड़ी, ताराका, खेडला, छज्जूनगर, असावटा आदि गांवों के छात्र छात्राओं को फायदा मिलेगा।

झगड़े में सिर में गोली लगने से महिला की मौत

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

गांव छज्जूनगर में बच्ची के जन्मदिन की पार्टी में डीजे बजाने को लेकर झगड़ा हो गया। पूर्व फौजी ने अपने परिवार के सदस्यों को साथ लेकर दूसरे पक्ष पर हमला कर दिया। फायरिंग के दौरान जन्मदिन पार्टी में शामिल होने आई एक महिला के सिर में गोली लगी और उसकी मौत हो गई।

आरोपियों ने घर में घुसकर लाठी-डंडों व लोहे की रॉड से अन्य परिवार वालों के साथ जमकर मारपीट की। घर में खड़ी गाड़ी, बाइक व अन्य सामान को तोड़ दिया। हमले में करीब एक दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए, जिनका इलाज विभिन्न अस्पतालों में चल रहा है। मृतक महिला के शव का पोस्टमार्टम फरीदाबाद के बीके अस्पताल में कराया गया। चांदहट पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है।

10 महिला-पुरुष घायल, वाहनों में तोड़फोड़

जानकारी के अनुसार गांव छज्जूनगर निवासी अजय की एक वर्षीय बेटी दिवांशी का बुधवार को जन्मदिन था। जन्मदिन को लेकर बुधवार शाम को पार्टी का आयोजन किया गया। पार्टी में रिश्तेदारों को भी बुलाया गया था। जन्मदिन पार्टी में डीजे बजाया जा रहा था। उसी दौरान पड़ोस में रहने वाला पूर्व फौजी केशव मौके पर आ गया और डीजे बंद करने को कहा।

आरोप है कि फौजी ने गाली-गलौच शुरू कर दी। लोगों ने इसके बाद उसे समझाकर घर भेज दिया। कुछ देर बाद केशव अपने साथ चंद्रपाल, नेत्रपाल, मुकेश, मोनू, मोंटू, दीपक, नरेश, जलदेव, सत्यप्रकाश,

मनीष, पृथ्वी, अतुल, जीतू, जगत, राजबीर व अन्य महिलाओं के साथ हाथों में बंदूक, लाठी-डंडा, कुल्हाड़ी व लोहे की रॉड लेकर मौके पर आए और परिवार पर हमला कर दिया।

इस दौरान गोलियां चल गईं, जिसमें जन्मदिन पार्टी में शामिल होने आई गांव पृथला के अजय की बुआ सुमरन के सिर में गोली लग गई। इसके बाद भी आरोपी नहीं रुके और परिजनों के साथ लाठी-डंडों व रॉड से पीट-पीटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया। गोली लगने से घायल सुमरन को फरीदाबाद के निजी अस्पताल में दाखिल कराया, जहां उसकी मौत हो गई।

वहीं अन्य घायलों का इलाज विभिन्न अस्पतालों में चल रहा है। हमले में अजय, नमृता, पवन, पूनम, जितेंद्र सहित करीब एक दर्जन गंभीर रूप से घायल हो गए। आरोपियों ने घर में खड़ी गाड़ी, बाइक व अन्य सामान को भी तोड़ दिया। महिलाओं ने घर अंदर छिपकर अपनी जान बचाई। घटना सीसीटीवी में कैद हो गई।

जानकारी के अनुसार आरोपी पूर्व फौजी केशव ने साल 2022 में ग्राम पंचायत का चुनाव लड़ा था, जिसमें वह हार गया। वह अपनी हार का जिम्मेदार अजय के परिवार को मानता है और उसकी वजह से अजय के परिवार के साथ रंजिश रखे हुए था। बुधवार को केशव ने डीजे बजाने पर झगड़ा शुरू कर दिया, जो खूनी संघर्ष में बदल गया।

यातायात पुलिस ने 259 ऑटो के काटे चालान

फरीदाबाद। ट्रैफिक पुलिस ने ऑटो में क्षमता से अधिक सवारी बिठाने और यूनिक आइडेंटिफिकेशन नंबर प्लेट नहीं लगवाने वाले 259 ऑटो चालकों चालान किए। डीसीपी ट्रैफिक अमित यशवर्धन द्वारा शहर में यातायात व्यवस्था व सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सभी ऑटो चालकों को यूनिक आइडेंटिफिकेशन नंबर प्लेट लगवाने के निर्देश दिए गए हैं। इसके साथ सभी ऑटो चालकों को यातायात नियमों के संबंध में लगातार जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने ने बताया कि ऑटो चालक अक्सर ऑटो में क्षमता से अधिक सवारी बिठाने का प्रयास करते हैं, जिससे सड़क दुर्घटना के साथ आम नागरिकों की सुरक्षा का खतरा की संभावना बढ़ जाती है। कुछ ऑटो चालक नियमों की अनदेखी करते हुए यातायात नियमों का पालन नहीं करते हैं। उनके खिलाफ अभियान चलाया है।

मीतरोल में हो रहे अवैध निर्माण पर चला पीला पंजा

पलवल। गुरुवार को जिला नगर योजनाकार पलवल द्वारा गांव मीतरोल में अवैध निर्माण ढहाया गया। लगभग सात एकड़ में पनप रही दो अवैध कॉलोनियों में 8-10 डीपीसी, 500 मीटर रोड नेटवर्क व दो निर्माणाधीन मकान व दो बाउंड्रीवॉल को जिला प्रशासन की मदद से तोड़ा गया। तोड़फोड़ की कार्यवाही के दौरान ड्यूटी मजिस्ट्रेट एवं फील्ड स्टाफ व पुलिस बल मौजूद थे। तोड़फोड़ की इस कार्रवाई के दौरान जिला नगर योजनाकार पलवल नरेंद्र नैन द्वारा बताया गया कि विभाग द्वारा की जा रही तोड़फोड़ में और सख्ती बरती जायेगी, ताकि अवैध कॉलोनी काटने व उसमें निर्माण करने वालों के मंसूबे पूरे न हो सकें और समय रहते पनप रहे अवैध निर्माण को तोड़ा जा सके। सभी अवैध कॉलोनियों में जन साधारण को जागरूक करने के लिए चेतावनी बोर्ड भी लगाये जा चुके हैं। उन्होंने आमजन से अनुरोध किया है कि अवैध कॉलोनियों में भू माफियाओं के बहकावे में आकर प्लाट ना खरीदें व अपनी मेहनत की कमाई को बर्बाद न होने दें, क्योंकि अवैध कॉलोनियों में सरकार द्वारा किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं दी जाती है। कोई भी अवैध कॉलोनी में निर्माण करने से पहले सरकार से नियमानुसार अनुमति लें। अवैध कॉलोनी में निर्माण को किसी भी समय अधिनियम के प्रावधान में गिराया जा सकता है।

नगर परिषद के गेट पर छोड़ दी निर्माण सामग्री, लोगों को हो रही दिक्कत

पलवल। नगर परिषद पलवल कार्यालय के गेट पर बिल्डिंग मेटीरियल पड़ा होने से कार्यालय में आने-जाने वाले लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। भवन निर्माण के सामान की वजह से काम के लिए आए लोग अंदर जाने में असमर्थ होने पर वापस जाने को मजबूर हो जाते है। लोगों का कहना है कि कई दिन से यहां ईंट, रोड़ी, क्रेशर पड़ा हुआ है। लोगों की मांग है के बाबजूद रास्ते को साफ नहीं किया गया है। जिससे लोगों में नगर परिषद अधिकारियों के खिलाफ नाराजगी है। यहां पर हर रोज अपने जन्म-मृत्यु, नक्शा, एनओसी, हाउस टैक्स, मेरिज रजिस्ट्रेशन आदि कार्यों के लिए आने वाले लोगों को परेशानी हो रही है। यहां अपने वाले बुजुर्ग, महिला, दिव्यांग, बच्चों व कर्मचारियों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। लोगों ने कई बार सामान को हटवाने की मांग की है, परंतु अभी तक इस पर कोई सुनवाई नहीं की गई है।

> **नगर** परिषद कार्यालय के गेट पर कई दिन से सामान पड़ा हुआ है। जिससे यहां आने-जाने वाले लोगों को कठिनाई हो रही है। इसे तुरंत यहां से हटवाया जाए।
> **-जिलेसिंह सौरोत**

> **नगर** परिषद के अंदर निर्माण का कार्य चल रहा है। जिसकी वजह से नगर परिषद कार्यालय के रास्ते में ईंट, रोड़ी व दूसरा सामान पड़ा हुआ है। इसको जल्द ही हटवा दिया जाएगा।
> **-डॉ. यशपाल, चेयरमैन, नगर परिषद**

अपहरण कर युवती से किया सामूहिक दुष्कर्म

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

दीवार फांदकर घर में घुसे थे युवक, जंगल में ले जाकर किया दुष्कर्म

रात को दीवार फांदकर दो युवक एक घर में घुस गए और वहां सो रही युवती का अपहरण कर गाड़ी में डालकर जंगल में ले गए। आरोप है कि और वहां दो युवकों ने लड़की को जान से मारने की धमकी देकर उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। पुलिस ने दो नामजद युवकों के खिलाफ अपहरण, सामूहिक दुष्कर्म करने सहित अन्य धाराओं में केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

उटावड़ थाना प्रभारी टेक सिंह के अनुसार, थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी युवती ने दी शिकायत में कहा है कि वह रात में अपने घर में अपनी भाभी के पास कमरे में सोई हुई थी। परिवार के अन्य लोग भी घर में सोए हुए थे। रात के करीब 11 बजे जिला नूंह के बुचाका गांव निवासी साहिद व दिलशान उनके घर की दीवार फांद कर अंदर घुस आए। दोनों ने उसको सोते हुए जगा लिया। शोर मचाने पर जान से मारने की धमकी देकर वे उसे उठाकर मकान से बाहर ले गए। वहां पर उनकी गाड़ी खड़ी हुई थी। आरोपी उसे गाड़ी में डालकर जंगल में ले गए। जंगल में ले जा कर दोनों ने उसके साथ बारी-बारी से दुष्कर्म किया। किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद वे सुबह करीब 4-5 बजे उसे घर के बाहर छोड़कर फरार हो गए। दोनों ने उसे धमकी दी कि यदि इस बारे में किसी को बताया या कार्रवाई की तो जान से खत्म कर देंगे। सुबह अपने घर पहुंच कर उसने अपने परिजनों को सारी बात बताई। फिर थाना उटावड़ में दोनों के खिलाफ शिकायत दी।

दयानंद सरस्वती की जयंती पर हथीन में हवन किया

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के उपलक्ष में 200-200 यज्ञ करने के संकल्प को आगे बढ़ते हुए योगाचार्य गुरमेश सिंह के सानिध्य तथा डॉक्टर युद्धवीर आर्य के ब्रह्मत्व में कुटी मंदिर मानपुर बहीन रोड तहसील हथीन में यज्ञ का शुभारंभ हुआ।

यज्ञ के संयोजक मास्टर विजेंद्र सिंह आर्य भमरोला ने बताया कि यज्ञ के यजमान मनोहर सिंह समाजसेवी ने यज्ञ की भूमिका निभाई तथा गांव की सुख शांति के लिए अपनी मित्र मंडली के साथ हवन में श्रद्धा भाव से आहुति देकर पुण्य के भागी बने। इस यज्ञ में गांव मोहल्ले से अनेक महिलाओं ने भी घी सामग्री लाकर

आहुति देकर बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर मास्टर विजेंद्र सिंह ने बताया कि हवन में आहुति देने से जहां पर्यावरण शुद्ध होता है, वहीं आध्यात्मिकता में वेदों के आधार पर वैदिक धर्म पालन के साथ लोक परलोक में जीवात्मा को सुख शांति प्राप्त होती है तथा घोर संकट में भी विचलित नहीं होता और कोई कष्ट क्लेश महसूस नहीं होता। ऐसा धार्मिक हवन करने वाला हमेशा आनंदित रहता है। इसी तरह डॉक्टर युद्धवीर आर्य ने भी अपने संबोधन में कहां कि आज दुनिया में जो युवाओं में हुक्का, तंबाकू, नशीले पदार्थ, शराब, अंडे, मांस की लत पड़ रही है, वह चिंताजनक है। हमें नशामुक्त समाज व संसार बनाना है, पाखंड, अंधविश्वास, समाज में फैली अनेक बुराइयों पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योग यज्ञ के करने से ही मनुष्य मात्र प्राणी का उद्धार, कल्याण, सुख समृद्धि हो सकती है तथा अखंड प्रचंड नियम पूर्वक ऐसा करने से वह निरोग व स्वस्थ रह सकता है।

हमें अपनी सात्विक आहार, दिनचर्या के साथ पूजा, पाठ, मनन, चिंतन, धार्मिक ग्रंथों के स्वाध्याय में समय देना चाहिए। जिससे समाज में फैली अनेक बीमारियां, बुराइयां दूर हो सकें। यह जन जागरण अभियान हमें क्रांति के रूप में चलाना चाहिए। इस अवसर पर मनोहर सिंह, दुलीचंद, नवल सिंह, करतार सिंह, गोपाल आर्य, शेर सिंह आर्य, पूरन सिंह महंत, लकी, सुखबीर, राम सिंह रावत, वीरेंद्र दास बाबा, धन सिंह रावत आदि मौजूद थे।

किसानों के कृषि यंत्रो का 15 व 18 दिसंबर को होगा भौतिक सत्यापन

पलवल। हरियाणा सरकार द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अंतर्गत चलाई जा रही फसल अवशेष प्रबंधन स्कीम के तहत वर्ष 2023-24 में किसानों को अनुदान पर दिए गए कृषि यंत्रों का भौतिक सत्यापन किया जाना है। जिला पलवल के खंड होडल के किसानों के कृषि यंत्रो का भौतिक सत्यापन एसडीएम होडल की अध्यक्षता में 15 दिसंबर व खंड हसनपुर के किसानों के कृषि यंत्रों का भौतिक सत्यापन 18 दिसंबर को किया जाएगा। डीसी नेहा सिंह ने बताया कि यह भौतिक सत्यापन सुबह नौ बजे से नई अनाज मंडी होडल में किया जाएगा। सहायक कृषि अभियंता अमीन ने संबंधित किसानों को इन तिथियों को स्वयं अपने कृषि यंत्र, आधार कार्ड, पैन कार्ड, ट्रैक्टर की आरसी के साथ उपस्थित होने की अपील की है, ताकि भौतिक सत्यापन की प्रक्रिया को जल्द से जल्द निपटाया जा सके। उन्होंने बताया कि 15 दिसंबर को केवल खंड होडल तथा 18 दिसंबर को खंड हसनपुर के किसानों के कृषि यंत्रों का भौतिक सत्यापन किया जाएगा।

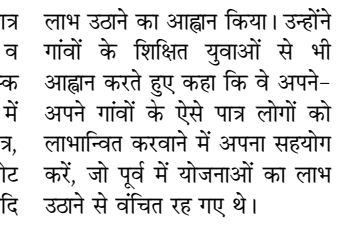

सरकार की योजनाओं का लाभ सभी को मिलना ही यात्रा का उद्देश्य : दीपक मंगला

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

केंद्र व प्रदेश सरकार की ओर से आमजन मानस के कल्याण के लिए बनाई गई सभी योजनाओं का लाभ सीधा पात्र व्यक्ति तक पहुंचे। इसी उद्देश्य से विकसित भारत संकल्प यात्रा जिला के अंतर्गत खंडों के गांवों में जाकर लोगों के बीच पहुंचकर योजनाओं के बारे में जागरूकता उत्पन्न कर रही है। यह बात विधायक दीपक मंगला ने हसनपुर खंड के गांव बेला में विकसित भारत संकल्प यात्रा के स्वागत में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत कर

विधायक ने हसनपुर के गांव बेला व अजीजाबाद में दिया उद्बोधन

ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी का रथ है। केंद्र व प्रदेश की योजनाओं का लाभ सभी पात्र लोगों को गारंटी के साथ मिले, इसी उद्देश्य के साथ यह रथ यात्रा लोगों तक अपनी पहुंच बना रही है। विधायक दीपक मंगला ने इसके पश्चात गांव अजीजाबाद में

आयोजित कार्यक्रम में भी मुख्य अतिथि के तौर पर पहुंचकर लोगों को अपना उद्बोधन दिया।

विधायक ने कहा कि यह संकल्प यात्रा प्रदेश के प्रत्येक गांव के अंदर जा रही है। केंद्र व प्रदेश सरकार की समस्त जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचे, इसी लक्ष्य को निर्धारित करके देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह विकसित भारत संकल्प यात्रा की शुरूआत देशभर में की है। अगर किसी कारणवश कोई पात्र व्यक्ति योजनाओं का लाभ उठाने से वंचित रह गया था, तो वह इस रथ यात्रा के माध्यम से योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहर लाल सहित समस्त प्रशासन भी इस यात्रा को सफल बनाने में निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि रथ यात्रा के साथ विभिन्न विभागों द्वारा पात्र व्यक्ति को योजनाओं की जानकारी व लाभ प्रदान करने के लिए हेल्प डेस्क स्थापित किए गए हैं। इन कार्यक्रमों में लोग अपने परिवार पहचान पत्र, आयुष्मान कार्ड, राशन कार्ड, वोट कार्ड, पेंशन, स्वास्थ्य जांच आदि कार्य करवाने के लिए आकर इनका पूरा लाभ उठा रहे हैं। विधायक दीपक मंगला ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संकल्प है कि भारत टीबी मुक्त हो, इसके लिए वे लगातार कार्य कर रहे हैं। उन्होंने अपने संबोधन के माध्यम से सभी लोगों को सरकारी की योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने गांवों के शिक्षित युवाओं से भी आह्वान करते हुए कहा कि वे अपने-अपने गांवों के ऐसे पात्र लोगों को लाभान्वित करवाने में अपना सहयोग करें, जो पूर्व में योजनाओं का लाभ उठाने से वंचित रह गए थे।

संक्षिप्त समाचार

एमवीएन के छात्र करेंगे सर्वोदय अस्पताल में अनुसंधान

फरीदाबाद। एमवीएन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज ने सर्वोदय अस्पताल फरीदाबाद के साथ अनुबंध किया। विश्वद्यालय के कुलपति डॉक्टर अरुण गर्ग ने बताया कि इस अनुबंध का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ साथ व्यवहारिक ज्ञान भी देना है, ताकि भविष्य में विधार्थी अच्छी जगह रोजगार प्राप्त करके समाज सेवा में योगदान दे सकें। अस्पताल के प्रबंधक संचालक डॉक्टर राकेश गुप्ता ने कहा कि सभी विश्वविद्यालयों को इस प्रकार के अनुबंध अस्पतालों के साथ करने चाहिएं, ताकि विधार्थी प्रेक्टिकल ज्ञान भी अर्जित कर सकें। विश्वविद्यालय के डायरेक्टर ऑफ कॉर्पोरेट अफेयर्स नरेंद्र विवेक आहूजा ने कहा कि यह अनुबंध विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को ट्रेनिंग, प्लेसमेंट और अनुसंधान को लेकर किया गया है। विश्यविद्यालय के प्रबंधक संचालक कांता शर्मा, कुलाधिपति वरुण शर्मा ने इसकी सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय स्वर्गीय गोपाल शर्मा के सपने को पूरा करने के लिए कार्यरत है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी इसी प्रकार के और अनुबंध विश्वविद्यालय करेगा, जोकि विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद होगा। इस अवसर पर कुलपति डॉक्टर अरुण गर्ग, कुलसचिव डॉक्टर राजीव रतन, डायरेक्टर ऑफ कॉरपोरेट अफेयर्स नरेंद्र विवेक आहूजा और डीन डॉक्टर तरुण विरमानी विश्वविद्यालय की ओर से और डॉक्टर राकेश गुप्ता, डॉक्टर अंशु गुप्ता, डॉक्टर आशीष अग्रवाल, विजय गेरा सर्वोदय अस्पताल की और से उपस्थित रहे।

विमुक्त घुमंतु एवं अर्ध घुमंतु वर्ग के 128 लोगों ने उठाया लाभ

पलवल। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता तथा अनुसूचित जातियां एवं पिछडे वर्ग कल्याण विभाग और अंत्योदय विभाग व कल्याण विभाग द्वारा जिला के विमुक्त घुमंतु वर्ग व सभी वर्गों के नागरिकों को सरकार की ओर से क्रियान्वित की जा रही योजना, परियोजनाओं का लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से सुबह 10 बजे से दोपहर बाद चार बजे तक मेलों का आयोजन किया जा रहा है। पहले दिन विमुक्त घुमंतु एवं अर्ध घुमंतु वर्ग तथा दूसरे दिन उसी स्थान पर सभी वर्गों के लोगों के लिए इन मेलों का आयोजन किया जा रहा है। संबंधित वर्गों के लोग अपने निर्धारित दिवस के दौरान इन मेलों में आकर लाभान्वित भी हो रहे हैं। इसी क्रम में पलवल में पुराना जीटी रोड स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय नंबर-04 में विमुक्त एवं अर्ध घुमंतु वर्ग के लोगों के कल्याणा के लिए मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में लगभग 128 लोगों ने लाभ उठाया। इस मेले में जन्म प्रमाण-पत्र के दो, फैमिली आईडी संबंधी 64, आधार कार्ड के एक, पेंशन के 23 आवेदनों पर कार्य किया गया। इसके अलावा मेले में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने करीब 38 लोगों के स्वास्थ्य की जांच कर निशुल्क दवा वितरित की। एडीसी साहिल गुप्ता ने सभी वर्गों के आमजन मानस से आयोजित होने वाले मेले में निर्धारित तिथि व समय पर पहुंचकर लाभ उठाने का आह्वान किया है।

रोजगार कार्यालय में 15 दिसंबर को लगेगा मेला

पलवल। रोजगार कार्यालय पलवल में 15 दिसंबर को सुबह 11 बजे एक प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया जाएगा। इस प्लेसमेंट ड्राइव में विक्टोरिया ऑटो पृथला, रोस्टफ्रे स्टील पृथला, ट्रीनिटी टच प्राइवेट लिमिटेड, टोकाई रबर प्राइवेट लिमिटेड बघौला तथा बॉयो-मेड हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड आदि विभिन्न कंपनियां भाग लेंगी। जिला रोजगार अधिकारी शक्तिपाल ने बताया कि इस प्लेसमेंट ड्राइव में 10वीं, 12वीं, आईटीआई व डिप्लोमा होल्डर अपने रिज्यूम व फोटोग्राफ की दो-दो प्रतियां लेकर सुबह 11 बजे जिला रोजगार कार्यालय पलवल में उपस्थित हों। उन्होंने प्रार्थियों से आह्वान किया है कि वे निर्धारित तिथि व समय पर अपने सभी जरूरी दस्तावेजों को अपने साथ लेकर आएं और प्लेसमेंट ड्राइव का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

चालान न भरने पर दो कुत्ते के मालिकों पर होगी कानूनी कार्रवाई

फरीदाबाद। पालतू कुत्तों का रजिस्ट्रेशन न करवाने पर कटे चालान को न भरना दो कुत्ता मालिकों को भारी पड़ सकता है। इसके लिए नगर-निगम की ओर से इन कुत्ता मालिकों पर कानूनी कार्रवाई करने की तैयारी की जा रही है। आरोपी कुत्ता मालिकों को कई बार रिमाइंडर भी भेजा जा चुका है, लेकिन अभी तक चालान की राशि नहीं अदा की गई है। नगर निगम की ओर से पालतू कुत्तों का रजिस्ट्रेशन के लिए अंतिम तिथि 15 सितंबर घोषित की गई थी। निर्धारित तिथि के बाद निगम की ओर से कार्रवाई करते हुए ऐसे दो कुत्ता मालिकों का 15-15 हजार रुपये का चालान किया गया था। जिन्होंने कुत्तों का रजिस्ट्रेशन नहीं करवाया था। काफी समय बीत जाने के बाद भी चालान न भरने की स्थिति में अब इन मालिकों को कोर्ट का नोटिस भेजा जा रहा है। इस संबंध में नोडल अधिकारी बीएस तेवतिया का कहना है कि चालान न भरने की स्थिति में मालिकों को रिमाइंडर भी भेजा गया है, लेकिन अब तक चालान न भरने के कारण उन्हें कोर्ट की तरफ से नोटिस भेजा जाएगा।

चार फरवरी को रोहतक में करेंगे राज्य स्तरीय रैली

पलवल। कर्मचारियों के लंबित मुद्दों व सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ सर्व कर्मचारी संघ हरियाणा 15 व 18 दिसंबर को विधानसभा सत्र जिला मुख्यालय पर चलाया जायेगा और चार फरवरी को रोहतक में राज्य स्तरीय रैली करेगा। इसकी तैयारी को लेकर ब्राह्मण धर्मशाला में जिला स्तरीय बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता जिला प्रधान राजेश शर्मा ने की व संचालन जिला सचिव योगेश शर्मा ने किया। मुख्य रूप से सर्व कर्मचारी संघ राज्य के वरिष्ठ उपप्रधान नरेश शास्त्री मौजूद रहे। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए संघ के राज्य वरिष्ठ उपप्रधान नरेश कुमार शास्त्री ने कहा कि जिला मुख्यालय पर मेज कुर्सी लगाकर कर्मचारी असेंबली आयोजित की जाएगी, जो 10 बजे से तीन बजे तक चलेगी। जिसमें 15 दिसंबर को कच्चे कर्मचारियों को पक्का करने, विभिन्न विभागों, बोर्ड स्कूल, विश्वविद्यालय निगमों के निजीकरण पर रोक लगाने, दो लाख रिक्त पदों पर बेरोजगार युवाओं को रोजगार देने, सार्वजनिक क्षेत्र के विभागों का विस्तार कर 10 लाख रोजगार देने, पुरानी पेंशन बहाल करने, आरक्षित केटेगरी का बैगलॉग पूरा करने का प्रस्ताव कर्मचारी असेंबली में बहस करके पारित किया जाएगा। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यदि सरकार ने हमारी मांगें नहीं मानीं तो आगे आरपार की लड़ाई होगी, जिसकी जिम्मेदारी सरकार की होगी।

पश्चिम एशिया टकराव

युद्धविराम का समर्थन

पश्चिम एशिया टकराव में भारत ने गाजा में संयुक्त राष्ट्रसंघ प्रस्ताव का पक्ष लेते हुए युद्धविराम का समर्थन किया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा-यूएनजीए में भारत और इज़राइल जैसे 'मित्रों' के साथ खड़े होने के बावजूद भारत ने उस प्रस्ताव के पक्ष में मत दिया है जिसमें गाजा में तत्काल युद्धविराम तथा सभी बंधकों की बिना शर्त रिहाई की मांग की गई है। अंतरराष्ट्रीय टकरावों में अपने दृष्टिकोण पर परंपरागत रूप से सावधानी बरतने वाले भारत ने आपातकालीन सत्र में प्रस्ताव के पक्ष में अन्य 152 देशों के साथ वोट दिया। हालांकि, अमेरिका, इज़राइल और आस्ट्रेलिया प्रस्ताव के खिलाफ वोट देने वाले 10 देशों में शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ में इज़राइल के राजदूत गिलाड एर्डेन ने दावा किया कि युद्धविराम से गाजा के लोगों का नहीं, बल्कि केवल 'आतंकवादियों' का फायदा होगा जो मानवीय सहायता की अपने लिए चोरी कर लेते हैं। अर्जेन्टाइना, यूक्रेन व जर्मनी समेत अन्य 23 देशों ने मतदान में भाग नहीं लिया। इस घटना से भारत का स्पष्ट दृष्टिकोण सामने आया है। उसने अमेरिका का रास्ता नहीं अपनाया और इज़राइल का भी अंध-समर्थन नहीं किया जिसके साथ उसके परंपरागत रूप से मजबूत सैनिक, तकनीकी और रणनीतिक संबंध हैं। भारत के फिलिस्तीनी लोगों के साथ भी ऐतिहासिक संबंध हैं और न्याय व आत्मनिर्णय के अधिकार के सिद्धान्तों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता है। पश्चिम एशिया के साथ भारत

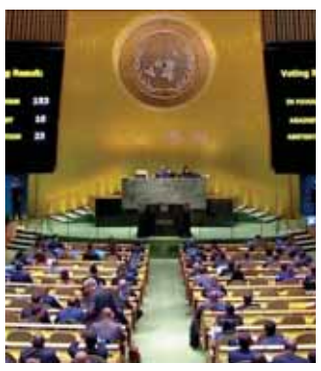

के संबंधों को देखते हुए उसने एक संतुलित व तटस्थ दृष्टिकोण अपनाया है। कुछ समय पहले उसने ऐसे ही एक प्रस्ताव पर मतदान में भाग नहीं लिया था जिसे इज़राइल के पक्ष में झुकाव की तरह देखा जा रहा था। गाजा में युद्ध समाप्त करने के पक्ष में देश के हालिया राजनयिक मत से स्पष्ट संकेत मिलता है कि भारत अपनी शक्तियों के प्रयोग में संप्रभु अधिकार से पीछे नहीं हटेगा। भारत के दृष्टिकोण में हालिया परिवर्तन उल्लेखनीय है क्योंकि इससे स्थिति का सटीक मूल्यांकन दिखता है।

भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव के समर्थन से पश्चिम एशिया में बढ़ती हिंसा तथा मानवीय संकट के प्रति उसका सरोकार स्पष्ट होता है। इस टकराव के क्षेत्रीय स्थायित्व के लिए दूरगामी परिणाम होंगे। स्पष्ट एवं असंदिग्ध दृष्टिकोण अपना कर भारत ने एक ऐसे जिम्मेदार वैश्विक पक्ष के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की है जो अंतरराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा के मामलों में हस्तक्षेप करना चाहता है। इस कदम से क्षेत्र में भारत की स्थिति मजबूत होगी तथा अरब दुनिया के साथ संबंध ज्यादा बेहतर होंगे। एक अन्य स्तर पर दृष्टिकोण में यह परिवर्तन शायद भारत के घरेलू आयामों के कारण हो जिसमें बड़ी संख्या में जनता की राय तथा मुस्लिम जनसंख्या की भावनायें शामिल हैं। तीन विधानसभा चुनावों में विजय के बाद अब भाजपा का विश्वास और बढ़ गया है और वह ज्यादा स्वतंत्रता के साथ राजनयिक निर्णय ले सकती है। हालांकि, अपने आप में इस प्रस्ताव का ज्यादा अर्थ नहीं है क्योंकि अमेरिका इसके साथ नहीं है और इज़राइल कट्टरवादी दृष्टिकोण अपना रहा है, पर इससे भारत एक मजबूत देश के रूप में उभरा है जो अपनी बात रखने से हिचकता नहीं है। यूएनजीए द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव का शीर्षक 'नागरिकों की रक्षा तथा विधिक व मानवीय दायित्वों का पालन' है। इसमें गाजा में तत्काल मानवीय युद्धविराम करने तथा बिना शर्त सभी बंधक रिहा करने की बात कही गई है। हालांकि, इसमें हमास का नाम नहीं लिया गया है। भारत निरंतर अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' पर जोर देता रहा है और पश्चिम एशिया टकराव में भी वह इसी सिद्धान्त से निर्देशित है।

भारत में लोकतंत्र की विजय

अपनी कमियों के बावजूद लोकतंत्र बना हुआ है जिसके चलते देश में 17 बार सत्ता का हस्तांतरण हुआ है। आखिरकार मतदाता तय करेंगे कि 2024 में अगली सरकार कौन बनाएगा।

कल्याणी शंकर
(लेखिका, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

भारत में लोकतंत्र की विजय इस तथ्य से प्रमाणित है कि देश में 17 बार सत्ता का हस्तांतरण हो चुका है जिसके चलते अनेक पार्टियों को अवसर मिला है। हालिया पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव पूरे होने के बाद सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी-भाजपा तथा विपक्षी दल 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव की तैयारियां कर रहे हैं। हिंदी पट्टी में अपने मजबूत गढ़ों में कब्जा जमाने के बाद भाजपा को विश्वास है कि उसकी नेतृत्वकारी स्थिति बनी हुई है और विपक्ष उसके समक्ष प्रभावी चुनौती पेश करने में विफल रहा है। हालिया विधानसभा चुनावों में भाजपा को राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में विजय मिली है। पिछले अनेक चुनावों से स्पष्ट है कि भाजपा भारत की बड़ी राजनीतिक शक्ति बन गई है। भाजपा ने अपना लगातार विस्तार किया है और वर्तमान समय में देश के 18 राज्यों में उसकी सरकारें हैं। भाजपा की सफलता का कारण उसका दृढ़ नेतृत्व, सुसंगठित संगठनात्मक ढांचा, व्यापक संसाधन तथा जनता के साथ उसकी प्रभावी संप्रेषण क्षमता है। इसके साथ ही पिछले वर्षों में भारतीय राजनीति में व्यापक परिवर्तन आया है और उसका दक्षिणपंथी दिशा में झुकाव बढ़ा है। देश में समय-समय पर हुए अनेक जनमत सर्वेक्षणों से स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता रेटिंग और अन्य विपक्षी नेताओं की लोकप्रियता रेटिंग में बहुत अंतर है। पिछले वर्षों में यह खाई कम होने के बजाय लगातार बढ़ती जा रही है। भाजपा का नया नारा 'नई गतिशीलता, नए वादे' या दूसरे शब्दों में 'मोदी की गारंटी' है।

पिछले दस साल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रभावी रूप से भाजपा की प्रमुख अवधारणा-हिंदू राष्ट्रवाद को प्रभावी रूप से प्रोत्साहित किया है। पार्टी ने जन-कल्याण की दिशा में अनेक योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया है जिसमें नकदी हस्तांतरण, मुफ्त राशन तथा सस्ते गैस सिलिंडर शामिल हैं। इनको प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना-पीएमजीकेवाई व उज्जवला योजना का नाम दिया गया है। इन योजनाओं से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बड़ी संख्या में मतदाताओं को भाजपा से जोड़ा है। इसके साथ ही अगले साल जनवरी में अयोध्या में भव्य राम मंदिर का उद्घाटन होने जा रहा है। इससे हिंदू राष्ट्रवाद का उल्लेखनीय प्रसार होगा। हालांकि, सरकार को बेरोजगारी, मुद्रास्फीति और मूल्यवृद्धि का सामना करना पड़ रहा है, पर सरकार की अनेक जन-कल्याणकारी योजनायें जनता में बहुत लोकप्रिय हैं। इन सबके बावजूद यह देखना होगा कि जनता मोदी को 2024 में तीसरा कार्यकाल देती है या नहीं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता निश्चित रूप से बहुत बढ़ गई है, पर भारतीय जनता पार्टी-भाजपा को दक्षिण भारत के राज्यों में विजय प्राप्त करने के लिए केवल मोदी के करिश्मे पर निर्भर रहने के बजाय अन्य नई रणनीतियों पर गौर करना होगा।

भाजपा को पहले पार्टी के भीतर आंतरिक मतभेदों पर गौर करना होगा, भले ही ये बहुत स्पष्ट रूप से सामने न आ रहे हों। दूसरा, पार्टी को ऐसा नया विमर्श तैयार करना होगा जो भारत के दक्षिणी राज्यों में मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित कर सके। 'हिंदुत्व' तथा 'सनातन धर्म' की विचारधारायें इन राज्यों में जनता को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पा रही हैं। भारत के दक्षिणी राज्यों में जनता का बड़ा हिस्सा अब भी भाजपा को 'उत्तर भारत' की पार्टी के रूप में देखता है।

इस तथ्य को अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए कि अन्य राजनीतिक पार्टियों के उलट द्रविण पार्टियों ने दशकों से सामाजिक न्याय को बहुत महत्व दिया है। इसके साथ ही दक्षिण भारत में प्रशासनिक माडल अनेक मामलों में उत्तर भारत के अनेक प्रदेशों की तुलना में बेहतर रहे हैं। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन इसी 'द्रविण प्रशासनिक माडल' की बात कर रहे हैं। लोकसभा की 543 सीटों में से दक्षिण भारत से 131 सीटें हैं। वर्तमान स्थिति पर गौर करें तो स्पष्ट होगा कि केरल में कम्युनिस्ट समर्थकों की संख्या बहुत बड़ी है तथा तमिलनाडु की ज्यादातर जनता विचार से 'नास्तिक' है। हालांकि, कर्नाटक में भाजपा का थोड़ा जनाधार है। इसके साथ ही आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में क्षेत्रीय दलों का वर्चस्व है जिसके कारण इन राज्यों में भाजपा के प्रसार और उसके समर्थन आधार की सीमायें स्पष्ट होती हैं।

भारत की अनेक विपक्षी पार्टियों ने पिछले कई महीनों से 'इंडियन नेशनल डेवलमेंटल इन्क्लूसिव एलायंस'-इंडिया गठबंधन बनाने का प्रयास किया है, पर इस गठबंधन को हालिया विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के खराब प्रदर्शन से निराशा का सामना करना पड़ रहा है। यदि देश की सबसे पुरानी पार्टी-कांग्रेस उत्तर भारत के कम से कम दो राज्यों में विजय प्राप्त करने में सफल होती तो राहुल गांधी को अपना व्यक्तित्व मजबूत करने में सफलता मिल सकती थी। इससे 'इंडिया' गठबंधन तथा इस गठबंधन में कांग्रेस की स्थिति मजबूत होती। वर्तमान स्थिति में कांग्रेस को अगले विधानसभा चुनावों व लोकसभा चुनाव के पहले नई चुनावी रणनीति बनानी होगी।

विपक्षी दलों को अगले चार महीनों में मोदी को चुनौती देने के लिए गैर-भाजपा वोटों का विभाजन रोकने के लिए अवश्य एकजुट हो जाना चाहिए। इस दिशा में पहले कदम के रूप में उनको उन सीटों पर एक विपक्षी उम्मीदवार खड़ा करने पर सहमति बनानी होगी जहां भाजपा से मुख्य मुकाबला है। कांग्रेस पार्टी को उन निर्वाचन क्षेत्रों में विजय पर ध्यान देना होगा जहां उसकी सफलता की संभावनायें अधिक हैं। व्यक्तिगत लाभ और महत्वाकांक्षा की तुलना में सत्तारूढ़ दल को हराना मुख्य प्राथमिकता होनी चाहिए। कांग्रेस को अपना नेतृत्व अद्यतन बनाते हुए पुराने व्यवहार छोड़ने होंगे।

तृणमूल कांग्रेस-टीएमसी ने कांग्रेस के खराब प्रदर्शन की आलोचना करते हुए कहा है कि भाजपा की विजय कांग्रेस की विफलता का नतीजा है। कांग्रेस को आंतरिक टकरावों, कमजोर गठबंधनों तथा वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों को समझने में कमी के कारण चुनावों में पराजय का सामना करना पड़ा है। अपनी स्थिति सुधारने के लिए कांग्रेस को सक्षम व्यक्तियों को भर्ती कर उनको उपयुक्त भूमिकायें देनी तथा समर्थकों को प्रेरित करना चाहिए। राहुल गांधी ने कांग्रेस पार्टी को पुनर्जीवित करने के लिए 4,000 किलोमीटर भारत जोड़ो यात्रा का नेतृत्व किया। इसने पार्टी को तेलंगाना में विजय प्राप्त करने तथा गुजरात में बेहतर प्रदर्शन करने में सहायता मिली। लेकिन यात्रा की गतिशीलता मुख्यत: दक्षिण भारत तक सीमित थी और इसका उत्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। विपक्ष को भाजपा से मुकाबला करने के लिए ज्यादा पैसे की आवश्यकता है। भाजपा के पास अपने नेताओं को जनता की नजर में बनाए रखने के लिए काफी पैसा है और उसे 2022-23 में 719 करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं। कांग्रेस पार्टी को प्राप्त धनराशि पिछले साल 95.4 करोड़ रुपये से घट कर 79 करोड़ रह गई। भाजपा ने पिछले पांच साल में 10,122.03 करोड़ रुपये प्राप्त किए, जबकि कांग्रेस को 1,547.43 करोड़ रुपये मिले। कांग्रेस को कार्पोरेट योगदान घटा है, जबकि यह भाजपा को बढ़ा है। हालिया रिपोर्टों के अनुसार, कांग्रेस अपने चुनाव अभियानों की फंडिंग के लिए 'क्राउड फंडिंग' पर विचार कर रही है। उसे भाजपा की मशीनरी का मुकाबला करने के लिए बड़ी मात्रा में पैसा चाहिए।

पिछले 20 साल में लोकसभा चुनाव का खर्च 6 गुना बढ़ कर 9,000 से 55,000 करोड़ रुपये हो गया है। इसमें एक तिहाई खर्च अभियान और प्रचार के लिए आंबंटित होता है। इसके उलट, दूसरा सबसे बड़ा खर्च मतदाताओं को सीधे किया जाने वाला भुगतान है। इसके साथ ही राजनीतिक पार्टियां अब मतदाताओं को नकदी और वस्तुयें उपहार में देती हैं। सरल भाषा में कहा जाए तो भाजपा को दक्षिण भारत में विजय की रणनीति विकसित करनी होगी, जबकि कांग्रेस को उत्तर पर ध्यान देना होगा। जहां तक क्षेत्रीय दलों का सवाल है, उनकी प्राथमिकता अपना प्रतिबद्ध जनाधार बनाए रखना है। केवल 'खैरातों' की घोषणायें मतदाताओं के समर्थन के लिए काफी नहीं हैं।

उनका विश्वास और समर्थन प्राप्त करने के लिए और बहुत कुछ जरूरी है। भारत की लोकतांत्रिक यात्रा एक महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व उपलब्धि है। अपनी कमियों के बावजूद लोकतंत्र बचा हुआ है और 17 बार सत्ता हस्तांतरण हो चुका है। आखिरकार भारतवर्ष के एक अरब से अधिक मतदाताओं को अपना भविष्य तय करना है।

परिवर्तनकारी है सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धि

जनरेटिव एआई अर्थव्यवस्था के कामकाज और कारोबार चलाने के तरीके को बदल देगी। यह कई क्षेत्रों के लिए गेम चेंजर साबित होगी।

कृष्ण कुमार
(लेखक, सिंपली लर्न के संस्थापक हैं)

अभूतपूर्व तकनीकी प्रगति से प्रेरित दुनिया में, एक अभूतपूर्व शक्ति उभरती है जो नवाचार के मूल ढांचे को नया आकार देने का वादा करती है- जेनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस। बनाने, रचना करने और कल्पना करने की अपनी विस्मयकारी क्षमता के साथ, जेनरेटिव एआई वैज्ञानिक अन्वेषण में सबसे आगे बढ़ गया है और शोधकर्ताओं, उद्यमियों और कलाकारों की कल्पनाओं पर कब्जा कर रहा है। यथार्थवादी छवियां उत्पन्न करने और संगीत को संश्लेषित करने से लेकर दवा की खोज में सहायता करने और ग्राहक अनुभवों में क्रांति लाने तक, इस अत्याधुनिक तकनीक में उद्योगों की एक विशाल श्रृंखला में क्रांति लाने, सीमाओं को पार करने और जो हमने असंभव सोचा था उसकी सीमाओं को पार करने की क्षमता है।

जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव कल्पना और रचनात्मक अभिव्यक्ति की सीमाओं को आगे बढ़ाते हुए कला, डिजाइन, मनोरंजन और स्वास्थ्य सेवा सहित विभिन्न उद्योगों में रोमांचक संभावनाएं पैदा कर रही है।

जेनरेटिव एआई द्वारा संचालित हाइपर-वैयक्तिकरण, उपयोगकर्ताओं को उनकी अद्वितीय प्राथमिकताओं, व्यवहार और विशेषताओं के आधार पर अत्यधिक अनुरूप और व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करने की क्षमता को संदर्भित करता है। जेनरेटिव एआई एल्गोरिदम का लाभ उठाकर, व्यवसाय वैयक्तिकृत सामग्री, सिफारिशें और उत्पाद पेशकश उत्पन्न कर सकते हैं जो प्रत्येक उपयोगकर्ता के साथ गहरे स्तर पर मेल खाती हैं।

कोड और ऐप बिल्डर्स सॉफ्टवेयर को अधिक कुशलता से बनाने, मैन्युअल कोडिंग की आवश्यकता को कम करने और एप्लिकेशन विकास प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने में डेवलपर्स की

सहायता के लिए जेनरेटिव एआई तकनीकों का लाभ उठाते हैं। इस प्रवृत्ति से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होने वाला एक उद्योग सॉफ्टवेयर विकास है। ये उपकरण डेवलपर्स द्वारा प्रदान किए गए उच्च-स्तरीय विनिर्देशों के आधार पर स्वचालित रूप से कोड स्निपेट, टेम्प्लेट या यहां तक कि पूर्ण एप्लिकेशन उत्पन्न कर सकते हैं। यह सॉफ्टवेयर विकास को भी लोकतांत्रिक बनाता है, जिससे यह सीमित कोडिंग अनुभव वाले व्यक्तियों के लिए अधिक सुलभ हो जाता है। जेनेरिक एआई द्वारा संचालित उन्नत यथार्थवाद और निष्ठा विभिन्न डोमेन में अत्यधिक यथार्थवादी और विस्तृत आउटपुट बनाने के लिए जेनेरिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल का उपयोग करने को संदर्भित करती है। लद्दढ्ढ एल्गोरिदम उच्च-गुणवत्ता वाली छवियां, वीडियो, ऑडियो और टेक्स्ट उत्पन्न कर सकता है जो वास्तविक दुनिया के डेटा से काफी मिलते-जुलते हैं। इस प्रवृत्ति ने कई उद्योगों और डोमेन को गहराई से प्रभावित किया, जिससे हम डिजिटल सामग्री बनाने, डिजाइन करने और उसके साथ बातचीत करने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाए।

मनोरंजन उद्योग में, यह अधिक मनोरम फिल्में, गेम और वीआर/एआर अनुभव बनाने में सक्षम बनाता है। यह विसर्जन को बढ़ाता है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक आकर्षक कहानी कहने और उपयोगकर्ता अनुभव में सुधार होता है।

इंटरएक्टिव और सह-रचनात्मक सिस्टम उपयोगकर्ताओं को जेनरेटिव प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने और सहयोग करने की अनुमति देते हैं। ये सिस्टम मनुष्यों और एआई के बीच वास्तविक समय की बातचीत को सक्षम करते हैं, एक सह-रचनात्मक संबंध को बढ़ावा देते हैं जहां दोनों संस्थाएं सामग्री, विचार या डिजाइन तैयार करने में योगदान करती हैं। इंटरैक्टिव और सह-रचनात्मक प्रणालियों से सबसे अधिक प्रभावित एक उद्योग डिजाइन और रचनात्मकता का क्षेत्र है। एडोब सेंसेई जैसे उपकरण, एआई-संचालित रचनात्मक उपकरणों का एक सूट, डिजाइनरों को इंटरैक्टिव सुविधाएँ प्रदान करते हैं। एक और उदाहरण संगीत उद्योग में पाया जा सकता है।

क्रॉस-डोमेन एप्लिकेशन का उपयोग ऐसी सामग्री या समाधान उत्पन्न करने के लिए किया जाता है जो पारंपरिक सीमाओं को पार करती है और कई उद्योगों या डोमेन पर लागू होती है। जेनरेटिव एआई एल्गोरिदम में एक डोमेन से पैटर्न और विशेषताओं को सीखने और उन्हें दूसरे पर लागू करने की क्षमता होती है, जिससे नवीन समाधान बनाने और विविध क्षेत्रों के बीच सहयोग को बढ़ावा मिलता है। मेडिकल इमेजिंग डेटा पर प्रशिक्षित जेनरेटिव मॉडल सिंथेटिक छवियां उत्पन्न कर सकते हैं जो सटीक रोगी स्कैन से मिलती जुलती हैं।

आप की बात

भाजपा के प्रयास

तीन राज्यों में बड़ी जीत के साथ भाजपा ने नए चेहरों को मुख्यमंत्री बनाने के साथ दो-दो उप मुख्यमंत्री भी बना कर सभी घटकों को सत्ता में पर्याप्त भागीदारी देने का प्रयास किया गया है। आगे की रणनीति मंत्रिमंडल गठन के बाद सामने आ जाएगी। बीजेपी विशुद्ध रूप से 2024 के आम चुनाव के मद्देनजर ही अपनी रणनीति तय कर रही है। इसमें वह कास्ट सेंसस के साथ-साथ अन्य तथ्यों पर भी पर्याप्त ध्यान दे रही है। सरकारों के गठन में आरएसएस की राय को पर्याप्त महत्व दिया गया है। यह जरूरी भी है क्योंकि इसके अधिकांश कार्यकर्ता आरएसएस के स्वयंसेवक हैं। वे बिना किसी सुख सुविधा की अपेक्षा अपने लक्ष्य पूरे करने में सदैव तत्पर रहते हैं। हर राज्य में मुख्यमंत्री पद के कई दावेदार थे जिन्हें दरकिनार कर पिछली पंक्ति के कार्यकर्ताओं को सीधे मुख्यमंत्री बनाया गया है। यह एक क्रांतिकारी कदम और केंद्रीय नेतृत्व की शक्ति का प्रतीक भी है। यह इसलिए भी जरूरी था कि लोकसभा चुनाव में टिकट वितरण को लेकर इन राज्यों के छत्रप केंद्र पर दबाव नहीं डाल सके। वैसे भी विधानसभा चुनाव मोदी के चेहरे पर लड़े गए थे। यह एक प्रकार से भाजपा में आलाकमान संस्कृति का विकास भी है जिसमें आरएसएस भी शामिल है।

- **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

पाकिस्तान में आतंकी हमला

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के दरबान इलाके में हाल ही में आत्मघाती हमला हुआ जिसमें सुरक्षाबलों के 23 जवानों की मौके पर ही मौत हो गई। अफ़ग़ानिस्तान की सीमा से सटे पुलिस स्टेशन में जब सभी जवान सो रहे थे तभी आतंकवादियों ने विस्फोटकों से भरी गाड़ी दीवार से टकरा दी जिससे इमारत ढह गई तथा जवानों की जान भी चली गई। सुरक्षा बल के जवानों पर आतंकी हमला पहली बार नहीं हुआ है। इससे पहले भी जवानों पर अनेक हमले हो चुके हैं। लेकिन बड़ा सवाल ये है कि पाकिस्तान को आतंकी हमलों का सामना क्यों करना पड़ रहा है, जबकि वह स्वयं सारी दुनिया में आतंकी गढ़ के रूप में जाना जाता है। पाकिस्तान आज उसी भस्मासुर का शिकार है जिसे उसने स्वयं जन्म दिया और लगातार पाला-पोसा है। भारत से एक दिन पहले आजाद होने वाला पाकिस्तान आज सेना के परोक्ष या प्रत्यक्ष शासन का ऐसा उदाहरण बन गया है जहां सेना, कट्टरपंथी इस्लामवाद व आतंकियों का खतरनाक गठजोड़ काम कर रहा है। विडंबना है कि जब देश की जनता एक-एक रोटी के लिए संघर्ष कर रही है, तब भी यह गठजोड़ मजबूत बना हुआ है।

- **निधि जैन,** गाजियाबाद

जलवायु सम्मेलन

आखिरकार जलवायु सम्मेलन या कॉप-28 संयुक्त अरब अमीरात में संपन्न हो गया। दुनिया के तेल और गैस स्वामित्व वाले देशों जैसे रूस, ईरान, इराक और सऊदी अरब ने व्यापक दबाव के कारण आयोजक जीवाश्म ईंधन को पूरी तरह से समाप्त करने के बजाय उससे दूरी बनाने की कोशिश पर सहमत हुए। पिछले 27 जलवायु सम्मेलनों में भी कई वायदे किये गए थे, लेकिन तापमान को 1.5 डिग्री वृद्धि पर रोक पाना संभव नहीं लगता है। हर देश की अपनी समस्या है और वे बहुत जल्दी जीवाश्म ईंधन का प्रयोग पूरी तरह समाप्त करने की स्थिति में नहीं हैं।। सभी अपने को देख कर चल रहे हैं। सभी यही कह रहे हैं कि कार्बन उत्सर्जन घटाने में दूसरे देशों को ज्यादा भूमिका होनी चाहिए। इसी कारण आज सबको जलवायु परिवर्तन का खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। सभी देश हरित ऊर्जा को सौ फीसदी करने में खुद को अक्षम बता रहे हैं। लेकिन वह दिन दूर नहीं जब लगातार मौसम की बदहाली के कारण सभी देशों को मजबूरी में कठोरतम कदम उठाने पड़ेंगे क्योंकि ऐसा न होने पर पूरी मानवजाति के विनाश का खतरा पैदा हो जाएगा।

- **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

एआई की संभावनायें

कृत्रिम बुद्धिमत्ता-एआई का लगभग हर क्षेत्र उपयोग बढ़ता जा रहा है। यूरोपीय संघ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग पूर्ण रूप से विनियमित करने के उद्देश्य से व्यापक कानून बनाने वाला पहला राष्ट्र-समूह बन गया है। एआई के दुष्प्रभाव रोकना समय की मांग है । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एआई पर वैश्विक साझेदारी शिखर सम्मेलन में डीपफेक, साइबर सुरक्षा व डाटा चोरी की घटनाओं को दुनिया के लिए चुनौती माना है। उन्होंने जोर देकर कहा कि एआई से विकास और विनाश दोनों संभव है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्पष्ट संकेत दिया कि भारत एआई संबंधी शोध एवं विकास के मामले में किसी से पीछे नहीं रहेगा। मोदी का यह कथन स्वागत योग्य है क्योंकि 140 करोड़ की जनता को एआई के माध्यम से अनेक नौकरशाही व लाल फीताशाही के झंझटों से मुक्ति मिल सकती है व उसका जीवन सुगम हो सकता है। लेकिन एआई के प्रभाव से नौकरियों व रोजगार से वंचित होने वाले लोगों की स्किलिंग व रि-स्किलिंग को भी सरकार को अपनी योजना का हिस्सा बनाना होगा।

- **सुदर्शन सोराड़ी,** नानकमत्ता

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर 30 दिसंबर को उतरेगा पहला विमान

जनवरी में मिलेगी अयोध्या से दिल्ली और अहमदाबाद की हवाई यात्रा की सुविधा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के निर्माण का कार्य भी तेज गति से पूरा किया जा रहा है। जनवरी माह में भव्य श्रीराम मंदिर में होने वाली प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पहले अयोध्या जनपद में हवाई यातायात सेवाएं प्रारंभ हो जाएंगी। वहीं एयरपोर्ट पर 30 दिसंबर को ही उद्घाटन के लिए पहला विमान पहुंच जाएगा।

सीएम योगी व उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और वीके सिंह ने अभी कुछ दिन पहले ही एयरपोर्ट का निरीक्षण किया था। अधिकारियों को 15 दिसबंर तक काम पूरा करने के आदेश दिए गए थे। अधिकारियों ने भी सीएम और केंद्रीय मंत्रियों को आश्वस्त किया था कि काम युद्ध स्तर पर जारी है और तय सीमा पर काम पूरा कर दिया जाएगा। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट का काम आखिरी स्टेज में है। रनवे बनकर तैयार हो गया है। एयरपोर्ट के रनवे की लंबाई 2200 मीटर व 45 मीटर चौड़े रनवे का कार्य शत-प्रतिशत पूर्ण है। दूसरे चरण में रनवे 3700 मीटर का हो जाएगा। टर्मिनल बिल्डिंग का निर्माण कार्य 98 फीसदी पूरा हो गया है जबकि रनवे का कार्य पूरा कर लिया गया है। अब श्रीराम एयरपोर्ट 50 हजार स्क्वायर फ ीट का हो जाएगा। रनवे पर नाइट लैंडिंग के लिए सभी इक्वीपमेंट लगा दिए गए हैं। कोहरे और धुंध में लैंडिंग के लिए कैट वन और रेसा सुविधाओं का काम भी पूरा हो गया है। लैंडिंग लाइट्स भी लगा दी गई है। एटीसी टावर बनाया जा चुका है। फ ायर स्टेशन बनाया जा चुका है। एयरपोर्ट के लिए फायर ब्रिगेड की गाड़ियां भी आ गई हैं। यहां पर एक साथ आठ एयरक्राफ्ट पार्किंग की सुविधा उपलब्ध है। परियोजना में शामिल कुल 821.34 एकड़ भूमि का अधिग्रहण भी पूरा हो चुका है। टर्मिनल बिल्डिंग में कुल 500 यात्रियों के आवागमन की क्षमता है। 200 वाहन पार्किंग 150 कार एव 50 बड़े वाहन की सुविधा भी है। इसके अलावा 1 एप्रेन का निमार्ण कार्य पूरा हो चुका है। परियोजनाओं की कुल स्वीकृति लागत 328 करोड़ रुपए हैं। भविष्य में रनवे को 3750 मी तक बढ़ाए जाने की योजना है। डीएम नीतीश कुमार के मुताबिक एयरपोर्ट के संचालन के लिए लाइसेंसिंग की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। जनवरी में राम भक्तों को अयोध्या से दिल्ली और अयोध्या से अहमदाबाद की हवाई यात्रा की सुविधा मिलने लगेगी। वहीं 30 दिसंबर को एयरपोर्ट पर दिल्ली से उद्घाटन फ्लाइट भी पहुंच जाएगी। एयरपोर्ट पर 6 जनवरी से कमर्शियल बुकिंग शुरू होगी। बता दें कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट बिल्कुल उसी तरह बनाया जा रहा है जिस तरह श्रीराम मंदिर का निर्माण हो रहा है। यहां तक कि उसमें भी वही पत्थर लगाए जा रहे हैं और वैसी ही नक्काशी की जा रही है।

गरीबों को सुविधा संपन्न बनाने से होगी देश को विकसित राष्ट्र बनाने की शुरुआतः एके शर्मा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नगर विकास मंत्री ने विकसित भारत संकल्प यात्रा में लाभार्थियों को योजनाओं से किया लाभान्वित

नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने कहा कि हमारा देश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2047 तक विकसित भारत बन जायेगा। मोदी ने देश को विकसित राष्ट्र बनाने की शुरूआत कर दी है और इसके लिए गरीबों, वंचितों, समाज के सबसे पिछड़े व हाशिए पर रहने वाले लोगों को सुविधा सम्पन्न बनाने की शुरूआत की गई है। इसके लिए उन्हें सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ बिना किसी भेदभाव के प्रदान किया जा रहा है।

एके शर्मा बृहस्पतिवार को लखनऊ के रामलीला मैदान मड़ियांव, जानकीपुरम प्रथम में विकसित भारत संकल्प यात्रा के पहुंचने पर आयोजित कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि मोदी अखण्ड भारत की परिकल्पना को साकार कर रहे हैं और उनके नेतृत्व में देश आत्मनिर्भर बन रहा है। पूर्वांचल के राज्यों में विदेशी घुसपैठ से समस्या थी जिसका समाधान हुआ। कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में भी देश में दवाईयों, वैक्सीन किट, मास्क आदि को बनाकर आत्मनिर्भर बना। यहां तक कि अपने देश की बनी कोरोना की दवा को अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भी ली थी। कभी सैनिकों के साजो सामान, यूनिफ ार्म, जूते, चश्मा, टार्च आदि विदेशों से आता था आज देश में ही बनाया जा रहा है। नगर विकास मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने देश को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में पहुंचाने के लिए बिना किसी भेदभाव, जातिवाद के सबका साथ, सबका विकास को पूरा कर रहे। देश की वैश्विक छवि बदली है देशवासियों का विश्व में सम्मान बढ़ा है। शर्मा ने कहा कि समाजवादियों के समय में प्रदेश में बोया गया बबूल अब कांटे की तरह चुभ रहा है। बबूल का मतलब महंगी दामों में बिजली खरीदने का किया गया अनुबंध, नौकरियों में भाई भतीजावाद व योग्यता की कद्र न करनाए कार्मिकों के भविष्य निधि का घोटाला आदि से मतलब है। मंत्री ने संकल्प यात्रा कार्यक्रम में प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के 10 लाभार्थियों को स्वीकृत प्रमाण पत्र दिए। इसी प्रकार पीएम स्वनिधि योजनातंर्गत 10 लाभार्थियों को 2.60 लाख रुपए ऋण के चेक दिए। साथ ही उज्जवला योजना के तहत 5 लाभार्थियों को गैस सिलेण्डर और चूल्हा भी वितरित किया गया। कार्यक्रम में महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी, महिला मोर्चा मण्डल की अध्यक्ष दिव्यांशी शुक्ला, क्षेत्रीय पार्षद नीशा तिवारी, मण्डल अध्यक्ष राकेश पाण्डेय सहित स्थानीय नागरिक उपस्थित थे।

अयोध्या के शोध संस्थान को दिया जाएगा अंतरराष्ट्रीय स्वरूपः जयवीर

प्रदेश सरकार ने नाम बदलकर अंतरराष्ट्रीय रामायण व वैदिक शोध संस्थान, अयोध्या रखने का लिया निर्णय, शासनादेश जारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राज्य सरकार ने जनपद अयोध्या में संचालित अयोध्या शोध संस्थान को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने के लिए इस संस्थान का नाम तत्काल प्रभाव से अंतरराष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान अयोध्या करने का निर्णय लिया है।

संस्कृति विभाग उप्र द्वारा संचालित अयोध्या शोध संस्थान 18 अगस्त 1986 से कार्य कर रहा है। चूंकि रामायण का मूल आधार सनातन संस्कृति है, जिसकी जड़े वैदिक काल तथा उसके पूर्व से भी है। इसको दृष्टिगत रखते हुए वैदिक विज्ञान एवं साहित्य पर विस्तार से शोध करने की आवश्यकता है। इस परिप्रेक्ष में राज्य सरकार ने इस संस्थान का नाम बदलने का फैसला लिया है। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि इसके नये नामकरण के संबंध में प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा धर्मार्थ कार्य मुकेश मेश्राम की ओर से शासनादेश जारी करा दिया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान परिवर्तित करने का उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व में प्रभु श्रीराम से जुड़े रामकथा साहित्य पर गम्भीर अध्ययन एवं शोध कार्य करना है। सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में पिरोने का एकमात्र तरीका सांस्कृतिक एकता है। इसलिए वैश्विक स्तर पर रामालीला के मंचन के दृष्टिगत सांस्कृतिक आदान प्रदान के क्रम में उन देशों की रामलीला का मंचन अयोध्या में तथा अयोध्या की सांस्कृतिक विरासत का प्रचार.प्रसार सम्पूर्ण विश्व में किया जायेगा। जयवीर सिंह ने बताया कि इस संस्थान के माध्यम से रामकथा एवं रामायण परम्परा से जुड़े विद्वानों एवं महापुरूषों के व्याख्यान व प्रवचन आदि से इस परम्परा को स्थाई बनाया जायेगा। अन्तर्राष्ट्रीय रामलीला मंचन से जुड़े हुए कलाकारों को एक दूसरे की संस्कृति से परिचित होने तथा उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का मंच प्रदान किये जाने का कार्य किया जायेगा। इस प्रकार रामलीला मंचन से जुड़े लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे। उन्होंने कहा कि भारत का वैदिक ज्ञान पूरी तरह वैज्ञानिक है। समस्त वेदों में गणित, शिल्प विज्ञान, वायुयान विज्ञान, शल्य विज्ञान आदि का ज्ञान समाहित है। अत: वैज्ञानिक युग के परिप्रेक्ष में वैदिक ज्ञान को डिजिटल फार्म में होना अत्यन्त आवश्यक है, ताकि जनसामान्य को आसानी से सुलभ कराया जा सके।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि विश्व के विभिन्न भाषाओं में रचित रामचरित पर आधारित ग्रन्थों, पुरातन परम्परा के वैदिक मंत्रों एवं इन पर लिखे गये विभिन्न टीकाओं पर और अधिक अनुसंधान किये जानेए विश्व की अनेक भाषाओं जैसे अग्रेंजी, फ्रेंच, रसियन आदि भाषाओं में उपलब्ध कराने के लिए यह संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। इसके साथ ही शोध कार्यों को जनमानस के लिए अधिक उपयोगी व व्यवहारिक बनाने का प्रयास करेगा।

उन्होंने बताया कि देश एवं विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोधरत छात्रों को संस्थान से जोड़ने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों को संस्थान से सम्बद्ध कराया जायेगा। संस्थान द्वारा शोध साहित्य का कम से कम कीमत पर आमजनता को सुलभ कराया जायेगा।

प्रदेश के हर एक वार्ड को बनाएंगे स्वच्छ और सुंदर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत बनाने के संकल्प को साकार करने के लिए प्रदेश सरकार ने स्वच्छता में एक कदम और आगे बढ़ाते हुए नगरीय निकाय में स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समितियों को पुर्नजीवित कर दिया है। नगरीय निकायों में स्वच्छता, साफ सफाई व विकास कार्यों की देखरेख के लिए स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समितियों को सक्रिय किया गया है। अब नगरों के विकास कार्यों, नाली, खड़ंजा, सड़क निर्माण में इन समितियों की संस्तुतियों पर भी विचार किया जायेगा। प्रदेश की जीडीपी में नगरीय निकयों का 65 से 70 प्रतिशत योगदान है। निकाय प्रदेश की अर्थ व्यवस्था के चुम्बक होते हैं, इनके वैश्विक व्यवस्थापन स्वच्छता व साफ सफाई के लिए गुणवत्तापूर्ण ढंग से कार्य करना होगा। नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने नगरीय निकाय निदेशालय में आयोजित स्वच्छता जन जागृति दिवस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि प्रतिभाग कर स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समिति को फिर से पुर्नजीवित कर नगरों की साफ सफाई, स्वच्छता व विकास कार्यों की निगरानी के लिए सक्रिय किया और कहा कि निकायों के वार्डों में आपकी भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। स्वच्छ भारत अभियान को धरातल पर उतारने के लिए स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समितियों की रचना की गई थी। शर्मा ने कहा कि वित्त मंत्री सुरेश खन्ना वर्ष 2017 में जब नगर विकास मंत्री थे। उन्होंने स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समितियों का गठन किया था। उस समय यह कार्य बहुत दूरगामी सोच को लेकर के किया गया था। सरकार की योजनाओं को सफ ल बनाने के लिए जन सहयोग से ही जन आंदोलन का रूप बनता है। प्रधानमंत्री ने स्वच्छता को जन आंदोलन बनाते हुए इसकी शुरूआत की थी। आज हर आयु वर्ग के लोग स्वच्छता को लेकर जागरूक हैं। उन्होंने कहा कि हमारा प्रदेश स्वच्छ होना चाहिए, हमारा परिवेश स्वच्छ होना चाहिए। हम सभी जब तक अपने क्षेत्रों के एक-एक व्यक्ति और संस्थाओं को इस कार्य से नहीं जोड़ते तब तक हमारा प्रदेश स्वच्छ नहीं बनेगा।

मंत्री ने कहा कि वार्ड में सभासदों की बहुत अहम भूमिका होती है। अगर किसी भी वार्ड में कोई प्रोजेक्ट बनाना है, कोई नाली का प्रस्ताव मंजूर होना है, तो स्वच्छता समिति की सिफारिशें भी आवश्यक है। सिफारिशों के बिना वार्ड का कोई भी प्रस्ताव न दिया जाए।

प्रदेश के 8 आकांक्षात्मक जिलों में धरातल पर उतरने को तैयार एक लाख करोड़ का निवेश

एक समय में नक्सलियों, डकैतों व पिछड़ा जिला होने का दंश झेलने वाले आठ जिले बनेंगे यूपी के विकास का ग्रोथ इंजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के दौरान देश-विदेश के औद्योगिक समूहों की ओर से मिले 40 लाख करोड़ के निवेश प्रस्तव को योगी सरकार धरातल पर उतारने की तैयारी में जोर-शोर से जुटी हुई है। इसके लिए मुख्यमंत्री के निर्देश पर ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के प्रथम फेज में प्रदेश के सभी 75 जिलों में लाखों करोड़ का निवेश धरातल पर उतरने को तैयार है। सबसे अहम बात ये है कि क्रियान्वित होने जा रहे निवेश के मामले में यूपी के बड़े और औद्योगिक शहर ही नहीं बल्कि वो जनपद भी किसी से पीछे नहीं हैं, जिन्हें अब तक सबसे पिछड़ा माना जाता रहा है। देशभर के 100 आकांक्षात्मक जिलों में से आठ उत्तर प्रदेश में हैं, जिन्हें पिछड़ा माना जाता है। मगर ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के प्रथम फेज के लिए इनकी परफॉर्मेंस ने सबको चौंका दिया है। अब तक 7 लाख करोड़ के निवेश में से एक लाख करोड़ से अधिक का निवेश इन आठ आकांक्षात्मक जिलों में धरातल पर उतरने जा रहा है। यूपी का सोनभद्र, चंदौली जिला जो कभी देश में नक्सलियों से प्रभावित थाए आज प्रदेश के विकास में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। इसके अलावा डकैतों के आतंक से प्रभावित चित्रकूट और पिछड़ा जिला होने का दंश झेल रहे सिद्धार्थनगर, बहराइच फ तेहपुरए श्रावस्ती और बलरामपुर ने बड़ी संख्या में निवेशकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। यह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की छोटे जिलों को विकास से जोड़ने की मुहिम का ही असर है। वहीं पहले इन जिलों में अव्यवस्था और नक्सल-दस्यु गतिविधियों के चलते उद्योग जगत यहां बड़ा निवेश करने से कतराते रहे हैं। हालांकि अब परिस्थितियां बिल्कुल बदल चुकी हैं। योगी सरकार की अपराध और अपराधियों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीतिए दुर्गम और हाशिये वाले क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं का विकासए आधारभूत संरचनाओं का निर्माण और बेहतर कनेक्टिविटी से ये जिले यूपी के विकास के ग्रोथ इंजन बनने जा रहे हैं। ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी में नोएडा के बाद धरातल पर उतरने जा रहा सबसे ज्यादा निवेश सोनभद्र में ही होने वाला है। इस निवेश से न सिर्फ पूर्वांचल बल्कि प्रदेश के विकास को भी रफ्तार मिलेगी। तकरीबन 78815 करोड़ की 43 निवेश परियोजनाएं सोनभद्र में कार्यान्वित होने के लिए बिल्कुल तैयार हैं। इसी तरह कभी नक्सल गतिविधियों का गढ़ माने जाने वाले चंदौली जिले में 17455 करोड़ की 69 परियोजनाएं धरातल पर उतरने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। वहीं आकांक्षात्मक जिलों में शामिल चित्रकूट में 6765 करोड़ की 42 परियोजनाएंए सिद्धार्थनगर में 297 करोड़ की 56 परियोजनाएंए फ तेहपुर में 1831 करोड़ की 72 परियोजनाएं धरातल पर उतरने के लिए रेडी हैं। इसके अलावा तराई वाले जिले बहराइच में 736 करोड़ की 69 परियोजनाएं, श्रावस्ती में 866 करोड़ की 74 परियोजनाएं और बलरामपुर में 368 करोड़ की 36 परियोजनाएं धरातल पर उतरने को तैयार हैं।

परिवहन मंत्री 1090 चौराहे से आज करेंगे सड़क सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ

जागरूकता के साथ चालकों-परिचालकों की काउंसिलिंग और हेल्थ चेक-अप भी कराएगा परिवहन निगम

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश सरकार शीत ऋतु में सड़क दुर्घटनाओं व उनसे होने वाली मृत्यु की संख्या में कमी लाने के उद्देश्य से जनमानस को यातायात के नियमों एवं सुरक्षा मानकों के प्रति जागरूक करने के लिए 15 दिसंबर से 31 दिसंबर तक द्वितीय सड़क सुरक्षा पखवाड़ा आयोजित करने जा रही है। सड़क सुरक्षा पखवाड़ा में उत्तर प्रदेश परिवहन निगम द्वारा विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगाए जिसमें जागरूकता के साथ-साथ औचक जांच, चालकों व परिचालकों की काउंसिलिंग और चालकों का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण भी होगा। उल्लेखनीय है कि शुक्रवार से शुरू हो रहे सड़क सुरक्षा पखवाड़े की शुरुआत परिवहन मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह लखनऊ में 1090 चौराहे से करेंगे।

पखवाड़े के दौरान परिवहन निगम ब्रेथएनालाइजर डिवाइस के माध्यम से डिपो/कार्यशाला एवं मार्ग पर औचक जांच कराएगा। परिवहन निगम की समस्त बसों की तकनीकी जांच कराकर ही बसों को आउटशेड कराया जाएगा। निगम एवं अनुबंधित बसों की हेड लाइट/ बैक लाइट, इंडीकेटर, रियर व्यू मिरर, एसएलडी एवं सीट बेल्ट की चेकिंग कराई जाएगी। बसों के स्पीड कंट्रोल डिवाइस की जांच, चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस एवं वर्दी की जांच, निगम एवं अनुबंधित बसों में रिफ लेक्टिव टेप लगाना, चालकों को रात में बस संचालन के दौरान हेडलाइट के हाईबीम/लोबीम के प्रयोग के संबंध में जानकारी देना जैसी गतिविधियों को सुनिश्चित कराया जाएगा।

चालक/परिचालकों को नशा न करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। रैश ड्राइविंग पर नियंत्रण के लिए मार्ग पर बसों का औचक निरीक्षण तथा चालकों की काउंसिलिंग के साथ ही समस्त चालकों/परिचालकों की सड़क सुरक्षा के संबंध में काउंसिलिंग एवं प्रशिक्षण के अंतर्गत सीएमवीआर रुल्स तथा वर्तमान परिस्थितियों में एक्सप्रेस/वे व अन्य हाईवेज पर बस के सुरक्षित संचालन, लेन ड्राइविंग ओवरटेकिंग, ब्रेकिंग आदि की जानकारी दी जाएगी। सड़क सुरक्षा अभियान के दौरान क्षेत्रीय प्रबंधक तथा सेवा प्रबंधक भी कम से कम तीन-तीन डिपो में कार्यक्रम सुचारू रूप से संचालित कराने में सहयोग करेंगे। सभी बस स्टेशनों पर एलईडी टीवी एवं बसों में स्थापित साउंड बॉक्स के माध्यम से सड़क सुरक्षा एवं महिलाओं की सुरक्षा का संदेश प्रसारित किया जाएगा। पखवाड़े के प्रत्येक दिन ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से राष्ट्रीय भक्ति के गीतों के साथ सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। चालकों को सुरक्षित संचालन के लिए बसों को निर्धारित गति में संचालित करने, सीट बेल्ट का प्रयोग करने, बस संचालन के दौरान मोबाइल का प्रयोग न करने तथा चालक की असावधानी से होने वाली दुर्घटनाओं आदि से संबंधित लघु फि ल्मों का प्रदर्शन होगा। बस स्टेशनों पर उपस्थित यात्रियों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया जाएगा।

निगम के समस्त नियमितध्संविदा चालकों की मुख्यालय द्वारा उपलब्ध कराए गए हेल्थ कार्ड के माध्यम से राजकीय चिकित्सालयों में आंखों की जांच व सामान्य स्वास्थ्य जांच, जिसके अंतर्गत नजर, कलर ब्लाइंडनेस, ब्लड प्रेशर, रैंडम शुगर आदि की जांच कराई जाएगी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा निर्धारित व्यवस्था के अनुसार चालकों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं नेत्र परीक्षण कराया जाएगा।

मेला की अनुमति निरस्त करने के आदेश पर रोक

विधि संवाददाता। लखनऊ

डालीगंज इलाके में प्रस्तावित मेले की अनुमति निरस्त करने के आदेश पर हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने अंतरिम रोक लगा दी है। साथ ही राज्य सरकार से जवाब भी तलब किया है। जस्टिस विवेक चौधरी एवम जस्टिस ओम प्रकाश शुक्ल की पीठ ने यह आदेश इमरान अली खान की याचिका पर दिया है। याचिकाकर्ता के वकील बालकेश्वर श्रीवास्तव ने बताया कि चार अगस्त को डालीगंज में केजीएमयू के लिम्ब सेंटर के आगे 10 दिसंबर से 10 जनवरी तक के लिए प्रस्तावित मेला-प्रदर्शनी की इजाजत दी जा चुकी थी। मेले की तारीख नजदीक आने पर वहां अस्थायी दुकानें व झूला आदि का प्रबंध भी हो गया। लेकिन आठ दिसंबर को बिना कोई कारण बताए अचानक अनुमति को निरस्त कर दिया गया।

31 तक चलेगा प्रदेश व्यापी सड़क सुरक्षा अभियानः प्रमुख सचिव गृह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सचिव गृह संजय प्रसाद ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने द्धितीय सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के अन्तर्गत इस माह 15 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक प्रदेश व्यापी सड़क सुरक्षा अभियान चलाए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने सड़क दुर्घटनाओं से बचाव हेतु आम-जन को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के लिए विस्तृत रूपरेखा तैयार कर कार्रवाई किये जाने के भी निर्देश दिए हैं। संजय प्रसाद ने बताया कि अभियान को सफ ल बनाने के लिए लोक निर्माण विभाग, चिकित्सा विभाग तथा शिक्षा विभाग आदि का भी सहयोग प्राप्त किया जायेगा। उन्होंने बताया कि अभियान के दौरान सड़क सुरक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी के लिए उसके व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए गए हैं ताकि आम लोगों को इस संबंध में अधिकाधिक जागरूक किया जा सके। प्रमुख सचिव गृह ने यह भी बताया कि सड़क दुघर्टनाओं व उनसे होने वाली मृत्यु की संख्या में कमी लाए जाने के उद्देश्य से 5 ई-एजुकेशन, एनफोर्समेंट, इन्जीनियरिंग, इमरजेंसी केयर और इनवायरमेंट पर फ ोकस करते हुए सभी संबंधित विभागों को एकजुट होकर कार्य करना होगा।

प्रदेश सरकार ने ललितपुर में फार्मा पार्क के लिए 1472 एकड़ भूमि पर शुरू की सर्वे प्रक्रिया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ कानपुर

ललितपुर के 5 गांवों में कुल 1472 एकड़ भूमि पर सर्वे प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए होगी एजेंसी की नियुक्ति

उत्तर प्रदेश की आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर रही योगी सरकार ने प्रदेश में औद्योगिक उन्नति को नए आयाम देने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। सीएम योगी के विजन अनुसारए प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी बनाने के लिए जिन सेक्टर्स में सबसे ज्यादा फोकस किया जा रहा है उसमें उद्योग प्रमुख है। प्रदेश में औद्योगिक परिवेश को बदलने और देश समेत पूरी दुनिया में उत्तर प्रदेश की धाक जमाने की दिशा में प्रदेश सरकार बुंदेलखंड के ललितपुर में फार्मा पार्क का विकास करने जा रही है। ललितपुर के कुल 5 गांवों में 1472 एकड़ में फैले फ ार्मा पार्क के लिए सर्वे प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए योगी सरकार ने तैयारी शुरू कर दी है।

उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) ने सर्वे प्रक्रियाओं को पूर्ण करने के लिए एक व्यापक कार्ययोजना तैयार की है जिसके अंतर्गत सर्वेयर एजेंसी के निर्धारण के जरिए इस कार्य को पूर्ण कराया जाएगा। इस क्रम मेंए यूपीसीडा ने फि क्स्ड प्राइस बिड्स प्रक्रिया के तहत सर्वेयर एजेंसी के निर्धारण के लिए ई-निविदा के जरिए आवेदन मांगे हैं। इस प्रक्रिया से चयनित होने वाली सर्वे एजेंसी को फार्मास्यूटिकल यूनिट्स के संचालन के लिए सॉयल टेस्टिंग, कॉन्टूर मैपिंग व टोपोग्राफि कल इनवेस्टिगेशन जैसी प्रक्रियाओं को पूरा करेगी। इसके अतिरिक्त, उरई में साइट-1 व 2 तथा प्लास्टिक सिटी दिबियापुर में लेआउट गाइड मैप, सेक्टोरियल मैप व गैन्ट्री साइनेज बोर्ड उपलब्ध कराने के लिए भी एजेंसी निर्धारण के लिए आवेदन मांगे गए हैं। उत्तर प्रदेश के ललितपुर में एक समर्पित फ ार्मा पार्क स्थापित करने की योजना हैए जो लगभग 1472 एकड़ के व्यापक भूमि क्षेत्र को कवर करेगा। इस परियोजना के तहत चयनित भूमि को रणनीतिक रूप से दो चरणों में विभाजित किया गया है। इसमें से शुरुआत में 300 एकड़ भूमि के विकास प्रयासों के लिए तत्काल फ ोकस है और इसी पर कार्य करते हुए यूपीसीडा ने सर्वेयर एजेंसी के निर्धारण के लिए आवेदन मांगे हैं। कुल मिलाकर जिन 5 गांवों में सर्वे होना है उनमें मडावरा तहसील के तहत आने वाले सैदपुर में 426 व गडोलीकलां में 249 एकड़ तथा महरौनी तहसील के तहत आने वाले लरगन में 239, करौंदा में 116 एकड़ व रामपुर में 441 एकड़ चिह्नित भूमि मुख्य है। यूपीसीडा द्वारा निर्धारित की गई एजेंसी द्वारा कुल भूमि सर्वेक्षण में आधुनिक सर्वेक्षण तकनीकों (जैसे डिजिटल टोटल स्टेशन, डीजीपीएसए ड्रोन आदि) का उपयोग करके 14000 पैमाने में मानचित्र तैयार किया जाएगा जो सर्वे ऑफइंडिया के ग्रेट ट्रिगोनोमेट्रिक सर्वे लेवलिंग बेंचमार्क के आधार पर होगी। वहीं, निरीक्षण स्थल पर डीजीपीएस का उपयोग करके ग्राउंड कंट्रोल नेटवर्क की स्थापना भी एजेंसी द्वारा की जाएगी। सर्वे एजेंसी द्वारा कार्ययोजना के तहत निर्धारित क्षेत्र में सॉयल टेस्टिंग (मृदा परीक्षण) मानक प्रक्रिया के अनुसार किया जाएगा। इसके तहत मिट्टी परीक्षण करने के लिए बोरहोल की खुदाई और मिट्टी के नमूने एकत्र करना, मृदा परीक्षण रिपोर्ट प्राप्त करना और प्रभारी अभियंता द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार सभी प्रक्रियाओं को पूर्ण करना प्रमुख होगा। इससे यह पता चल सकेगा कि निर्धारित क्षेत्र में फार्मा व ड्रग पार्क के अंतर्गत फ ार्मास्यूटिकल यूनिट्स के संचालन के लिए किन संसाधनों की प्रचुरता या कमी और इसे कैसे इस्तेमाल में लाया जा सकता है। यूपीसीडा द्वारा उरई में साइट-1 व 2 तथा प्लास्टिक सिटी दिबियापुर में भी तमाम विकास परियोजनाओं को आगे बढ़ाने की दिशा में कदम बढ़ा दिए हैं। इस क्रम में यूपीसीडा ने लेआउट गाइड मैप्सए सेक्टोरियल मैप्स व गैंट्री साइनेज बोर्ड उपलब्ध कराने के लिए एजेंसी के निर्धारण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। उल्लेखनीय है कि 274.4 एकड़ में विकसित हो रहे प्लास्टिक पार्क में औद्योगिक इकाइयों के साथ ही 84.93 एकड़ क्षेत्र में आवासीय इकाइयों और बुनियादी ढांचों का भी विकास किया जाएगा। ऐसे में इन परियोजनाओं को पूर्ण करने के लिए योगी सरकार ने प्रयास तेज कर दिए हैं और यूपीसीडा द्वारा भी इस दिशा में तमाम प्रयास किए जा रहे हैं।

संकल्प यात्रा की धूम

फतेहपुर। विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का आयोजन विकास खंड तेलियानी के ग्राम पंचायत ठिठौरा, दुगरेई, ब्लाक भिटौरा के ग्राम पंचायत हसऊपुर, नरौली बुजुर्ग, ब्लॉक हथगाम के ग्राम पंचायत गाजीपुर खुर्द, कुंधन, ब्लॉक बहुआ के ग्राम पंचायत पमरौली, सोनवर्षा, ब्लॉक धाता के ग्राम पंचायत आलमपुर गेरिया, डेंडासाई, ब्लॉक मलवा के ग्राम भाऊपुर, शिवराजपुर, ब्लॉक खजुहा के ग्राम पंचायत-केवई, खुरमाबाद, ब्लॉक हसवा बहरामपुर, टीकर में किया गया। जिसमें कैम्प व प्रचार वाहन के माध्यम से जागरूक किया गया। प्रचार वाहन के माध्यम से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विकसित भारत से संबंधित कार्यक्रम का सजीव प्रसारण जनप्रतिनिधियों के साथ नागरिकों ने देखा व सुना। मुख्यमंत्री ने विभिन्न जनपदों के लाभार्थियों से संवाद किया।

ब्लॉक मलवां के ग्राम पंचायत शिवराजपुर, भाऊपुर में विधायक जहानाबाद राजेन्द्र सिंह पटेल, ब्लॉक खजुहा के ग्राम पंचायत खुर्माबाद विधायक बिन्दकी जय कुमार सिंह जैकी, ब्लॉक धाता के ग्राम पंचायत डेंडासाई में एमएलसी अविनाश सिंह चौहान, ब्लॉक हथगाम के ग्राम पंचायत गाजीपुर खुर्द में एमएलसी अविनाश सिंह चौहान एवं पूर्व राज्यमंत्री मंत्री रणवेंद्र प्रताप सिंह उर्फ धुन्नी सिंह, ब्लॉक हथगाम के ग्राम पंचायत कूंधन में पूर्व राज्यमंत्री मंत्री रणवेंद्र प्रताप सिंह उर्फ धुन्नी सिंह, ब्लाक भिटौरा के ग्राम पंचायत नरौली बुजुर्ग में पूर्व विधायक विक्रम सिंह, ब्लॉक बहुआ के ग्राम पंचायत पमरौली, सोनवर्षा में पूर्व विधायक करन सिंह पटेल, ब्लॉक धाता के ग्राम पंचायत आलमपुर गेरिया में ब्लॉक प्रमुख हसवा विकास पासवान, ब्लॉक भिटौरा के ग्राम पंचायत हसऊपुर में मंडल संयोजक भाजपा श्रीकान्त अवस्थी ने प्रतिभाग किया।

साथ ही संचालित योजनाओं के प्रमाण पत्र भी वितरित किए। अपर जिलाधिकारी, जिला विकास अधिकारी, डीसी मनरेगा, जिला पंचायत राज अधिकारी, जनपद स्तरीय अधिकारियों सहित खंड विकास अधिकारी ने केंद्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी गई। लाभार्थियों को स्वीकृति प्रमाण पत्र का वितरण किया। इस दौरान बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग, स्वास्थ्य विभाग, कृषि, शिक्षा विभाग, उद्यान विभाग, खाद्य सुरक्षा विभाग, एनआरएलएम विभाग, बैंक संबंधी, विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना से संबंधित लगाये गये विभिन्न स्टालों को देखा और विभाग द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के संबंध में जानकारी भी प्राप्त की।

अब प्राकृतिक खेती हुई शुरु
शासन ने दिया 183 लाख का बजट

हमीरपुर। बुन्देलखंड में जैविक खेती के बाद शासन ने प्राकृतिक खेती शुरु करने के लिये एक करोड़ 83 लाख का बजट आवंटित किया है। इसके लिये सूक्ष्म जीवों को अधिक ताकतवर बनाने के लिये गोवर के घोल में गुड़ व बेसन मिलाकर खेती में छिड़काव किया जायेगा। शासन आर्गेनिक खेती में बहुत ध्यान दे रहा है,हर क्षेत्र में इस पद्दति को अलग अलग नाम दिया गया है बुन्देलखंड में इस पद्दति को प्राकृतिक खेती का नाम दिया गया है। जिले में प्राकृतिक खेती कराने की योजना तीन साल के लिये शासन स्तर से बनायी गयी है।पिछले साल कोई क्रियाकलप न होने के कारण चाल वित्तीय वर्ष में इसके लिये एक करोड़ 83 लाख का बजट आवंटित कर दिया गया है। जिले के सभी सातो ब्लाको में 70 कलस्टर बनाकर एक ब्लाक में पांच सौ हेक्टेएअर जमीन ली गयी है, इस प्रकार जिले में 3500 हेक्टेएअर भूमि में प्राकृतिक खेती कराने का फैसला किया गया है।चयनित किसान को ड्रम,मग्घा बाल्टी खरीदने के लिये 4800 रुपये दिये जायेगे। प्राकृतिक खेती की देखरेख के लिये रिसोर्स परसन रखा गया है उसे तीन हजार रुपये कलस्टर के अनुरुप दिया जायेगा। उपकृषि निदेशक(डीडी) हरीशंकर भार्गव ने बुधवार को बताया कि आर्गेनिक खाद भी बैज्ञानिक ढंग से तैयार की जायेगी। जिसमे एक ड्रम पानी में गोवर घोलकर एक किलो ग्राम पेड़ के नीचे के मिट्टी उसी घोल में करीब तीन किलो गुड़ व थोडा सा बेसन बनाया जायेगा ताकि गोवर के सूक्ष्म जीव ये भोजन खाकर अधिक शक्तिशाली बन सके। यही घोल जमीन व पौधे में छिड़काव किया जायेगा। तभी खेत को उपजाऊ तत्व मिल सकेगे। डीडी का कहना है कि प्राकृतिक खेती में उपज कम होती है मगर अन्न शुद्ध रुप से आर्गेनिक रहता है।धीरे धीरे किसान रुचि ले रहा है,प्राकृतिक खेती भी जैविक खेती के भांति की जाती है। इसलिये ज्यादा किसानों को प्रशिक्षण देने की आवश्यकता नही है।

रेलवे टिकट आरक्षण केंद्र में दलालों के खिलाफ प्रदर्शन

- कर्मचारियों की दलालों से सांठगांठ का आरोप

सीसीटीवी कैमरे से निगरानी कराकर समस्या समाधान की मांग

फतेहपुर। स्थानीय रेलवे स्टेशन के टिकट आरक्षण केंद्र में दलालों की आवाजाही से उत्पन्न हो रही परेशानियों को लेकर आम नागरिकों ने टिकट आरक्षण केंद्र के बाहर प्रदर्शन किया तत्पश्चात उप स्टेशन अधीक्षक को एक शिकायती पत्र सौंपकर कर्मचारियों की दलालों से सांठगांठ का आरोप लगाते हुए आरक्षण केंद्र में सीसीटीवी कैमरे से निगरानी कराकर समस्या समाधान की मांग उठाई। गुरूवार को रेलवे स्टेशन के टिकट आरक्षण केंद्र के बाहर मनोज, वीरेंद्र, मोनिका, अखिलेश कुमार, सुजीत कुमार, वसीम, प्रभाकर, अर्जुन समेत अन्य लोगों ने प्रदर्शन करते हुए टिकट आरक्षण केंद्र में दलालों के खिलाफ नारेबाजी की। उक्त लोगों का कहना रहा कि टिकट आरक्षण केंद्र में तत्काल टिकट लेने केलिए यहां प्रतिदिन दलालों का जमघट रहता है जिससे दलालों का ही नंबर पहले लगता है और आम आदमी का नंबर बाद में लगता है। यहां का पूरा स्टाफ दलालों से मिला रहता है। आम आदमी का नंबर पहले होते हुए भी बाद में कर दिया जाता है। इस तरह टिकट नहीं मिल पाता। बताया कि जब कर्मचारियों से इसकी शिकायत की जाती है तो वह उल्टा आम आदमी पर भी भड़कने लगते हैं और पर्दे के पीछे से दलालों को तरजीह देते हैं। यदि यही हाल रहा तो यहां किसी दिन विवाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसकी जिम्मेदारी रेलवे प्रशासन की होगी। उप स्टेशन अधीक्षक से मांग किया कि टिकट आरक्षण केंद्र की निगरानी सीसीटीवी के जरिए की जाये और दलालों के प्रवेश पर अंकुश लगाते हुए समस्या का समाधान किया जाये।

लोडर व ट्रैक्टर पर यात्रा कर जान जोखिम में न डालें: आफाक खॉन

बाईक पर बैठी पॉच सवारियों को हिदायत देते यातायात प्रभारी।

कन्नौज। पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद के निर्देशानुसार एवं क्षेत्राधिकारी यातायात शिव प्रताप सिंह के नेतृत्व में यातायात प्रभारी आफ़ाक़ खां द्वारा कन्नौज शहर के नेशनल हाईवे के पाल चौराहे के पास और पाल चौराहे से जसोदा टोल प्लाजा तक हाईवे पर खड़े ट्रैकों को चेक किया गया। खतरनाक तरीके से खड़े ट्रकों आदि के चालान किए और लोडर पर सवारी बैठाने वाले चालकों को जागरूक करते हुए कार्यवाही की गई। इसक बाद उनके द्वारा पाल चौराहे के पास महिंद्रा शोरूम के बाहर एक कार में एचएसआरपी प्लेट लगाते समय वहां पर एकत्रित लोगों को हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट के लाभ बताए गए। एक मोटर साइकिल पर तीन बच्चे और दो वयस्क बैठे हुए पाए गए जिनको रोक कर समझाया गया और बच्चों को टेंपो में बैठा कर घर भेजा गया। वहीं ट्रैक्टरों को रोक-रोक कर रिफ्लेक्टर लगाने का कार्य किया गया और ट्रैक्टर चालकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया गया।

ग्राम पंचायत पतौंजा कमालगंज में भारत विकसित संकल्प यात्रा का भव्य आयोजन

संवाददाता। फर्रुखाबाद

जिलाधिकारी संजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में ग्राम पंचायत पतौंजा ब्लॉक कमालगंज में भारत विकसित संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया।दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम जिलाधिकारी संजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में ग्राम पंचायत पतौंजा ब्लॉक कमालगंज में भारत विकसित संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया। दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। भारत विकसित संकल्प यात्रा कार्यक्रम में भारत सरकार द्वारा भेजी गयी एलईडी वैन के माध्यम से सरकार द्वारा चलायी जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं की डॉक्युमेन्ट्री एवं कृषि कार्य में प्रयोग हेतु ड्रॉन प्रदर्शन का ग्रामीणों द्वारा अवलोकन किया गया।

डीएम ने निर्देशित करते हुए कहा कि संबंधित विभागों द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाए। यदि कोई पात्र लाभार्थी किसी कारणवश वंचित रह गया है तो कार्यक्रम में ही आवेदन कराकर योजनाओं का लाभ दिलाना सुनिश्चित किया जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि भारत विकसित संकल्प यात्रा में कोई भी पात्र लाभार्थी जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित ना रहे। भारत विकसित संकल्प यात्रा कार्यक्रम में भारत सरकार द्वारा भेजी गयी एलईडी वैन के माध्यम से सरकार द्वारा चलायी जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं की डॉक्युमेन्ट्री एवं कृषि कार्य में प्रयोग हेतु ड्रॉन प्रदर्शन का ग्रामीणों द्वारा अवलोकन किया गया।

आग से परचून का सामान जलकर खाक

मौदहा (हमीरपुर)। परचून की दुकान में कलदेर रात अज्ञात कारणो के चलते आग लग जाने से एक लाख रुपये से अधिक का नुकसान हो गया।पीडित ने एसडीएम से मदद की गुहार लगायी है। विकासखंड के माचां गांव निवासी उबेद अली पुत्र नियामत अली ने उप जिलाधिकारी को बताया कि बुधवार की देर रात पूरा परिवार एक शादी समारोह में गया हुआ था, तभी गांव के लोगों ने सूचना दी कि परचून की दुकान पर आग लग गई है और गृहस्थी का सामान जल रहा है तभी आनंन फानन में पीड़ित मौके में पहुंचकर आग बुझाने का प्रयास किया।जब तक आग बुझती तब तक सब कुछ जलकर राख हो चुका था। अब पीड़ित के सामने भरण पोषण की लाले पड़ने लगे और वह अधिकारियों के यहां पहुंचकर नुकसान के लिए सरकार से मदद की गुहार लगाई है। इस संबंध में उप जिलाधिकारी राजेश कुमार मिश्रा ने बताया कि प्रार्थना पत्र के आधार पर जांच कर कार्यवाही की जाएगी।

क्विक न्यूज

अपर निदेशक ने किया इग्नू परीक्षा केंद्र का औचक निरीक्षण

कानपुर देहात। कस्बा के रामस्वरूप ग्राम उद्योग परास्नातक महाविद्यालय पुखरायां कानपुर देहात में इग्नू की दिसंबर 2023 सत्र की चल रही सत्रांत परीक्षा का गुरुवार को इग्नू क्षेत्रीय केंद्र लखनऊ के अपर निदेशक डॉ अनिल कुमार मिश्रा ने औचक निरीक्षण किया। विश्वविद्यालय नियमावली के अनुसार सुचिता एवं शांतिपूर्ण परीक्षा व्यवस्था देखकर संतोष व्यक्त किया। डॉ मिश्रा ने महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के साथ इग्नू द्वारा संचालित पाठ्यक्रम पर विस्तार से चर्चा कीए माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार के संकल्प 2047 तक आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत के विषय पर चर्चा की इस हेतु युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने पर बल दिया। विद्यार्थियों को हमारा संकल्प विकसित भारत की शपथ भी दिलाई। इस अवसर पर प्राचार्य प्रोफेसर रामेश्वर प्रसाद चतुर्वेदीए पूर्व प्राचार्य प्रोफेसर मुकेश चंद द्विवेदी, प्रोफेसर सविता गुप्ता, डॉ. हेमेंद्र सिंह, डा. के के सिंह एडॉ रविंद्र सिंह, जितेंद्र कुमार, डॉ अंशुमान उपाध्याय, इदरीश खान, शिवनारायण यादव, संजय कुमार इग्नू समन्वयक डॉ पर्वत सिंह मौजूद रहे।

खजुहा में दिव्यांगों के लिए लगा कैंप

20 दिव्यांगों के प्रमाण पत्र निर्गत, सुनीं समस्याएं

फतेहपुर। दिव्यांगों को योजनाओं से आच्छादित किए जाने के लिए गुरूवार को खजुहा विकास खंड कार्यालय परिसर में दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग की ओर से शिविर/कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें बीस दिव्यांगजनों के दिव्यांग प्रमाण पत्र भी निर्गत किए। इसके अलावा कैंप में उपस्थित अधिकारियों ने दिव्यांगों की समस्याओं को भी सुना। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी ने बताया कि आज के कैंप में लगभग 83 दिव्यांगों ने हिस्सा लिया। जिनकी समस्याओं का निराकरण किया गया है। उन्होने बताया कि कल विकास खंड विजयीपुर में शिविर/कैम्प आयोजित होगा। शिविर में दिव्यांगजनों को चालीस प्रतिशत से अधिक का विकलांगता का प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र ग्रामीण क्षेत्र में छियालीस हज़ार अस्सी रूपये वार्षिक एवं शहरी क्षेत्र में छप्पन हज़ार चार सौ साठ रूपये वार्षिक, आधार कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, पासपोर्ट साइज दो फोटो लाना अनिवार्य है। जिससे आयोजित शिविर के माध्यम से दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं से लाभान्वित किया जा सके। साथ ही इस शिविर में पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा संचालित शादी अनुदान योजना का भी प्रचार-प्रसार किया जाएगा।

पुलिस ने जिला बदर को घर से किया गिरफ्तार

फर्रुखाबाद। पुलिस नें दो माह के लिए जिला बदर किये गये आरोपी को घर से गिरफ्तार कर लिया। उसके बाद एक अवैध तमंचा भी मिला। अमृतपुर थाना क्षेत्र के ग्राम रतनपुर पमारान निवासी धर्मेन्द्र पुत्र विशनु दयाल को जिलाधिकारी के आदेश पर बीते 4 दिसंबर 2023 को थाना पुलिस नें उसे जिला बदर कर दिया था। गुरुवार को थाना पुलिस नें आरोपी धर्मेन्द्र को उसके घर के बाहर चारपाई से गिरफ्तार कर लिया । उसके पास से पुलिस को एक तमंचा भी मिला है । पुलिस नें आरोपी का चालान कर दिया।

भूमि विवाद में महिला को घर में घुसकर पीटा

गुरसहायगंज (कन्नौज)। भूमि विवाद को लेकर महिला के साथ गांव के ही चार लोगों ने घर में घुसकर अभद्रता व मारपीट कर घायल कर दिया और धमकी भी दी। पीड़िता ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। क्षेत्र के ग्राम रम्पुरा निवासी माया देवी पत्नी सेवाराम द्वारा कोतवाली में दर्ज कराए गए मुकदमे में कहा गया है कि बुधवार की शाम वह अपने घर में थी तभी गांव के ही दयाराम, राजपाल, आरती, पूजा आए और भूमि विवाद को लेकर गाली गलौज करने लगे। उसके द्वारा विरोध करने पर उक्तगणों ने घर में घुसकर लात घूसों से मारपीट कर घायल कर दिया तथा जान से मारने की धमकी दी।

सट्टा माफिया गैंग का सदस्य गुड्डू गिरफ्तार

फर्रुखाबाद। पुलिस नें सट्टामाफिया के गैंग सदस्य को गिरफ्तार कर लिया।दरअसल बीते 6 जून 2023 को शहर कोतवाली प्रभारी अनिल कुमार चौबे ने कोतवाली में गैंगस्टर का मुकदमा दर्ज कराया। इसमें कहा कि खटकपुरा निवासी हसनैन गैंग बनाकर अपने साथी गढ़ी अब्दुल मजीद खां का राजू उर्फइरशाद, बक्कास, खटकपुरा का दिलशाद, चांद मियां, सरजात, सोहिल, दरीबा पूर्व का गुड्डन उर्फमनोज, जंगबाज खां का पप्पू उर्फरामप्रसाद, कुइया बूट का पारुल, खटकपुरा का अशफाक, पालीवाल वाली गली भोलेपुर का सर्वेश पाल व खटकपुरा के ही रोहित के साथ जुआ, सट्टा का कारोबार करता है। समाज विरोधी गतिविधियों में शामिल लोगों के खिलाफ कोई भी शिकायत करने से घबराता है। मऊदरवाजा थानाध्यक्ष आमोद कुमार सिंह व एसओजी टीम नें तिकोना शराब ठेका के पास से गुड्डन उर्फ मनोज पुत्र जगमोहन निवासी दरीबा पश्चिम को गिरफ्तार कर लिया। उसके ऊपर2012 से अब तक 5 मुकदमें दर्ज हैं।

लेंटर में दबकर घायल हुए मजदूर की उपचार के दौरान मौत

फर्रुखाबाद। भट्टा कार्यालय की छत तोड़ने के दौरान अचानक भराभरा कर गिरे लेंटर में दबकर मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गया था। उसे उपचार के लिए निजी नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया। उपचार के दौरान उसकी मौत हो गयी। पुलिस नें शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। शमशाबादथाना थाना क्षेत्र के चिलसरा स्थित पाल ईट भट्टे पर 32 वर्षीय दिलदार सिद्दीकी पुत्र कमालुद्दीन अपने साथी 28 वर्षीय गुड्डू सिद्दीकी 29 वर्षीय इरफान सिद्दीकी के साथ छत तोड़नें के लिए गया था। बीते दिन छत तोड़नें के दौरान अचानक सुबह 10 बजे छत तोड़ते समय लेंटर भरभरा कर गिर गया। जिसमें मजदूरी कर रहे दिलदार सिद्दीकी दबकर घायल हो गया। परिजनों नें फर्रुखाबाद के एक निजी नर्सिंग होम में उसे भर्ती कराया जहाँ उपचार के दौरान उसकी मौत हो गयी। परिजन शव को लेकर पुन: भट्टे पर पंहुच गये। उन्होंने शव रखकर मुआबजा की मांग की।

ग्राम पंचायत अधिकारियों की मनमानी से ग्रामीण परेशान, कोई सुनवाई नहीं

संवाददाता। कुरारा(हमीरपुर)

विकास खंड क्षेत्र के आधा दर्जन ग्राम पंचायतो में कार्यरत ग्राम पंचायत विकास अधिकारी की मनमानी के चलते ग्रामीण परेशान घूम रहे हैं। खंड विकास अधिकारी भी इस पर रोक नहीं लगा पा रहे हैं । कमरे में ताला लगा रहने से लोग पता लगाते रहते हैं। तथा मायूस होकर अपने घर को लौट जाते हैं।

विकास खंड कार्यालय में कार्यरत ग्राम पंचायत विकास अधिकारी धर्मजीत सिंह के पास क्षेत्र के सरसई, खरौंज,कुतुबपुर, बिलौटा, शंकरपुर,बचरौली गांवों का कार्य प्रभार है।इसकी कार्य शैली व लापरवाही के चलते पूर्व में खंड विकास अधिकारी रही ट्रेनी पी सी एस गरिमा सोनकिया ने एक माह के वेतन रोके जाने की संस्तुति की थी। लेकिन इसकी कार्यशैली में कोई सुधार नहीं हुआ है। खरोंज गांव निवासी संतोष कुमार ने बताया कि बाबा की मृत्यु होने पर उनका मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने आए थे। लेकिन उसके कमरे में ताला बंद था। परसी डेरा निवासी महिला रजनी ने बताया कि तीन बार उसके कमरे मेंगए लेकिन परिवार रजिस्टर की नकल नहीं मिली। कमरे में ताला बंद मिला।

बचरौली गांव निवासी राम किशन ने बताया की जन्म प्रमाण पत्र बनवाने को आए थे लेकिन कमरे में ताला बंद मिला। इस लापरवाह सचिव की कार्यशैली से ग्रामीण खासे परेशान हैं। खंड विकास अधिकारी बिपिन गुप्ता इसकी कार्यशैली पर रोक नहीं लगा पा रहे हैं।ऐसे में गांवों के विकास कार्य प्रभावित हो रहे हैं। तथा ग्रामीण परिवार रजिस्टर की नकल, जन्म ,मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए परेशान रहते हैं। ग्रामीणों ने इसकी जांच कराए जाने की मांग की है।

दहेज उत्पीड़न: तीन महिलाओं ने तहरीर देकर दर्ज कराई रिपोर्ट

संवाददाता। संडीला (हरदोई)

दहेज के लिए उत्पीड़ित की जा रही दो महिलाओं ने अपने पति एवं ससुरालीजन के विरुद्ध दहेज उत्पीड़न की रिपोर्ट दर्ज कराई है। पहली घटना में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए ग्राम कलौली निवासी ऊषा त्रिपाठी ने पुलिस को सूचित किया कि उसका विवाह थाना कछौना के अंतर्गत ग्राम मतुआ निवासी अनुज कुमार त्रिपाठी के साथ 6 मास पूर्व हुआ था। विवाह के अवसर पर पर्याप्त दहेज देने के बावजूद भी उसका पति एवं अन्य ससुरालीजन संतुष्ट नहीं हुए और उससे 10 लाख रुपए अपने परिजन से लाकर देने की मांग की।

जब यह मांग पूरी नहीं हुई तो ससुराल में उसका उत्पीड़न किया जाने लगा और अंतत: उसे घर से निकाल दिया गया। ऊषा त्रिपाठी की शिकायत पर पति अनुज कुमार त्रिपाठीए जेठ पंकज कुमार तथा नीरज त्रिपाठीए जेठानी कुसुम और पम्मी तथा सास लौंगश्री के विरुद्ध दहेज अत्याचार निवारण अधिनियम के अंतर्गत एफ्आईआर दर्ज की गयी है।

दूसरी घटना में थाना संडीला के अंतर्गत ग्राम निवाजीपुर निवासी सोनू रानी ने अपनी एफ्आईआर दर्ज कराते हुए कहा कि उसकी शादी लगभग 8 साल पहले थाना अतरौली अंतर्गत ग्राम सिकरोरी निवासी मालिन्दर के साथ हुई थी। विवाह के अवसर पर पर्याप्त दहेज देने के बावजूद भी उसका पति और ससुरालीजन संतुष्ट नहीं हुए और लगातार उसके साथ मारपीट करते रहे। विगत 11 दिसंबर को अंतत: उसे मारपीटकर घर से भगा दिया गया।

सोनू की तहरीर पर पति मालिन्दरए ससुर मोती तथा नंदकिशोरए राधिकाए जगदंबाए मनोज को नामजद करते हुए एफ्आईआर दर्ज की गयी है।

तीसरी घटना में ग्राम नंदौली निवासी लालता प्रसाद ने कोतवाली संडीला में दी गयी तहरीर में कहा कि उसने अपनी पुत्री रेखा का विवाह ग्राम शिवपुरी निवासी सरोज के साथ किया था। विवाह के अवसर पर अपनी हैसियत के अनुसार उन्होंनें दहेज दिया था लेकिन इस दहेज से भी रेखा के ससुरालीजन संतुष्ट नहीं हुए और उन्होंनें 1 लाख रुपए कारोबार करने के लिए लाकर देने की मांग की। जब यह मांग वे पूरी नही कर सके तो सरोज ने पहले स्वंय अपनी पत्नी की पिटाई की, उसके बाद अन्य ससुराल के लोग उसका उत्पीड़न करने लगे। लालता प्रसाद की तहरीर पर पति, सास ससुर और एक अन्य ससुराली रिश्तेदार के विरुद्ध एफ्आईआर दर्ज की गयी है।

मेडिकल स्टोर संचालक से हुई लूट का 24 घण्टे में पर्दाफाश, तीन गिरफ्तार

संडीला (हरदोई)। एक मेडिकल स्टोर संचालक से हुई लूट की घटना का खुलासा पुलिस टीम ने तत्पर्ता दिखाते हुए कर दिया। इस काण्ड में शामिल तीन लुटेरों को गिरफ्तार किया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना अतरौली के अंतर्गत ग्राम गड़रियाखेड़ा निवासी अनिल कुमार पुत्र छोटेलाल 12 दिसंबर की रात लगभग 10 बजे अपना मेडिकल स्टोर बंद कर मोटरसाइकिल से घर लौट रहे थे। ग्राम पकरियाकोल पावर हाउस के पास तीन अज्ञात व्यक्तियों ने उन्हें रोका और उनसे 2500 रुपए नकदए एक मोबाइल छीन लिया और उनकी मोटरसाइकिल लेकर फरार हो गए। इस घटना को लेकर पुलिस अधीक्षक केसी गोस्वामी ने सख्त रवैया अपनाते हुए पुलिस को इस घटना का खुलासा करने के कड़े निर्देश दिए थ। पुलिस ने 24 घण्टे के अंदर इस घटना का खुलासा कर दिया। पुलिस ने इस घटना में शामिल

पुलिस की गिरफ्त में लुटेरे

20 वर्षीय सोनू गौतम पुत्र भूधर निवासी ग्राम बसंतपुर थाना मालए गोलू गौतम पुत्र देवीप्रसाद निवासी ग्राम किरला तथा विवेक यादव पुत्र महेश यादव निवासी ग्राम फत्तेपुर थाना अतरौली को गिरफ्तार किया। इनके पास से एक चाकूए दो तमंचे तथा जीवित कारतूस के अलावा लूटी गई मोटरसाइकिलए मोबाइल और 1100 रुपए नकद बरामद हुए। पुलिस ने इस घटना में प्रयोग की गयी ओमनी कार को भी बरामद कर लिया है।

अवैध कार्य करने पर की जायेगी कड़ी से कड़ी कार्रवाई: रॉबिन सिंह

गुरसहायगंज (कन्नौज)। कोतवाली निरीक्षक के नेतृत्व में अपराध व अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही की जायेगी। अपराधी अपराध छोड़े या फिर क्षेत्र को ही छोड़ कर चले जायें। कहा कि शासन की मंशानुसार पीडितों की समस्याएं का तत्काल निस्तारण कर न्याय दिलानें का कार्य किया जाएगा। नगर में किसी भी प्रकार के अवैध कार्य और किसी भी प्रकार की अराजकता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। यह बात गुरूवार को छिबरामऊ मण्डी चौकी से स्थानान्तरित होकर कोतवाली की कस्वा चौकी का चार्ज संभालनें के उपरान्त नवागंतुक कस्वा प्रभारी रॉबिन सिंह ने संबाददाता से भेंटवार्ता के दौरान कही। कहा कि शराब माफिया, लकड़ी माफिया और जुआ-सट्टा माफिया क्षेत्र को छोड़कर चले जाएं या फिर सुधर जाएं और अपराध जनित कार्यों से दूरी बना

नवागतंक कस्वा प्रभारी रॉबिन सिंह का फाईल फोटो।

लें। क्योंकि अब अपराधियों की सही जगह जेल में सलाखों के पीछे होगी। इससे पूर्व नागरिकों नें नवागंतुक कस्वा प्रभारी का फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया। इस दौरान कांस्टेवल गजेन्द सिंह, दीपांशु गंगवार, कौशल फौजदार, मोनू कुमार आदि मौजूद रहे।

आर्मी पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

फर्रुखाबाद। आर्मी पब्लिक स्कूल फत्तेहगढ़ में विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत.प्रोत विश्व सांस्कृतिक सम्मेलन की पृष्ठभूमि पर आधारित वार्षिकोत्सव को बड़े धूमधाम से मनाया गया। विद्यालय का यह सत्तरहवां वार्षिकोत्सव विश्व के विभिन्न देश जापान, रूस एकोरिया, चीन, इंडोनेशिया, इटली, स्पेन, ब्राज़ील, दक्षिण अफ्रीका और भारत की संस्कृति, लोक नृत्य तथा लोकगीत को समर्पित रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के चेयरमैन सिखलाई रेजीमेण्ट सेण्टर के ब्रिगेडियर चंद्रशेखर अग्रवाल और आवा प्रेसीडेंट उषा अग्रवाल ने विद्यालय की वरिष्ठतम शिक्षक रंजू चतुर्वेदी, अर्चना सेंगर और जितेंद्र कुमार मिश्र के साथ संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया।

दीप प्रज्वलन के समय विद्यालय के छात्र देवांश पाण्डेय और देवांश मिश्रा ने मन्त्रोच्चारण किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ गणेश वंदना के साथ हुआ। विद्यालय के प्राथमिक वर्ग के बच्चों ने जापानी शैली में नृत्य करके

सभी आगन्तुक अतिथि जनों का स्वागत किया। इनके नृत्य को देखकर अतिथियों की तालियों से संपूर्ण पाण्डाल गूंज उठा।

विद्यालय की कार्यवाहक प्रधानाचार्य अवकाश प्राप्त मेजर नीताशा हेब्बर ने विद्यालय की वार्षिक प्रगति आख्या प्रस्तुत की। विद्यालय के छात्र.छात्राओं ने चर्चों के देश रूस की संस्कृति को दर्शाते हुए नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्र. मुग्ध कर दिया। कोरियाई मार्शल आर्ट का प्रदर्शन किया गया। चीन के लोक नृत्य का कुशलता पूर्वक प्रदर्शन लोगों के द्वारा सराहा गया। इण्डोनेशिया की संस्कृति को दर्शाता रामायण की रावण के द्वारा सीता का हरण और जटायु .मर्दन की लीला का प्रदर्शन नृत्य नाट्य शैली के माध्यम से किया गया। अंग्रेजी गीत श्री आर द वर्ल्डश् गाकर छात्र.छात्राओं ने खूब तालियां बटोरीं। इटली का सांस्कृतिक नृत्य, ब्राजील का लोक नृत्य तथा दक्षिण अफ्रीकी लोक नृत्य अत्यन्त सराहनीय रहा । मर्चेंट ऑफ वेनिस पर आधारित नाटक में दया के महत्त्व को दर्शाया गया। भारतीय शास्त्रीय और महान् भारतीय संस्कृति पर आधारित नृत्य के माध्यम से छात्र-छात्राओं ने विविधता में एकता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

पायनियर
नई दिल्ली, शुक्रवार, 15 दिसंबर, 2023

पूर्व सांसद अफजाल अंसारी की दोषसिद्धि सशर्त निलंबित की

गैंगस्टर मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने 2007 के गैंगस्टर अधिनियम के एक मामले में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के पूर्व सांसद अफजाल अंसारी की दोषसिद्धि बृहस्पतिवार को सशर्त निलंबित कर दी। न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां की पीठ ने बहुमत से दिए फैसले में कहा कि उत्तर प्रदेश के गाजीपुर निर्वाचन क्षेत्र से पूर्व सांसद अंसारी लोकसभा में मतदान में हिस्सा नहीं ले सकते और न ही सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं लेकिन सदन की कार्यवाही में भाग ले सकते हैं। साथ ही पीठ ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय को दोषसिद्धि तथा सजा के खिलाफ की गई अफजाल अंसारी की आपराधिक अपील का 30 जून 2024 तक निस्तारण करने का निर्देश दिया। न्यायमूर्ति दत्ता ने कहा कि उनकी राय बहुमत से दिए फैसले से अलग रही है और वह अंसारी की अपील खारिज करते हैं। शीर्ष न्यायालय ने 31 अक्टूबर को मामले में दोषसिद्धि के निलंबन का अनुरोध करने वाली अंसारी की याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 24 जुलाई को दोषसिद्धि को निलंबित करने से इनकार कर दिया था लेकिन मामले में अंसारी को जमानत दे दी थी। अंसारी ने विशेष एमपीएमएलए अदालत के फैसले के खिलाफ अपील की, जिसने उसे चार साल की कैद और एक लाख रुपए जुर्माने की सजा सुनाई थी। गाजीपुर की विशेष एमपीएमएलए अदालत ने 29 अप्रैल को अंसारी और उसके भाई एवं पूर्व विधायक मुख्तार अंसारी को 2007 के गैंगस्टर अधिनियम मामले में दोषी ठहराया था। अफजाल अंसारी को चार साल कैद जबकि मुख्तार अंसारी को 10 साल कैद की सजा सुनाई गई थी।

दोनों भाइयों पर 29 नवंबर, 2005 को गाजीपुर के तत्कालीन भाजपा विधायक कृष्णनंद राय की हत्या और 1997 में वाराणसी के व्यापारी नंद किशोर रूंगटा के अपहरण व हत्या के सिलसिले में उप्र गैंगस्टर अधिनियम के वाराणसी के व्यापारी नंद किशोर रूंगटा के अपहरण व हत्या के सिलसिले में उप्र गैंगस्टर अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया था। अफजाल अंसारी को अपहरण-हत्या मामले में दोषी ठहराने और सजा सुनाए जाने के बाद एक मई को लोकसभा सदस्य के रूप में अयोग्य ठहराया गया था।

मथुरा मंदिर-मस्जिद विवाद दशकों पहले सुलझा लिया गया था: ओवैसी

हैदराबाद (भाषा) ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लिमीन के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने बृहस्पतिवार को कहा कि मथुरा मंदिर-मस्जिद विवाद दशकों पहले मस्जिद समिति और मंदिर के ट्रस्ट के बीच आपसी सहमति से सुलझा लिया गया था। ओवैसी का यह बयान कृष्ण जन्मभूमि मंदिर के पास स्थित शाही ईदगाह परिसर का अदालत की निगरानी में सर्वेक्षण कराने की अनुमति देने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले के बाद आया। अदालत मस्जिद के सर्वेक्षण की निगरानी के लिए एक अधिवक्ता आयुक्त की नियुक्ति पर सहमत हो गई। याचिकाकर्ताओं का दावा है कि ऐसे संकेत हैं जो बताते हैं कि ईदगाह परिसर की जगह पहले हिंदू मंदिर था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश पर प्रतिक्रिया देते हुए ओवैसी ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में किसी का नाम लिए बिना कहा, एक नया समूह इन विवादों को उठा रहा है। चाहे वह काशी हो, मथुरा हो या लखनऊ की टीले वाली मस्जिद, यह एक ही समूह है। हैदराबाद से सांसद ने कहा, उपासना स्थल अधिनियम अब भी लागू कानून है। लेकिन इस समूह ने कानून और न्यायिक प्रक्रिया का मजाक बना दिया है। उच्चतम न्यायालय को इस मामले पर नौ जनवरी को सुनवाई करनी थी, तो ऐसी क्या जल्दी थी कि सर्वेक्षण का आदेश देना पड़ा। उन्होंने कहा कि मथुरा मंदिर-मस्जिद विवाद दशकों पहले मस्जिद समिति और मंदिर के ट्रस्ट के बीच आपसी सहमति से सुलझा लिया गया था। कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह मुद्दे पर आदेश दूसरा मंदिर-मस्जिद विवाद है जिसमें उच्च न्यायालय ने पिछले महीनों में एक सर्वेक्षण को अपनी मंजूरी दी है।

उच्चतम न्यायालय ने ईएसआईसी मामले में अभिनेत्री जयाप्रदा को दी गई सजा पर रोक लगाई

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को उस मामले में अभिनेत्री और पूर्व लोकसभा सांसद जयाप्रदा की सजा पर रोक लगा दी, जिसमें उनके स्वामित्व वाले एक सिनेमा थिएटर के कर्मचारियों का 18 वर्षों से अधिक समय से कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) का बकाया भुगतान नहीं करने पर छह महीने की साधारण कैद की सजा सुनाई गई थी। न्यायमूर्ति अभय एस. ओका और न्यायमूर्ति पंकज मिथल की पीठ ने जयाप्रदा द्वारा दायर अपील पर ईएसआईसी को नोटिस जारी किया। जयाप्रदा की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता सोनिया माथुर ने दावा किया कि चेन्नई की निचली अदालत द्वारा पारित दोषसिद्धि आदेश में त्रुटियां है। इससे पहले शीर्ष अदालत ने जयाप्रदा को मामले में आत्मसमर्पण करने से छूट दे दी थी।

धार्मिक नाम वाले दलों का मुद्दा संसद के अधिकार क्षेत्र में आता है: दिल्ली उच्च न्यायालय

भाषा। नई दिल्ली

दिल्ली उच्च न्यायालय ने बृहस्पतिवार को कहा कि जातीय, धार्मिक, नस्ल या भाषाई अर्थ वाले नामों और तिरंगे से मिलते-जुलते झंडों वाले राजनीतिक दलों का पंजीकरण रद्द करने की मांग वाली याचिका में उठाए गए मुद्दे पर संसद को फैसला करना होगा क्योंकि यह न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है। वकील अश्विनी कुमार उपाध्याय की ओर से दायर याचिका पर अदालत सुनवाई कर रही थी। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मिनी पुष्करणा की पीठ ने कहा, ए नीतिगत मुद्दे हैं और इन पर फैसला संसद द्वारा किया जाना चाहिए। हम कानून नहीं बनाते...अगर हम इसपर फैसला करते हैं, तो यह नीति क्षेत्र में हस्तक्षेप होगा...संसद इस पर फैसला करेगी। यह उसका अधिकार क्षेत्र है। सुनवाई के दौरान, याचिकाकर्ता उपाध्याय ने कहा कि व्यक्ति धर्म या जाति के नाम पर वोट नहीं मांग सकते, लेकिन धार्मिक अर्थों का उपयोग करके राजनीतिक दल बनाए जा सकते हैं, जिसकी अनुमति नहीं दी जा सकती। उन्होंने कहा, मैं यह नहीं कह सकता कि मैं हिंदू हूं, कृपया मुझे वोट दें। लेकिन हिंदू समाज पार्टी के नाम से राजनीतिक दल बनाया जा सकता है। यही मुद्दा है। चुनाव न केवल धनबल से बल्कि जातिबल और सांप्रदायिकता से भी मुक्त होने चाहिए। इस पर पीठ ने जवाब दिया, आप इन दलों के नामों के बारे में बात कर रहे हैं। नाम से फैसला नहीं होता। आपको राजनीतिक दलों की नीतियां देखनी होंगी। आपको देखना होगा कि वे कैसे काम कर रहे हैं, लेकिन इन सभी मुद्दों पर संसद को विचार करना होगा।

लंबित मुकदमों को पक्षकारों की ओर से की गई टिप्पणियों से छूट प्राप्त है : हाईकोर्ट

भाषा। बेंगलुरु

कर्नाटक उच्च न्यायालय ने कहा है कि कोई बयान सही है या मानहानि वाला, इसका पता मुकदमे के निस्तारण के बाद ही चलेगा और लंबित मुकदमों को पक्षकारों द्वारा की गई टिप्पणियों से छूट प्राप्त है। अदालत ने बिहार सरकार बनाम कृपालु शंकर मामले में उच्चतम न्यायालय की ओर से दिए गए आदेश के आधार पर यह फैसला दिया और एक मामले की सुनवाई के दौरान दिए गए बयान के मानहानिकारक होने का आरोप लगाने वाले एक आपराधिक मुकदमे का निस्तारण कर दिया। कलव्वा नामक महिला ने यलप्पा और मनोज कुमार नामक व्यक्तियों के खिलाफ एक शिकायत दर्ज कराते हुए आरोप लगाया था कि उन्होंने अदालत की सुनवाई के दौरान उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियां की थी। दोनों आरोपियों ने इस आपराधिक मुकदमे को रद्द करने का अनुरोध करते हुए उच्च न्यायालय का रुख किया था। कलव्वा और उनकी बहनों ने 2016 में उनके पिता हुचप्पा लक्कनवार द्वारा मनोज कुमार नामक व्यक्ति के पक्ष किए गए 23 एकड़ जमीन के बिक्री विलेख (सेल डीड) को रद्द करने का अनुरोध करते हुए एक मुकदमा दायर किया था। महिला ने आरोप लगाया कि लिखित बयान और साक्ष्य हलफनामे में मनोज कुमार और यलप्पा ने अपमाजनक आरोप लगाए जो भारतीय दंड संहिता की धारा 500 के तहत दंडनीय अपराध है। यलप्पा और मनोज कुमार ने बयान में दावा किया था कि हुचप्पा ने फकीरव्वा से शादी नहीं की थी और कलव्वा तथा उनकी बहनें हुचप्पा की बेटियां नहीं हैं, इसलिए उनका संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं है।

एनओएस मामले में न्यायालय का फैसला हर मामले में लागू नहीं होता: सीबीआईसी

नई दिल्ली। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने अपने क्षेत्रीय कार्यालयों से कहा है कि कर्मचारियों के अस्थाई रूप से अन्य विभाग या दूसरे जगह काम करने (सेकेंडमेंट ऑफ एम्प्लॉयज) को लेकर उच्चतम न्यायालय के नार्दर्न ऑपरेटिंग सिस्टम (एनओएस) मामले में दिए गए निर्णय को मामला-दर-मामला आधार पर सोच-विचार कर लागू करे। उसे यांत्रिक रूप से लागू करने की जरूरत नहीं है।

सीबीआईसी ने कहा है कि गतिविधियों के रूप में सेकेंडमेंट सेवा कर तक ही सीमित नहीं है और इस पर कर का मुद्दा जीएसटी में भी उठेगा। सेकेंडमेंट ऑफ एम्प्लॉयज से आशय नियोक्ता और कर्मचारियों के बीच समझौते से है, जिसके तहत कर्मचारी को अन्य जगह या विभाग में निर्धारित अवधि के लिए काम करना होता है। जीएसटी अधिकारियों ने हाल ही में उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद कर्मचारियों की नियुक्ति को लेकर विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों को नोटिस जारी किया है। फैसले में कहा गया था कि विदेशी समूह की कंपनी द्वारा एनओएस में कर्मचारियों की नियुक्ति श्रमबल आपूर्ति की कर योग्य सेवा थी और उस पर सेवा कर लागू होता है। सीबीआईसी ने कहा कि गतिविधियों के रूप में सेकेंडमेंट सेवा कर तक ही सीमित नहीं है। सेकेंडमेंट पर कर योग्यता का मुद्दा जीएसटी में भी उठेगा। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड ने कहा कि एनओएस मामले में निर्णय को ध्यान से पढ़ने से पता चलता है कि उच्चतम न्यायालय का जोर प्रत्एक निर्धारित व्यवस्था की अनूठी विशेषताओं के आधार पर एक सूक्ष्म परीक्षण पर है। उसका मकसद समान रूप से इसे संबद्ध मामलों पर लागू करना नहीं है। सीबीआईसी ने कहा कि विदेशी समूह की कंपनी के कर्मचारियों को भारतीय इकाई में नियुक्त करने के संबंध में कई तरह की व्यवस्थाएं हो सकती हैं। प्रत्एक व्यवस्था में, कर निहितार्थ भिन्न हो सकते हैं, जो अनुबंध की विशिष्ट प्रकृति और उससे जुड़े अन्य नियमों और शर्तों पर निर्भर करता है।

बोर्ड ने कहा, इसीलिए, एनओएस मामले में न्यायालय के निर्णय को सभी मामलों में यांत्रिक रूप से लागू नहीं किया जाना चाहिए। प्रत्एक मामले में जांच को लेकर जीएसटी के तहत कर योग्यता या इसकी सीमा तथा शीर्ष अदालत के फैसले के जरिए निर्धारित सिद्धांतों की उपयोगिता निर्धारित करने के लिए विदेशी कंपनी और भारतीय इकाई के बीच अनुबंध की शर्तों सहित इसके विशिष्ट तथ्यों पर सावधानीपूर्वक विचार करने की जरूरत है। ईवाई के कर भागीदार सौरभ अग्रवाल ने कहा कि इस परिपत्र से करदाताओं को बहुप्रतीक्षित राहत मिली है। क्योंकि यह उस परिस्थिति में संभावित रूप से भुगतान किए गए कर पर पूरा इनपुट कर क्रेडिट की अनुमति देता है जब धारा 74 के तहत कार्यवाही शुरू नहीं हुई है। उन्होंने कहा, जो भी हो, विभाग विभिन्न प्रकार की सेकेंडमेंट व्यवस्था को समझता है। यह विशिष्ट मामले के आधार पर विभिन्न कर निहितार्थों की संभावना को सामने लाता है। यह विभाग को मामले के आधार पर दृष्टिकोण अपनाने सुझाव देता है। इसमें साफ है कि न्यायालय का फैसला हर जगह लागू नहीं होगा।

महिला को निर्वस्त्र घुमाए जाने से नाराज कोर्ट ने पूछा

क्या हम लोग 17वीं सदी में लौट रहे हैं?

बेंगलुरु। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने बेलगावी जिले के एक गांव में एक महिला को निर्वस्त्र घुमाने की घटना को असाधारण मामला बताते हुए नाराजगी जाहिर की और कहा कि इस मामले में सख्ती से निपटा जाएगा। अदालत ने यह सवाल भी किया, क्या हम 21वीं सदी में जा रहे हैं या 17वीं सदी में वापस लौट रहे हैं। महिला का बेटा 11 दिसंबर की तड़के उस लड़की के साथ भाग गया था जिसकी सगाई किसी और से होने वाली थी। इसके बाद महिला के साथ कथित तौर पर मारपीट की गई, उसे निर्वस्त्र कर घुमाया गया और बिजली के खंभे से बांध दिया गया। एक खंडपीठ ने बेलगावी के पुलिस आयुक्त और सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) को अतिरिक्त रिपोर्ट दाखिल करने के लिए 18 दिसंबर को व्यक्तिगत रूप से अदालत में उपस्थित होने का निर्देश दिया। महाधिवक्ता ने बृहस्पतिवार को मुख्य न्यायाधीश प्रसन्ना बी. वराले और न्यायमूर्ति कृष्ण एस. दीक्षित की खंडपीठ के समक्ष इस घटना को लेकर की गई कार्वाई से संबंधित एक ज्ञापन और कुछ दस्तावेज रखे। पीठ ने आदेश दिया, कम से कम हम यह कह सकते हैं कि घटना के बाद जिस तरह से चीजें हुईं, उससे हम संतुष्ट नहीं हैं। महाधिवक्ता ने अतिरिक्त रिपोर्ट सौंपने के लिए कुछ समय मांगा है। इसके मद्देनजर महाधिवक्ता को सोमवार को एक अतिरिक्त स्थिति रिपोर्ट रिकॉर्ड पर रखने की अनुमति दी जाती है। उच्च न्यायालय ने यह भी निर्देश दिया कि दोषियों को तुरंत गिरफ्तार किया जाए। इस घटना पर नाराजगी जताते हुए उच्च न्यायालय ने कहा, यह हम सभी के लिए शर्म की बात है। आजादी के 75 साल बाद भी हम इस तरह की स्थिति की उम्मीद नहीं कर सकते। यह हमारे लिए एक सवाल है कि क्या हम 21वीं सदी में जा रहे हैं या 17वीं सदी में वापस लौट रहे हैं?

कर विभाग दे जीएसटीआर फॉर्म में गलतियों को दूर करने की मंजूरी

मुंबई। बंबई उच्च न्यायालय ने बृहस्पतिवार को कर विभाग से कहा कि अगर फॉर्म भरने में अनजाने में या प्रामाणिक गलती हुई हो लेकिन उससे सरकारी खजाने को कोई नुकसान न हो रहा हो तो कंपनियों को जीएसटीआर-। फॉर्म में संशोधन या बदलाव करने की अनुमति दी जानी चाहिए। न्यायमूर्ति जीएस कुलकर्णी और न्यायमूर्ति जितेंद्र जैन की खंडपीठ ने अपने आदेश में कहा कि कर विभाग को ऐसी अनजानी और वास्तविक गलतियों को पहचानना चाहिए, खासकर तब जब उसे पता हो कि सरकार को इससे राजस्व का कोई नुकसान नहीं हुआ है। अदालत ने कहा, "विभाग को ऐसे मामलों में बेवजह मुकदमेबाजी से बचने और प्रणाली को करदाता के अधिक अनुकूल बनाने की जरूरत है। इस तरह के दृष्टिकोण से करों के संग्रह में राजस्व के हित को भी बढ़ावा मिलेगा।

पेज एक का शेष

लोकतंत्र पर...

के बाद संसद सुरक्षा उल्लंघन की घटना की जांच का आदेश दिया है। गृह मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने कहा कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के महानिदेशक अनीश दयाल सिंह की अध्यक्षता वाली जांच समिति, अन्य सुरक्षा एजेंसियों के सदस्यों और विशेषज्ञों के साथ संसद की सुरक्षा में चूक का पता लगाएगी और कार्रवाई की सिफारिश करेगी। बिरला ने कहा कि बुधवार को सदन में जो हुआ उससे सभी चिंतित हैं और उन्होंने कहा कि संसद परिसर की सुरक्षा लोकसभा सचिवालय की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि यह हमारा अधिकार क्षेत्र है और उन्होंने विपक्षी सदस्यों से कहा कि वह उनके साथ सुरक्षा उल्लंघन के मुद्दे पर फिर से चर्चा करने के लिए तैयार हैं। सदन के उपनेता और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सभी को एक साथ आकर घटना की निंदा करनी चाहिए और सदन में विरोध करने का कोई मतलब नहीं है। हंगामे के बीच सिंह ने कहा कि सभी ने इसकी निंदा की है। हमें सावधान रहने की जरूरत है... हमें गड़बड़ी पैदा करने वालों को पास नहीं देना चाहिए।

एमएचए सक्रिय...

क्रमश: आतंकवाद विरोधी कानून गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) की धारा 16 और 18 को आतंकवाद और आतंकवाद की साजिश से संबंधित जोड़ा है। पुलिस ने कहा कि उनका अधिकार गैलरी तक ही सीमित था। वे (आगंतुक) गैलरी से वेल में कूद गए, जो अतिक्रमण था। उन्होंने धुएं का केनअपने जूतों में छिपा लिया था। विशाल शर्मा उर्फ विक्की, जिसके घर पर आरोपी संसद पहुंचने से पहले गुरुग्राम में रुके थे, अभी भी हिरासत में है। सूत्रों के मुताबिक जांच के दौरान दो और लोगों की भूमिका भी सामने आई है, सभी आरोपियों ने अपनी फुलप्रूफ योजना के तहत सब कुछ किया। पुलिस ने यूएपीए की धारा 16 (आतंकवादी कृत्य के लिए सजा) और 18 (साजिश आदि के लिए सजा) और आईपीसी की धारा 120बी (आपराधिक साजिश), 452 (अतिक्रमण), 153 (दंगा भड़काने के इरादे से जानबूझकर उकसाना) के तहत मामला दर्ज किया है। संसद मार्ग पुलिस स्टेशन में 186 (सार्वजनिक कार्यों के निर्वहन में लोक सेवक को बाधा पहुंचाना) और 353 (लोक सेवक को उसके कर्तव्य के निर्वहन से रोकने के लिए हमला या आपराधिक बल)। गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम के तहत दंडनीय अपराध गैर-जमानती हैं। सूत्रों ने कहा कि गिरफ्तार किए गए सभी चार लोगों- सागर शर्मा (26), मनोरंजन डी (34), अमोल शिंदे (25) और नीलम देवी (37) की मेडिकल जांच राम मनोहर लोहिया अस्पताल के डॉक्टरों की एक टीम ने आधी रात को की। चारों आरोपियों से डिप्लोमेटिक सिक्योरिटी फोर्स के चाणक्यपुरी स्थित कार्यालय में पूछताछ की गई। शुरुआत में नीलम और अमोल को संसद मार्ग पुलिस स्टेशन ले जाया गया और बाद में, उन्हें डीएसएफ कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया। पुलिस सूत्रों ने कहा कि ऐसा लगता है कि उन्होंने पहले से ही तैयारी कर रखी थी कि पकड़े जाने पर पुलिस उनसे पूछताछ करेगी तो उन्हें क्या जवाब देना है। प्रारंभिक पूछताछ से पता चलता है कि सुरक्षा उल्लंघन की तारीख 13 दिसंबर ललित झा के निर्देश पर तय की गई थी। यह तारीख महत्वपूर्ण थी क्योंकि यह पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूहों द्वारा पुराने संसद भवन पर हमले की 22वीं बरसी थी, जिसमें नौ लोग मारे गए थे। उन्होंने कहा, बुधवार को संसद में आश्चर्यजनक उल्लंघन कम से कम 18 महीने की सावधानीपूर्वक बनी योजना और आरोपियों के बीच कई बैठकों का परिणाम था, जिनमें से सभी अलग-अलग राज्यों से थे, लेकिन उनमें एक सामान्य लिंक था, 'भगत सिंह फैन क्लब' नामक एक सोशल मीडिया पेज। दिल्ली पुलिस ललित को पकड़ने के लिए छापेमारी कर रही है, जो पेशे से शिक्षक है और सुरक्षा उल्लंघन का मुख्य साजिशकर्ता माना जा रहा है। क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह से प्रभावित होकर, कोलकाता निवासी ललित और अन्य लोग ऐसा कार्य करने के लिए अत्यधिक प्रेरित हुए जो देश का ध्यान आकर्षित कर सके। ललित ने बाद में घटना का वीडियो अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट किया और इसे नीलम के तुरंत बाद समूह के विशाल शर्मा उर्फ विक्की के साथ भी साझा किया। अधिकारी ने बताया कि अमोल को संसद के बाहर से हिरासत में लिया गया। ललित की आखिरी लोकेशन राजस्थान-हरियाणा बॉर्डर पर नीमराणा में मिली थी। बुधवार को 2001 के संसद आतंकवादी हमले की बरसी पर एक बड़े सुरक्षा उल्लंघन में, सागर और मनोरंजन शून्यकाल के दौरान सार्वजनिक गैलरी से लोकसभा कक्ष में कूद गए, कनस्तरों से रंगीन धुआं छोड़ा और कुछ सांसदों द्वारा पकड़े जाने से पहले नारे लगाए। लगभग उसी समय, अमोल और नीलम ने संसद परिसर के बाहर 'तानाशाही नहीं चलेगी' चिल्लाते हुए केन से रंगीन धुआं छिड़का। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि स्पेशल सेल की जांच में दो संगठनों के नाम भी सामने आए हैं और उनकी भूमिका की जांच की जा रही है, उन्होंने कहा कि सभी आरोपी जांच टीम को एक ही जवाब दे रहे हैं।

भारत को...

खत्म कर दिया। यही मोदी की गारंटी है और इसी संकल्प को आगे बढ़ाने के लिए विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन प्रदेश की हर ग्राम सभा में किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य यही है कि जो लोग सरकार की योजनाओं से लाभान्वित हुए हैं वो अपने अनुभव मेरी कहानी मेरी जुबानी के माध्यम से अभिव्यक्त करें। उन्होंने कहा कि जो लोग योजनाओं से अब तक लाभान्वित नहीं हुए हैं, उनके लिए अलग-अलग काउंटर बनाए गए हैं, जहां वह योजनाओं के लिए पंजीकरण करा सकेंगे और यहां हाथों-हाथ पंजीकरण हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि योजनाओं का लाभ जब जनता को बिना भेदभाव के देने का कार्य होता है, तो उसके पीछे सरकार के संकल्प दिखाई देते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में जनता को योजनाओं का लाभ शत-प्रतिशत मिले, इसके लिए गांव-गांव में विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली जा रही है। उत्तर प्रदेश में 526 वीडियो वैन भी इस कार्य में लगाई गई हैं। मुख्यमंत्री ने आजमगढ़ का जिक्र करते हुए कहा कि इस जिले में अब भय और आतंक नहीं बल्कि विकास है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में लाखों करोड़ रुपए का निवेश होने जा रहा है, जिससे रोजगार के नए अवसरों का सृजन होगा। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन से पहले छोटे बच्चों का अन्नप्राशन संस्कार संपन्न कराया। साथ ही धात्री महिलाओं को पोषण पोटली भी वितरित की। इस मौके पर विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों ने मंच से अपने अनुभवों को साझा किया।

संसद में...

कदाचार को सदन और इस अध्यक्ष के अधिकार की घोर उपेक्षा करते हुए और अध्यक्ष द्वारा नामित किए जाने पर ... को सदन से निलंबित कर दिया जाए। इसके बाद सदन की कार्यवाही दोपहर 3 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। दोपहर 3 बजे जैसे ही सदन की कार्यवाही शुरू हुई, जोशी ने वीके श्रीकंदन (कांग्रेस), बेनी बेहानन (कांग्रेस), मोहम्मद जावेद (कांग्रेस), पीआर नटराजन (सीपीआई-एम), कनिमोझी (डीएमके), के सुब्बारायण (सीपीआई), एसआर पार्थिबन (डीएमके), एस वेंकटेशन (सीपीआई-एम) और मनिकम टैगोर (कांग्रेस)को निलंबित करने के लिए दूसरा प्रस्ताव पेश किया। एक सांसद ने बाद में दावा किया कि प्रथिबन का नाम निलंबित सांसदों में शामिल किया गया था, जबकि वह दिल्ली में मौजूद नहीं हैं और चेन्नई में हैं। सदन को शुक्रवार को फिर से मिलने के लिए स्थगित कर दिया गया। सरकार ने बाद में डीएमके सांसद एसआर पार्थिबन का लोकसभा से निलंबन वापस ले लिया क्योंकि वह सदन में मौजूद नहीं थे और उनका नाम गलती से निलंबित होने वालों में शामिल हो गया था। संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने कहा कि पार्थिबन का नाम निलंबित लोकसभा सदस्यों की सूची से वापस ले लिया गया है क्योंकि सदस्य की पहचान करने में कर्मचारियों से गलती हो गई थी। जोशी ने कहा, 'मैंने स्पीकर से सदस्य का नाम हटाने का अनुरोध किया है क्योंकि यह गलत पहचान का मामला था।' स्पीकर ने सुझाव पर सहमति जताई है। इस बीच, निलंबित कुछ सदस्यों ने स्थगन के बाद भी सदन में विरोध जारी रखा। कुछ देर बाद उनमें से कुछ बाहर आ गए। 4 दिसंबर से शुरू हुआ संसद का शीतकालीन सत्र 22 दिसंबर को समाप्त होगा। एक बयान में संसदीय कार्य मंत्री जोशी ने कहा, 'हम सभी सहमत हैं' कि बुधवार की दुर्भाग्यपूर्ण घटना सांसदों की सुरक्षा से संबंधित एक गंभीर घटना थी। जोशी ने कहा कि इसकी सराहना की जानी चाहिए कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने घटना के बाद तुरंत सदन के नेताओं के साथ बैठक की और संसद की सुरक्षा को और मजबूत करने के सुझावों को सुना। उन्होंने कहा कि सांसदों द्वारा दिए गए कुछ सुझावों को पहले ही लागू किया जा चुका है और अध्यक्ष ने खुद कहा है कि संसद की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए और कदम उठाए जाएंगे। जोशी ने कहा, 'मेरी राय में यह मामला हम सभी से संबंधित है और हमें एक स्वर में बोलना होगा। मंत्री ने कहा कि ऐसे 'गंभीर राष्ट्रीय मुद्दे' पर किसी से भी राजनीति करने की उम्मीद नहीं की जाती है। जोशी ने सभी सांसदों से दलगत राजनीति से ऊपर उठने का आह्वान किया। उन्होंने पिछली घटनाओं का भी जिक्र किया जब संसद में सुरक्षा का ऐसा उल्लंघन हुआ है। उन्होंने कहा कि नारेबाजी, कागजात फेंकना और गैलरी से कूदने जैसी घटनाएं पहले भी हुई हैं। उन्होंने कहा कि अतीत में भी ऐसी कई घटनाएं हुई हैं। मैं पिछली घटनाओं की तुलना नहीं कर रहा हूं और कल की घटना का बचाव कर रहा हूं लेकिन हमें अतीत से सबक सीखना होगा।' जोशी ने कहा, 11 अप्रैल 1974 को एक व्यक्ति ने दर्शक दीर्घा से नारे लगाए, इसके अलावा उसके पास दो पिस्तौल, बम जैसी दिखने वाली एक वस्तु और कुछ पर्चे थे। उन्होंने कहा कि 26 जुलाई 1974 को दर्शक दीर्घा में घुसने की कोशिश कर रहे एक व्यक्ति को खंजर के साथ पकड़ा गया था। उन्होंने बताया कि 26 नवंबर 1974 को एक व्यक्ति दर्शक दीर्घा में एक विस्फोटक और एक खंजर ले गया। जोशी ने कहा, 9 और 10 जनवरी, 1999 को दो लोग सार्वजनिक गैलरी से लोकसभा कक्ष में कूद गए। यह कहते हुए कि अध्यक्ष संसद भवन परिसर का संरक्षक है, मंत्री ने कहा कि संसद भवन की आंतरिक सुरक्षा अध्यक्ष के दायरे में है। जोशी ने कहा, मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि अतीत में भी ऐसे सभी मामलों को अध्यक्ष के निर्देशों के अनुसार निपटाया गया है... यह घटना स्पष्ट रूप से इस सदन की गंभीर अवमानना है और यह सदन इसके अनुसार निपटने के लिए स्वतंत्र है। उन्होंने कहा कि अन्य कानूनों के उल्लंघन के दृष्टिकोण से, उपयुक्त एजेंसियां देश के कानून के अनुसार इस घटना से निपटेंगी। मंत्री ने सदन को बताया कि अध्यक्ष ने उच्च स्तरीय जांच के लिए गृह सचिव को पत्र लिखा है और जांच शुरू हो चुकी है। जोशी ने यह भी कहा कि सभी मुद्दों का राजनीतिकरण करना कुछ सदस्यों की आदत बन गयी है। उन्होंने कहा, 'मैं उनसे अनुरोध करता हूं कि वे इस मुद्दे का राजनीतिकरण न करें।'उन्होंने कहा कि स्पीकर और सरकार दोनों इस मामले को संवेदनशीलता से निपटा रहे हैं। राज्यसभा में ओ ब्रायन को सभापति जगदीप धनखड़ ने 'अनियंत्रित व्यवहार' और 'दुर्व्यवहार' के लिए शीतकालीन सत्र के शेष समय के लिए निलंबित कर दिया। सदन के नेता पीयूष गोयल ने इस संबंध में एक प्रस्ताव रखा, जिसे सदन ने पारित कर दिया। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सांसद डेरेक ओ ब्रायन के निलंबन पर विपक्षी सदस्यों के विरोध के बीच राज्यसभा की कार्यवाही शुक्रवार तक के लिए स्थगित कर दी गई।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि

है। अदालत के विचाराधीन दो मुद्दे आए। वे यह थे कि क्या आयोग गठित करने के आवेदन से पहले इस आवेदन को खारिज करने की याचिका पर निर्णय लिया जाए या आयोग गठित करने के आवेदन पर पहले निर्णय लिया जाए। पहले मुद्दे पर अदालत का विचार था, इस अदालत को प्रतिवादी संख्या एक और दो (मुस्लिम पक्ष) के वकीलों की इस दलील में कोई दम नहीं दिखती कि याचिका खारिज करने के आवेदन पर पहले निर्णय लिया जाए। याचिका खारिज करने के लिए आवेदन उस तिथि को किया गया था जब इस मामले में वादकारियों द्वारा आयोग के गठन के लिए दायर याचिका पर सुनवाई की तारीख तय की गई थी। अदालत के आदेश में कहा गया है कि व्यवहार प्रक्रिया संहित के आदेश 16 के नियम 9 के तहत अदालत विवादित मामले को हल करने और विवादित संपत्ति की वास्तवित एवं तथ्यात्मक स्थिति सामने लाने के उद्देश्य से स्थानीय जांच कराने के लिए आयोग का गठन कर सकती है। संपूर्ण तथ्यों पर गौर करने के बाद अदालत का मत था कि आयोग के गठन के लिए आवेदन पर निर्णय करने से पूर्व उप्र सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड और इंतेजामिया मस्जिद कमेटी द्वारा इस आवेदन को खारिज करने की याचिका पर पहले निर्णय करने को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

महाराष्ट्र के गड़चिरोली में पुलिस के साथ मुठभेड़ में दो नक्सली हुए ढेर

भाषा। नागपुर

पूर्वी महाराष्ट्र के गड़चिरोली जिले में बृहस्पतिवार को पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में दो नक्सली ढेर हो गए, जिनमें 2019 में जंबुलखेड़ा विस्फोट में शामिल रहा एक नक्सली भी है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने कहा कि 2019 में जंबुलखेड़ा विस्फोट के मुख्य षडयंत्रकारियों में शामिल एवं कसानसुर दलम (दस्ता) का उप कमांडर दुर्गेश वट्टी मुठभेड़ में मारे गए दो नक्सलियों में से एक है। 2019 में हुए विस्फोट में गडचिरोली पुलिस के 15 पुलिसकर्मियों की जान चली गई थी।

जिला पुलिस अधीक्षक नीलोत्पल ने बताया कि पुलिस को खुफिया जानकारी मिली थी कि नक्सलियों का एक बड़ा समूह छत्तीसगढ़ सीमा पर गोदलवाही चौकी के निकट बोधिनटोला के पास कुछ गड़बड़ी करने और पुलिस बलों पर घात लगाकर हमला करने के मंसूबे से डेरा डाले हुए है। उन्होंने एक विज्ञप्ति में कहा कि तलाश अभियान के दौरान नक्सलियों ने पुलिस दल पर गोलीबारी की। उन्होंने बताया कि करीब एक घंटे तक हुई गोलीबारी खत्म होने के बाद वट्टी और एक अन्य पुरुष नक्सली के शव मुठभेड़ स्थल पर मिले। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि एक एके-47 राइफल और एक सेल्फ-लोडिंग राइफल (एसएलआर) भी बरामद की गई है। उन्होंने बताया कि इलाके में खोजबीन अभियान जारी है।

नक्सलियों के विस्फोट में बीएसएफ का जवान शहीद

कांकेर। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित कांकेर जिले में बृहस्पतिवार को नक्सलियों ने बारूदी सुरंग में विस्फोट कर दिया, जिसमें सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) का एक जवान शहीद हो गया। पिछले दो दिन में इस तरह की यह दूसरी घटना है। पुलिस ने यह जानकारी दी। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह घटना परतापुर पुलिस थाना क्षेत्र के अंतर्गत सड़कटोला गांव के पास उस समय हुई जब बीएसएफ और जिला पुलिस का एक संयुक्त दल को गश्त कर रहा था। उन्होंने बताया कि नक्सलियों द्वारा किए गए विस्फोट में बीएसएफ के प्रधान आरक्षक अखिलेश राय (45) घायल हो गए। अधिकारी ने बताया कि घटना के बाद राय को प्रारंभिक उपचार दिया गया और बेहतर इलाज के लिए पखांजूर भेजा गया, लेकिन उन्होंने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। उन्होंने बताया कि शहीद जवान उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे।

मप्र विधानसभा का पहला सत्र 18 दिसंबर से

नवनियुक्त प्रोटेम स्पीकर गोपाल भार्गव को बधाई देते राज्यपाल और मुख्यमंत्री

भाषा। भोपाल

नवगठित मध्यप्रदेश विधानसभा का पहला सत्र यहां 18 दिसंबर से शुरू होगा जिसमें नवनिर्वाचित विधायक शपथ लेंगे। एक अधिकारी ने गुरुवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने कहा, 16वीं विधानसभा के चार दिवसीय सत्र के दौरान नवनिर्वाचित सदस्य शपथ लेंगे और सदन के अन्य आवश्यक कामकाज निपटाए जाएंगे। यह सत्र 21 दिसंबर को समाप्त होगा।

इससे पहले दिन में, राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सबसे वरिष्ठ विधायक गोपाल भार्गव को नए विधायकों को पद की शपथ दिलाने और छोटे सत्र के दौरान सदन के कामकाज का संचालन करने के लिए प्रोटेम स्पीकर नियुक्त किया।

पटेल ने यहां राजभवन में मुख्यमंत्री मोहन यादव और अन्य की उपस्थिति में आयोजित एक समारोह में भार्गव को पद की शपथ दिलाई। प्रोटेम स्पीकर एक अस्थाई विधानसभा अध्यक्ष होता है जिसे नियमित स्पीकर (विधानसभा अध्यक्ष) की अनुपस्थिति में सदन की कार्यवाही संचालित करने के लिए सीमित समय के लिए नियुक्त किया जाता है। आमतौर पर सदन के सबसे वरिष्ठ सदस्य को प्रोटेम स्पीकर नियुक्त किया जाता है। उज्जैन दक्षिण से तीन बार के भाजपा विधायक मोहन यादव ने बुधवार को दो विधायकों, जगदीश देवड़ा और राजेंद्र शुक्ला के साथ मध्य प्रदेश के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।

पिछले महीने हुए मप्र विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 230 सीट में से 163 सीट हासिल करके राज्य में अपनी सत्ता बरकरार रखी। विपक्षी कांग्रेस 66 विधानसभा क्षेत्रों में जीत के साथ दूसरे स्थान पर खिसक गई, जबकि एक सीट भारत आदिवासी पार्टी ने जीती।

गोपाल भार्गव मप्र विधानसभा के प्रोटेम स्पीकर नियुक्त

भोपाल। मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सबसे वरिष्ठ विधायक गोपाल भार्गव को नवगठित विधानसभा का स्थाई अध्यक्ष (प्रोटेम स्पीकर) नियुक्त किया। पटेल ने यहां राजभवन में आयोजित एक समारोह में मुख्यमंत्री मोहन यादव और अन्य लोगों की उपस्थिति में भार्गव को पद की शपथ दिलाई। पिछले माह हुए विधानसभा चुनावों में, भार्गव (71) ने लगातार नौवीं बार सागर जिले के अपने क्षेत्र रहली से जीत हासिल की। प्रोटेम स्पीकर एक अस्थाई अध्यक्ष होता है जिसे नियमित अध्यक्ष की अनुपस्थिति में सदन की कार्यवाही संचालित करने के लिए सीमित समय के लिए नियुक्त किया जाता है। आमतौर पर सदन के सबसे वरिष्ठ सदस्य को प्रोटेम स्पीकर बनाया जाता है। उज्जैन दक्षिण निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले मोहन यादव ने बुधवार को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।

ईडी ने 2014 से अब तक 1.16 लाख करोड़ रुपए से अधिक की अपराध से अर्जित आय को अस्थाई रूप से कुर्क किया: सरकार

नई दिल्ली। सरकार ने बृहस्पतिवार को राज्यसभा में बताया कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 2014 से अब तक 1.16 लाख करोड़ रुपए से अधिक की अपराध से अर्जित आय को अनंतिम रूप से कुर्क किया है।

केंद्रीय कार्मिक राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने भारतीय जनता पार्टी के सदस्य सुशील कुमार मोदी की ओर से पूछे गए एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कहा कि ईडी ने एक जनवरी 2019 से अब तक चार लोगों को भारत प्रत्यर्पित किया है और सक्षम अदालतों ने तीन और लोगों के प्रत्यर्पण का आदेश जारी किया है।

PUBLIC NOTICE

To be known to all that I, **SURINDER SINGH S/O SARDAR MOHAN SINGH, R/O E-9, MOTI NAGAR, DELHI**, I have LOST MY ORIGINALS BANK CHALLAN, DEMAND LETTER POSSESION LETTER, SITE POSSESION LETTER, PERPETUAL LEASE DEED OF MY DDA PROPERTY BEARING NO. 47, BLK & PKT A-6, SEC-28 ROHINI, DELHI. Any person claiming any rights, interest, having any objection or found in possession of original documents, may write/ contact with above named person at above address/phone 9954477715 within **7 days** from the date of publication of this notice. The person claiming any right, interest, objections with respect to this property can personally inform me.

PUBLIC NOTICE

MY CLIENT MR. SANDEEP KUMAR S/O SH. DINESH KUMAR IS THE OWNER OF TWO RESIDENTIAL PLOT OF AREA 50 SQ. YDS. & 50 SQ. YDS. OUT OF KHASRA NO. 60, VILLAGE CHARANDAS PARGANA & TEHSIL DADRI, DISTRICT- GAUTAM BUDH NAGAR, U.P. VIDE REGISTERED GIFT DEED VIDE REGISTRATION NO. 11184 & 11178, DATED- 12.12.2023 AT SR- NOIDA-I, GBN. U.P. EXECUTED BY SMT. PREM W/O SH. DINESH KUMAR & THIS ABOVE- MENTIONED PROPERTY IS GOING TO BE MORTGAGE WITH FED BANK FINANCIAL SERVICES LIMITED. IF ANY PERSON/BANK/FINANCIAL INSTITUTION HAVING ANY CLAIM/RIGHT, LIEN, ANY OBJECTION WHATSOEVER IN REGARD TO ABOVE PROPERTY, SHOULD NOTIFIED TO THE UNDERSIGNED/ADV.VISHAL MEHAN E-713 KARKARDOOMA COURT DELHI-110092 ALONG WITH DOCUMENTARY EVIDENCE UNDER ADDRESS THROUGH REGISTERED A/D WITHIN 07 DAYS FROM THE DATE OF PUBLICATION OF THIS NOTICE FAILING WHICH ANY CLAIM, LIEN OR OBJECTION SHALL BE DEEMED TO HAVE BEEN WAIVED.

VISHAL MEHAN,
E-713, KARKARDOOMA COURT,
DELHI-110092

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given that my client Mr. Deepak Garg and Mrs. Sandhya Guptais/are in process to purchase the Built Up Flat No. 706-A on 7th Floor, having its covered area measuring 1048.30 sq. fts., in project name "Supertech Avant Garde", built on Plot No. 01, Situated at Sector-05, Residential Colony, Vaishali, Tehsil & Distt. Ghaziabad, U.P.(availing loan from RBL Bank) from Shilpa Deepak Chaturvedi, whereas she acquired the same vide gift deed dated 13.12.23 executed by Shikha Anil Saklani, Shekhar Srivastava and Shalini Srivastava (Doc No.13271)
All person/s having any claim against or in respect of the said Property, or any part thereof, by way of sale, exchange, mortgage (equitable/registered or otherwise), gift, trust, inheritance, family arrangement, maintenance, bequest, partnership, possession, lease, sublease, tenancy, license, lien, charge, pledge, easement or otherwise howsoever, are hereby requested to notify the same in writing to us with supporting documentary evidence at the address mentioned below within 7 days from the date hereof, failing which the claim or claims, if any, of such person or persons will be considered to have been waived and/or abandoned.

Kamal Kant Gupta (Advocate)
Unit No. FF-2, First floor, Mahaluxmi Metro Tower
Sec-4, Vaishali, Gzb., U.P., Mob. 9810063351

क्विक न्यूज

पारंपरिक ज्ञान विधाओं पर शोध के पक्ष में संसदीय समिति

नई दिल्ली। संसद की एक समिति ने कहा है कि वैदिक गणित जैसी भारत की पारंपरिक ज्ञान विधाओं पर शोध के दस्तावेजीकरण और इसके प्राचीन ज्ञान और परंपराओं के संरक्षण को अधिक से अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए। भाजपा सांसद विवेक ठाकुर की अध्यक्षता वाली शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल संबंधी संसद की स्थाई समिति ने कहा है कि भारत की पारंपरिक ज्ञान विधाओं पर शोध व अनुसंधान न केवल देश की प्राचीन विरासत को समृद्ध करता है बल्कि स्वास्थ्य देखभाल, कृषि और समकालीन चुनौतियों का व्यवहारिक समाधान भी प्रदान करता है। समिति ने परम्परागत ज्ञान विधाओं पर शोध की वकालत करते हुए कहा कि वह भारत की पारंपरिक ज्ञान विधाओं में शोध को प्राथमिकता देने की सिफारिश करती है। इस समिति ने वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ओएनओएस) की पहल के संभावित लाभों पर भी विचार किया। इस पहल के तहत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मसैदा विज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति (एसटीआईपी) जैसी राष्ट्रीय नीतियों के साथ शोध को बढ़ावा दिया गया है।

राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस कल से

गाजियाबाद। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का 31वां राज्य स्तरीय संस्करण (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) 16 से 18 दिसंबर तक प्रिंस इंस्टीट्यूट ऑफ इन्नोवेटिव टेक्नालॉजी (पीआईआईटी) ग्रेटर नोएडा में आयोजित किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए नोडल एजेंसी इंडियन साइंस कम्यूनिकेशन सोसाइटी के अधिशाषी सचिव और राज्य समन्वयक एकेडमिक डॉ. वीपी सिंह ने बताया कि इसमें प्रदेश के 38 जिलों के बाल विज्ञानी प्रतिभाग करेंगे। राज्य समन्वयक दीपक शर्मा ने बताया कि भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की संस्था राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटीसी) की ओर से आयोजित इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में कई वरिष्ठ वैज्ञानिक भी बच्चों का मार्गदर्शन करेंगे। जिनमें डॉ. मनोज कुमार धर, डॉ. नफीस अहमद भी शामिल होंगे।

आदिवासियों की जमीन हड़पने का विधायक पर मुकदमा

हैदराबाद। भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के विधायक सी. मल्ला रेड्डी और सात अन्य के खिलाफ पड़ोसी मेडचल मल्काजगिरि जिले में अनुसूचित जनजाति समुदाय के लोगों को उनकी जमीन से गलत तरीके से बेदखल करने व उस जमीन पर कब्जा करने के आरोप में एक मामला दर्ज किया गया है। एक आदिवासी व्यक्ति की शिकायत के आधार पर, मल्ला रेड्डी और उनके सहयोगियों के खिलाफ छह दिसंबर को शमीरपेट पुलिस थाने में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 420 (धोखाधड़ी) और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था। रेड्डी ने इसपर प्रतिक्रिया व्यक्त करते सफाई देकर कहा कहा कि आदिवासियों की इस जमीन से उनका कोई संबंध नही है और वह इस संबंध में अदालत का रुख करेंगे। शिकायतकर्ता के अनुसार, उसके परिवार के पास केशवराम गांव में 47 एकड़ जमीन थी और संपत्ति उनके बुजुर्गों से विरासत में मिली थी और यह उनकी मां के नाम पर पंजीकृत है। प्राथमिकी में कहा गया है कि तीन नवंबर को, मल्ला रेड्डी और अन्य ने उनसे संपर्क किया और शिकायतकर्ता व उनके परिवार के सात सदस्यों में से प्रत्येक को 3 लाख रुपए देकर कथित तौर पर धोखाधड़ी कर जमीन हड़प ली। शिकायतकर्ता का आरोप है कि उन्होंने उस पर और उसके परिवार का उत्पीड़न भी किया। पुलिस ने कहा कि वह मामले की जांच कर रही है। जांच रिपोर्ट आने पर आवश्यक कार्रवाई की जायेगी।

भाजपा सरकार का असहिष्णु रवैया निन्दनीय : स्टालिन

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने बृहस्पतिवार को भाजपा सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि द्रमुक की सांसद कनिमोई समेत 15 विपक्षी सांसदो का निलंबन अलोकतांत्रिक कदम है। स्टालिन ने भाजपा शासन की असहिष्णुता की निंदा की। सत्तारूढ़ द्रमुक के अध्यक्ष स्टालिन ने मांग की कि सरकार सांसदो के खिलाफ अपनी कार्रवाई रद्द करे। द्रमुक प्रमुख एमके स्टालिन ने एक्स पर एक पोस्ट मे आरोप लगाया, द्रमुक सांसद कनिमोई सहित 15 विपक्षी सांसदो का निलंबन अलोकतांत्रिक है और संसदीय लोकतंत्र की भावना को कमजोर करता है। भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार का असहिष्णु रवैया निंदनीय है। क्या सांसदो की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दमन करना हमारी संसद मे नया मानदंड है? उन्होंने पूछा, हमारे लोकतंत्र के मंदिर मे एक बड़ी सुरक्षा चूक पर जवाब मांगने के लिए जन प्रतिनिधियो को दंडित क्यो किया जा रहा है? हम 15 सांसदो के निलंबन को तत्काल रद्द करने की मांग करते है। संसद को निश्चित रूप से विपक्ष को चुप कराने का नही, बल्कि चर्चा करने का मंच होना चाहिए। निलंबन जैसे कदम स्वस्थ बहस और चर्चा को हतोत्साहित करते हैं।

पंजाब के पटियाला में कई जगहों पर ईडी की छापेमारी

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बृहस्पतिवार को कहा कि उसने पंजाब में कुछ ऐसे लोगों के ठिकानों पर छापेमारी की है जो भारत-म्यांमा सीमा पर सोने की तस्करी करने वाले गिरोह में कथित तौर पर शामिल हैं। ईडी ने एक बयान में यह जानकारी दी। ईडी के बयान के मुताबिक , लक्की सतीजा, सुरिंदर कुमार, मंजोध सिंह चीमा और कुछ अन्य आरोपियों के खिलाफ 12 दिसंबर को पटियाला में सात ठिकानों पर छापे मारे गए।

इन लोगों के खिलाफ धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) की धाराओं के तहत एक मामला दर्ज किया गया है, जो राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) की एक शिकायत पर आधारित है। डीआरआई ने नवंबर, 2020 में अलग-अलग स्थानों पर दो ट्रक को रोका और प्रत्एक ट्रक से सोने की 200 छड़ें बरामद की गई थीं। दोनों ट्रक से कुल 66.4 किलोग्राम सोना बरामद किया गया था, जिसकी कीमत 33.2 करोड़ रुपए आंकी गई थी। ईडी ने कहा कि उसने अपनी छापेमारी के दौरान आपत्तिजनक दस्तावेज़ और डिजिटल उपकरण जब्त किए। एजेंसी ने एक बयान में कहा, लक्की सतीजा, सुरिंदर कुमार और मंजोध सिंह चीमा गुवाहाटी के रास्ते म्यांमा सीमा से भारत में सोने की तस्करी में शामिल एक बड़े गिरोह का हिस्सा हैं।

मप्र में कांग्रेस विधायक दल ने अपना नेता चुनने के लिए खरगे को किया अधिकृत

● कांग्रेस विधायक दल का नेता ही बनेगा विधानसभा नेता प्रतिपक्ष

भाषा। भोपाल

मध्य प्रदेश में कांग्रेस विधायक दल ने बृहस्पतिवार को अपना नेता चुनने के लिए एक पंक्ति का प्रस्ताव पारित कर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को अधिकृत किया। कांग्रेस विधायक दल का नेता ही मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बनेगा।

कांग्रेस के मध्य प्रदेश प्रभारी महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला ने संवाददाताओं से कहा, सभी विधायकों ने एक पंक्ति का प्रस्ताव पारित किया है जिसमें पार्टी अध्यक्ष को अपना नेता चुनने के लिए अधिकृत किया गया है। हमने फिर भी उनसे कहा कि हम इस मुद्दे पर व्यक्तिगत राय लेंगे और भंवर जितेंद्र सिंह और उन्होंने 61 विधायकों से मुलाकात की।

सुरजेवाला ने आगे कहा, उन्होंने पार्टी को मजबूत करने पर भी अपने विचार व्यक्त किए। हमने उनसे विधानसभा के अंदर और बाहर सक्रिय भूमिका निभाने और यह सुनिश्चित करने के लिए कहा है कि विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा द्वारा जनता से किए गए सभी वादे पूरे हों। उन्होंने कहा कि कांग्रेस मध्य प्रदेश के विकास के लिए भाजपा सरकार को सकारात्मक और रचनात्मक समर्थन देगी और और सरकार को उसके कर्तव्यों की याद दिलाएगी। सूत्रों ने कहा कि राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह और पूर्व नेता विपक्ष अजय सिंह सहित वरिष्ठ नेताओं ने बैठक में भाग लिया, जबकि राज्य इकाई प्रमुख कमल नाथ इस बैठक में उपस्थित नहीं थे क्योंकि वह अपने निर्वाचन क्षेत्र छिंदवाड़ा में हैं।

17 नवंबर को हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 230 सदस्यीय सदन में 163 सीट जीतकर मप्र में सत्ता बरकरार रखी, जबकि कांग्रेस 66 सीट पर विजयी हुई जो वर्ष 2018 में उसके द्वारा जीती गई 114 सीट से कम संख्या है।

फर्जी रोजगार प्रस्तावों झांसे में न आएं : विदेश मंत्रालय

नई दिल्ली(भाषा)। विदेश में रोजगार की तलाश कर रहे भारतीयों को सतर्क रहना चाहिए और नौकरी के फर्जी प्रस्तावों के झांसे में नहीं आना चाहिए। विदेश मंत्रालय ने लोगों से बृहस्पतिवार को यह अपील की। मंत्रालय ने रोजगार की तलाश कर रहे लोगों से पंजीकृत भर्ती एजेंट की सुरक्षित और कानूनी सेवाओं का उपयोग करने का भी आग्रह किया। विदेश मंत्रालय ने एक परामर्श जारी कर विदेशों में नौकरियां देने का वादा करने वाली सभी अपंजीकृत एजेंसियों को विदेशी भर्ती में शामिल न होने की चेतावनी देते हुए कहा कि ऐसी गतिविधियां उत्प्रवास अधिनियम 1983 का उल्लंघन हैं और मानव तस्करी के समान हैं, जो एक दंडनीय अपराध है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि यह भी देखा गया है कि विदेश में नौकरी चाहने वालों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है, जिन्हें अपंजीकृत भर्ती एजेंट द्वारा फर्जी नौकरी की पेशकश के जरिए ठगा जाता है।

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given that my clientMr. Vaibhav Jain & Mrs. Parul Jain is in process to purchase the Property Bearing No. A-83, Block A, Area Measuring 249.90 Sq. Mtrs., Situated in Residential Colony Govind Puram Ghaziabad -201013 Tehsil & Distt. Ghaziabad(availing loan from RBL Bank) from Satya Prakash Sharma, Shiv Prakash Sharma, Ravi Prakash Sharma, Vipul Sharma & Arvind Sharma, inherited after the death of their mother Nirmala Sharma, whereas she acquired the same vide Sale Deed dated 11.11.1998 executed by Satya Prakash Sharma on behalf of Sohan Lal Grover (doc. No. 2853)
All person/s having any claim against or in respect of the said Property, or any part thereof, by way of sale, exchange, mortgage (equitable/registered or otherwise), gift, trust, inheritance, family arrangement, maintenance, bequest, partnership, possession, lease, sublease, tenancy, license, lien, charge, pledge, easement or otherwise howsoever, are hereby requested to notify the same in writing to us with supporting documentary evidence at the address mentioned below within 7 days from the date hereof, failing which the claim or claims, if any, of such person or persons will be considered to have been waived and/or abandoned.

Kamal Kant Gupta (Advocate)
Unit No. FF-2, First floor, Mahaluxmi Metro Tower
Sec-4, Vaishali, Gzb., U.P., Mob. 9810063351

कांग्रेस के रात्रिभोज में शामिल होने पर पार्टी के तीन विधायकों से स्पष्टीकरण मांगेगी भाजपा

भाषा। बेलगावी, कर्नाटक

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की कर्नाटक इकाई के अध्यक्ष बी वाई विजयेंद्र ने यहां कांग्रेस द्वारा आयोजित एक रात्रिभोज में अपनी पार्टी के तीन विधायकों के भाग लेने को बृहस्पतिवार को गंभीर विषय बताया और कहा कि वह उनसे स्पष्टीकरण मांगेंगे। कांग्रेस ने विधायक दल की बैठक के बाद रात्रिभोज का आयोजन किया था।

इस मुद्दे पर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष और उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार ने कहा कि भाजपा विधायकों ने किसी बैठक में भाग नहीं लिया, बल्कि उनके निमंत्रण पर बुधवार रात केवल रात्रिभोज में भाग लिया। इन तीन विधायकों में एस टी सोमशेखर और शिवराम हेब्बार तथा विधान परिषद सदस्य एच. विश्वनाथ शामिल हैं। घटनाक्रम से इन अटकलों को बल मिला है कि प्रदेश सरकार में मंत्री रह चुके भाजपा के संबंधित तीनों विधायक 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले सत्तारूढ़ कांग्रेस में शामिल होने पर विचार कर सकते हैं।

इस साल मई में भाजपा के विधानसभा चुनाव हारने के बाद से ही उन्होंने पार्टी और इसके आंतरिक मामलों से अपने मोहभंग की बात को नहीं छिपाया है। ये तीनों नेता कांग्रेस और जद (एस) के उन 17 विधायकों में शामिल थे, जो 2019 में भाजपा में शामिल हो गए थे, जिसके कारण एच डी कुमारस्वामी के नेतृत्व वाली सरकार गिर गई थी और भाजपा के सत्ता में आने का मार्ग प्रशस्त हुआ था। सोमशेखर और हेब्बार पिछली भाजपा सरकार में मंत्री थे।

सोमशेखर और हेब्बार कांग्रेस से भाजपा में शामिल हो गए थे। मूल रूप से कांग्रेस नेता विश्वनाथ जद (एस) में थे और प्रदेश इकाई के अध्यक्ष थे। उन्होंने 2019 में भाजपा का दामन थाना था। विजयेंद्र ने यहां पत्रकारों से कहा, मुझे सुबह इस बारे में सूचना मिली। मैं उनसे आज ही बात करूंगा, मैं उनसे पूछूंगा कि उनके इरादे क्या हैं...यह गंभीर विषय है, मैं आज ही उनसे चर्चा करूंगा। शिवकुमार ने कहा, मैंने अलग से एक रात्रिभोज का आयोजन किया था, जिसके लिए अन्य दलों के नेताओं को भी न्योता दिया गया था, इसलिए वे (सोमशेखर, हेब्बार), विश्वनाथ और अन्य समेत करीब 10 लोग आए थे।

यहां पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा, वे कांग्रेस विधायक दल की बैठक में क्यों आएंगे? वे हमारी पार्टी के विधायक नहीं हैं। वे विधायक दल की बैठक में नहीं आए थे, वे केवल रात्रिभोज के लिए आए थे। विधानसभा में विपक्ष के नेता आर अशोक ने कहा कि वह सोमशेखर से बात करेंगे, क्योंकि पिछले दो-तीन महीनों में विधायक के संबंध में कुछ जानकारी मिली है।

असम में लगभग 1,300 मदरसों को विद्यालयों में तब्दील किया गया

शिक्षण कर्मचारियों के वेतन व सेवा शर्तों में नही होगा कोई बदलाव

भाषा। गुवाहाटी

असम में लगभग 1,300 मिडिल इंग्लिश (एमई) मदरसों को तत्काल प्रभाव से सामान्य एमई स्कूलों में तब्दील कर दिया गया है। राज्य सरकार की ओर से एक आदेश में यह जानकारी दी गई। मिडिल इंग्लिश (एमई) मदरसे अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा उपलब्ध कराते हैं। प्राथमिक शिक्षा विभाग की निदेशक सुरंजना सेनापति द्वारा बुधवार को जारी आदेश में कहा गया है कि प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय के तहत राज्य भर में 1,281 उच्च प्राथमिक एमई मदरसों को तत्काल प्रभाव से एमई स्कूल के रूप में जाना जाएगा।

इससे पहले अप्रैल 2021 में, मदरसा बोर्ड के तहत सभी 610 राज्य संचालित मदरसों को उच्च प्राथमिक, उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में परिवर्तित कर दिया गया था। लेकिन, इसमें शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारियों की स्थिति, वेतन, भत्ते और सेवा शर्तों में कोई बदलाव नहीं होगा। सुरंजना सेनापति ने पीटीआई-भाषा को बताया कि इन लगभग 1,300 मदरसा एमई स्कूलों में नियमित रूप से कक्षाएं जारी हैं और सरकारी निर्देश के अनुसार केवल उनके नामकरण में थोड़ा बदलाव किया गया है। उन्होंने कहा, इन मदरसों में छात्र, शिक्षक और अन्य कर्मचारी हैं। मदरसों में कई वर्षों से कक्षाएं चल रही थीं और यह बिना किसी बदलाव के जारी रहेंगी।

यह पूछे जाने पर कि क्या आदेश जारी होने से पहले तक मदरसों में धर्म संबंधी शिक्षा भी दी जा रही थी, तो सेनापति ने टिप्पणी करने से इनकार कर दिया।

कांग्रेस ने करणपुर सीट पर उम्मीदवार घोषित किया

भाषा। जयपुर

कांग्रेस ने राजस्थान की करणपुर विधानसभा सीट से रूपिंदर सिंह कुन्नर को अपना प्रत्याशी बनाया है जिन्होंने बृहस्पतिवार को पर्चा दाखिल कर दिया। मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने बताया कि करणपुर विधानसभा सीट पर स्थगित चुनाव के लिए कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में रूपिंदर सिंह कुन्नर ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। इस सीट पर अब कांग्रेस प्रत्याशी सहित कुल 12 उम्मीदवार हैं। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस उम्मीदवार और तत्कालीन विधायक गुरमीत सिंह कुन्नर के निधन के कारण करणपुर सीट पर चुनाव स्थगित कर दिया गया था। इस सीट पर मतदान पांच जनवरी को होना है जबकि वोटों की गिनती आठ जनवरी को होगी। यहां केवल कांग्रेस प्रत्याशी को नामांकन करना था। नामांकन 19 दिसंबर तक किया जा सकता है और 22 दिसंबर तक नामांकन पत्र वापस लिया जा सकता है। इस सीट पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की ओर से पूर्व मंत्री सुरेन्द्रपाल सिंह टीटी चुनाव लड़ रहे हैं। करणपुर विधानसभा क्षेत्र में कुल 249 मतदान केंद्र हैं। छह दिसंबर तक यहां 2,40,826 मतदाता थे। पिछले महीने हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 115 सीट जीतीं, जबकि कांग्रेस को 69 सीट मिलीं। इससे पहले कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने इस सीट पर रूपिंदर सिंह को प्रत्याशी बनाए जाने की सूचना दी थी। रूपिंदर इस सीट से पार्टी के विधायक रहे गुरमीत कुन्नर के बेटे हैं। कांग्रेस की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने रूपिंदर को उम्मीदवार घोषित किए जाने की सूचना सोशल मीडिया मंच एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर साझा करते हुए लिखा, कांग्रेस पार्टी ने करणपुर विधानसभा सीट पर चुनाव के लिए रूपिंदर सिंह कुन्नर को प्रत्याशी के रूप में नामित किया है। पार्टी पूरी तरह तैयार है, आपको जीत की अग्रिम शुभकामनाएं।

करण सिंह को एम्स के अतिरिक्त निदेशक बनने पर दीं शुभकामनाएं

नई दिल्ली। देश में अलग-अलग पदों पर अहम भूमिका निभाने वाले वरिष्ठ नौकरशाह और राजधानी दिल्ली के प्रतिष्ठित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स में अतिरिक्त निदेशक के पद पर पदासीन किए गए करण सिंह को संतदेव चौहान सहित अनेक लोगों ने शुभकामनाएं दीं। साथ ही उन्हें मरीजों और संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों की समस्याओं से भी अवगत कराया। एम्स में अतिरिक्त निदेशक प्रशासन का पद संभालने से पहले वो लंबे समय से भारतीय रेलवे यातायात सेवा में वरिष्ठ अधिकारी के तौर पर काम कर रहे थे।

गायब हुए 92 संरक्षित स्मारकों में से 74 का पता लगा लिया गया: सरकार

नई दिल्ली(भाषा)। केंद्र सरकार ने बृहस्पतिवार को राज्यसभा को बताया कि 2013 में भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) की प्रदर्शन ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया था कि 92 संरक्षित स्मारक गायब पाए गए थे लेकिन उनमें से 74 का पता लगा लिया गया है। केंद्रीय संस्कृति मंत्री जी किशन रेड्डी ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में यह भी कहा कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने संरक्षित स्मारकों की सुरक्षा से संबंधित विभिन्न मुद्दों की व्यापक जांच के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। उनसे पूछा गया था कि क्या सरकार को स्थाई समिति की रिपोर्ट के बारे में जानकारी है जिसमें 92 केंद्रीय संरक्षित स्मारकों की पहचान लापता के रूप में की गई है और उन लापता स्मारकों का पता लगाने और उन्हें बहाल करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं। एएसआई को केंद्रीय संरक्षित स्मारकों की सुरक्षा का काम सौंपा गया है। उन्होंने अपने जवाब में कहा, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की 2013 की प्रदर्शन ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया था कि 92 संरक्षित स्मारक गायब पाए गए। उन्होंने कहा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने पुराने रिकॉर्ड, राजस्व मानचित्रों और प्रकाशित रिपोर्टों के आधार पर कथित रूप से लापता स्मारकों का पता लगानेाउनकी पहचान के लिए जोरदार प्रयास किए। इस कवायद के सार्थक परिणाम मिले और 92 स्मारकों में से 74 स्मारकों का पता लगा लिया गया है। मंत्री ने कहा कि संरक्षित स्मारकों और स्थलों पर निगरानी और निगरानी के लिए मल्टी-टास्किंग स्टाफ तैनात किया गया है।

अनुमति न मिलने के कारण नीतीश की वाराणसी रैली रद्द

भाषा। पटना

बिहार में सत्ताधारी जनता दल (यूनाइटेड) ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी के अंतर्गत आने वाले रोहनिया विधानसभा क्षेत्र में 24 दिसंबर को प्रस्तावित एक रैली के लिए स्थानीय अधिकारियों द्वारा अनुमति देने से इनकार किए दिए जाने पर बृहस्पतिवार को योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली उत्तर प्रदेश सरकार की आलोचना की। जदयू के वरिष्ठ नेता और बिहार के ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने बृहस्पतिवार को पीटीआई-भाषा से कहा, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की 24 दिसंबर को वाराणसी के रोहनिया में होने वाली सार्वजनिक सभा रद्द कर दी गई है। रोहनिया विधानसभा क्षेत्र में जगतपुर इंटर कॉलेज के प्रशासन ने, जहां कुमार को एक सार्वजनिक बैठक करनी थी, स्थानीय प्रशासन और राज्य सरकार के दबाव के कारण हमें इसकी अनुमति देने से इनकार कर दिया। उन्होंने (कॉलेज प्रशासन) पहले कहा था कि हमें अनुमति दी जाएगी, लेकिन बृहस्पतिवार को उन्होंने इससे इनकार कर दिया। उत्तर प्रदेश में पार्टी के मामलों के प्रभारी श्रवण कुमार ने आरोप लगाया, उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की तानाशाही चल रही है। हमें वाराणसी में अपने पार्टी सुप्रीमो की सार्वजनिक सभा न करने देना सीधे तौर पर लोकतंत्र की हत्या है। हम जल्द ही सार्वजनिक सभा की अगली तारीख की घोषणा करेंगे। जदयू जल्द ही भाजपा को बेनकाब करने के लिए उत्तर प्रदेश में एक जनसंपर्क अभियान शुरू करेगी। हम लोकसभा चुनाव के लिए एक ठोस रणनीति तैयार कर रहे हैं। रोहनिया की जनसभा में पूर्वांचल क्षेत्र के पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं को शामिल होना था। रोहनिया वाराणसी का पटेल बहुल विधानसभा क्षेत्र है।

पॉल मर्चेन्ट्स
फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड
स्वर्ण नीलामी सूचना

सभी सम्बन्धितों की सूचना के लिए एतद् सूचना दी गई है, कि कम्पनी की अधो उल्लेखित शाखा संग रेहन रखे गये स्वर्णभूषणों को सम्बन्धित ऋण संख्याओं के अन्तर्गत, जो कि ऋणमोचन के लिए विलम्बित थे और जिनको सम्बन्धित ग्राहकों द्वारा कम्पनी के बार बार दोहराई गई सूचनाओं के बावजूद अभी तक निस्तार नहीं किया गया है, को, कम्पनी की सम्बन्धित शाखाओं पर **गुरूवार, 28 दिसम्बर 2023** को अधे विवरणानुसार नीलाम किया जायेगा।

अ. मोहन गार्डन शाखा – पॉल मर्चेन्ट्स फाईनेंस प्राईवेट लिमिटेड, ग्राउण्ड फ्लोर, पलोट नं० 8,9, एफ-ब्लॉक, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059, दूरभाष 8264133393 ऋण संख्या- 20221000000008, 20221000000018 (समय 11.00 बजे पूर्वान्ह)

आ. नजफगढ़ शाखा – पॉल मर्चेन्ट्स फाईनेंस प्राईवेट लिमिटेड, ग्राउण्ड फ्लोर RZ3, बी-ब्लॉक, पुराना रोशनपुरा, नजफगढ़, दक्षिण-पश्चिम दिल्ली-110043, दूरभाष 8427733393, ऋण संख्या-20321000000069, 20321000000047, 20321000000062 (समय 11.00 बजे पूर्वान्ह)।

इ. सोनिया विहार शाखा – पॉल मर्चेन्ट्स फाईनेंस प्राईवेट लिमिटेड, प्रोपर्टी नं० डी-296, IIIrd पुसटा, मुख्य बाज़ार, सोनिया विहार, दिल्ली, दूरभाष 8699033393, ऋण संख्या – 19721000000011, 19721000000051 (समय 11.00 बजे पूर्वान्ह)। कृपया इसे ध्यान में रखा जाये कि यदि ऊपर उल्लेखित नियत दिनांक को किसी कारणवश नीलामी सम्पूरित नहीं होती है, जो इसे **4 जनवरी, 2024** को उसी स्थान और उसी समय पर, बिना और सूचना के आयोजित की जायेगी।

नोट : सम्बन्धित ग्राहक, नीलामी दिनांक से पूर्व, गहनों को छुड़वा सकते हैं।

नोटः पॉल मर्चेन्ट्स फाईनेंस प्राइवेट लिमिटेड को इस बात का एकल स्वविवेक अधिकार हैं कि बिना पूर्व सूचना के नीलामी सूची से किसी भी ऋण खाता के गहनों (आभूषणों) को हटा सकते हैं।

नोट : बोली लगाने वालों से अनुरोध है वे यदि पंजीकृत डीलर हैं तो अपना पहचान पत्र की PAN Card एवं TIN नम्बर प्रस्तुत करें। सफल बोली लगाने वालों (बिडर्स) से अनुरोध होगा कि कम्पनी को नीलामी सम्पूर्ण राशि आरटीजीएस/अन्य स्वीकृत विधि (Mode) से तत्काल स्थानान्तरित करें।

हस्ताक्षर
प्राधिकृत हस्ताक्षर करने वाला
पॉल मर्चेन्ट्स फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड
उपरोक्त सूचना से सम्बन्धित किसी भी स्पष्टिकरण के लिये कृपया दूरभाष नम्बर 0172-5041717 पर अथवा सम्बन्धित शाखा पर सम्पर्क करें।
दिनांक : 15.12.2023 स्थान : चण्डीगढ़

यूक्रेन को लेकर रूस के लक्ष्यों में कोई बदलाव नहीं : पुतिन

भाषा। मॉस्को

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बृहस्पतिवार को कहा कि यूक्रेन को लेकर उनके देश के लक्ष्यों में कोई बदलाव नहीं आया है और इनके हासिल होने तक शांति कायम नहीं होगी। उन्होंने वर्ष के अंत में होने वाले संवाददाता सम्मेलन में एक सवाल के जवाब में यह बात कही। पुतिन ने कहा कि यूक्रेन को लेकर रूस के लक्ष्यों में नाजीवाद का खात्मा , असैन्यकरण और देश की तटस्थ स्थिति स्थापित करना शामिल है और इनमें कोई बदलाव नहीं आया है। उन्होंने फरवरी 2022 में जब सैनिकों को यूक्रेन भेजा था तब भी उन्होंने इन लक्ष्यों को रेखांकित किया था। रूस का आरोप है कि यूक्रेन सरकार पर कट्टर राष्ट्रवादी और नव-नाजीवादी समूहों का प्रभाव है। हालांकि, यूक्रेन और पश्चिमी देश रूस के इस दावे को खारिज करते रहे हैं। पुतिन चाहते हैं कि यूक्रेन को तटस्थ रहना चाहिए और उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) में शामिल नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा, जब हम ए लक्ष्य हासिल कर लेंगे तब शांति कायम हो जाएगी। पुतिन ने बताया कि फिलहाल वहां लगभग 6,17,000 रूसी सैनिक हैं, जिनमें लगभग 2,44,000 वे सैनिक हैं, जिन्हें पेशेवर रूसी सैन्य बलों के साथ मिलकर लड़ने के लिए बुलाया गया था। उन्होंने कहा कि रूस को एक बार फिर पूर्व सैनिकों को लामबंद करने की जरूरत नहीं है और सेना में हर दिन 1,500 पुरुष भर्ती किए जा रहे हैं। पुतिन ने कहा कि बुधवार शाम तक कुल 4,86,000 सैनिक रूसी सेना के साथ अनुबंध कर चुके हैं। उन्होंने कीव को नियंत्रण में लेने के सेना के प्रयास नाकाम होने के बाद पिछले साल पारंपरिक संवाददाता सम्मेलन नहीं किया था।

अमेरिकी संसद के निचले सदन ने बाइडन के खिलाफ महाभियोग जांच शुरू करने को मंजूरी दी

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिकी संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा ने राष्ट्रपति जो बाइडन के खिलाफ महाभियोग जांच शुरू करने को मंजूरी दे दी है। बाइडन के खिलाफ महाभियोग जांच शुरू करने के प्रस्ताव पर मतदान हुआ, जिसके समर्थन में 221 जबकि विरोध में 212 वोट पड़े। इस प्रस्ताव में राष्ट्रपति जो बाइडन पर उनके बेटे हंटर बाइडन के विवादास्पद और विदेशी लेनदेन के आधार पर औपचारिक महाभियोग जांच शुरू किए जाने की बात कही गई है। अगर वह सीनेट में चले महाभियोग में दोषी पाए जाते हैं तो उन्होंने राष्ट्रपति पद से हटना पड़ सकता है। बाइडन ने महाभियोग के प्रयास को लेकर एक बयान जारी किया, जिसमें उन्होंने रिपब्लिकन सांसदों की प्राथमिकताओं पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा, अमेरिकी जनता का जीवन बेहतर बनाने में मदद करने के बजाय वे मुझ पर झूठे आरोप लगाने पर ध्यान केंद्रित किए हुए हैं।

जी20 में अफ्रीकी संघ को शामिल किए जाने से संरा को सुधारों के लिए प्रेरणा लेनी चाहिए : भारत

भाषा। संयुक्त राष्ट्र

संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थाई प्रतिनिधि रुचिरा कम्बोज ने कहा कि अपनी अध्यक्षता में जी20 के स्थाई सदस्य के रूप में अफ्रीकी संघ को शामिल करने की भारत की पहल सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इससे बहुत ज्यादा पुराने संयुक्त राष्ट्र को सुरक्षा परिषद को समकालीन बनाने के लिए प्रेरित होना चाहिए। कम्बोज ने बुधवार को सुरक्षा परिषद सुधारों पर अंतरसरकारी वार्ता में कहा कि भारत की पहल पर अफ्रीकी संघ इस साल सितंबर में नई दिल्ली में हुए शिखर सम्मेलन में जी20 का स्थाई सदस्य बन गया। उन्होंने कहा कि जी20 में अफ्रीकी संघ को शामिल करने से यह सुनिश्चित हुआ है कि वैश्विक शासन और निर्णय निर्धारण के प्रभावशाली संस्थान में ग्लोबल साउथ की महत्वपूर्ण आवाज जुड़े। ग्लोबल साउथ शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर आर्थिक रूप से कम विकसित देशों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। भारतीय राजदूत ने कहा, सुधार की दिशा में इस महत्वपूर्ण कदम से संयुक्त राष्ट्र को सुरक्षा परिषद को भी समकालीन बनाने के लिए प्रेरित होना चाहिए। व्यापक प्रतिनिधित्व आखिरकार, प्रभावशीलता और विश्वसनीयता दोनों के लिए एक शर्त है। उन्होंने कहा कि यह भारत का दृढ़ विश्वास है कि जी20 में अफ्रीका की पूर्ण भागीदारी से यह समूह सही मायने में अधिक प्रतिनिधित्व वाला और प्रासंगिक संस्थान बनेगा। कम्बोज ने कहा कि सितंबर 2024 में होने वाला समिट ऑफ द फ्यूचर संयुक्त राष्ट्र चार्टर के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की पुष्टि करने और सुरक्षा परिषद समेत महासभा में सुधार पर केंद्रित चार्टर की समीक्षा का एक स्वर्णिम अवसर उपलब्ध कराता है। उन्होंने याद किया कि इस साल सितंबर में संयुक्त राष्ट्र महासभा के वार्षिक उच्च स्तरीय सत्र के दौरान 85 से अधिक वैश्विक नेताओं ने महासभा से व्यापक और सार्थक सुधारों की मांग की।

क्विक न्यूज

पाकिस्तान का चुनाव आयोग आम चुनाव के लिए 17 दिसंबर को कर सकता है कार्यक्रम का ऐलान

इस्लामाबाद। पाकिस्तान का चुनाव आयोग आठ फरवरी को होने वाले आम चुनावों का कार्यक्रम रविवार को घोषित कर सकता है। मीडिया में आई खबरों में बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी गई है। जियो न्यूज ने खबर दी है, पाकिस्तान चुनाव आयोग 17 दिसंबर को चुनाव कार्यक्रम का ऐलान करेगा और कार्यक्रम की घोषणा के अगले दिन से नामांकन पत्र दाखिल किए जाएंगे। खबर में कहा गया है कि आयोग को आठ फरवरी को प्रांतीय असेंबली और संसद का चुनाव कराने की प्रक्रिया पूरी करने में 54 दिन लगेंगे। आयोग के सूत्रों के हवाले से खबर में कहा गया है कि यह मुल्क में स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव कराने के लिए पूरी तरह से तैयार है। आयोग ने 142 जिला रिटर्निंग अधिकारियों और 859 रिटर्निंग अधिकारियों को प्रशिक्षण दे रहा है। इसने पूरे देश में ज्यादातर के तबादलों और तैनाती को भी प्रतिबंधित कर दिया है।

महिलाओं को लैंगिक हिंसा से बचाने के लिए उन्हें जेल भेज रहा तालिबानः संरा की रिपोर्ट

इस्लामाबाद। तालिबान के अधिकारी अफगान महिलाओं को लैंगिक हिंसा से बचाने के लिए उन्हें जेल में भेज रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र की बृहस्पतिवार को प्रकाशित एक रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। वर्ष 2021 मे तालिबान के सत्ता पर काबिज होने के बाद अफगानिस्तान मे 23 सरकारी महिला सुरक्षा केंद्र थे, जिनमे लैंगिक आधार पर हिंसा की शिकार महिलाएं शरण ले सकती थी। फिलहाल ऐसा कोई केंद्र नही है। तालिबान के नेतृत्व वाले प्रशासन के अधिकारियो ने अफगानिस्तान मे संयुक्त राष्ट्र सहायता मिशन को बताया कि ऐसे किसी शरण केंद्र की कोई जरूरत नही है। रिपोर्ट मे कहा गया है कि अगर किसी महिला के साथ रहने के लिए कोई पुरुष संबंधी नही है या पुरुष संबंधी के साथ रहना असुरक्षित है तो तालिबान उन महिलाओ को जेल मे भेज रहा है। अधिकारियो ने पुरुष संबंधियो से यह वादा करने या शपथ लेने के लिए भी कहा है कि वे अपनी महिला संबंधी को कोई नुकसान नही पहुंचाएंगे।

दुबई में क्रिसमस की मचेगी धूम

दुबई। सोने का शहर दुबई छुट्टियों के इस सीजन का यादगार अनुभव प्रदान करने के लिए तैयार है। दुबई में छुट्टियों का सीजन सालाना मदिनत जुमैरा फेस्टिव मार्केट के बिना अधूरा है, यह मार्केट 15 दिसम्बर 2023 से 7 जनवरी 2024 के बीच आगंतुकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगी। 36 फीट उंचे पेड़ से लेकर सीजनल फूड स्टॉल्स, परिवार के अनुकूल गतिविधियों के साथ इस किसमस बाजार में हर किसी के लिए कुछ न कुछ मौजूद है। यहां आने वाले यात्री लाइव बैण्ड की धुनों का लुत्फ उठाते हुए होमग्रोन ब्राण्ड्स पर खरीददारी का आनंद ले सकते हैं। अब्रा और ट्रेड में बच्चे सैंटा के साथ खूबसूरत वैनेटियन कैरोफल की राइड का लुत्फ उठा सकते हैं। यह चार-लेन की बंजी और नोर्थ पोल ट्रेन निश्चित रूप से छोटे बच्चों को खूब लुभाएगी। इसके लिए एंट्री बिल्कुल मुफ्त है। अगर आप बर्फ में खेलना चाहते हैं, तो स्की दुबई चले जाइए, यहां 1 से लेकर 25 दिसम्बर तक सैंटा आपकी इच्छाओं को पूरा करेगा। दिन भर स्की दुबई में बर्फ पर स्लाइड कीजिए, पैंग्विन्स से मिलिए, स्नो पार्क में राईड्स का आनंद उठाए, इस बीच अल्पाईन-इन्सपायर्ड कैफे में हॉट चॉकलेट का आनंद उठाना भूल मत जाइएगा! सैंटा? ग्रोटो आपके इस विजिट का आकर्षण केन्द्र बन जाएगा। यहां आप रेंडियर्स को खाना खिला सकते हैं! यह विजिट निश्चित रूप से आपके और आपके प्रियजनों के लिए यादगार बन जाएगा। ग्लोबल विलेज मल्टी-कल्चरल फैमिली एंटरटेनमेन्ट डेस्टिनेशन है, जो 22 मीटर उंचे, उपहारों से लदे पेड़ के साथ सर्दियों के जश्न को शानदार बनाने के लिए तैयार है, यहां आपको ऊँट की सवारी करते सैंटा और गिरती बर्फ जैसे अनुभवों का आनंद उठाने का मौका मिलेगा। कार्यक्र म का आयोजन 11 दिसम्बर से 7 जनवरी 2024 के बीच होगा।

ग्रेटा गेरविग को 77वें कान फिल्म महोत्सव के लिए निर्णायक मंडल प्रमुख नियुक्त किया गया

लॉस एंजिलिस। कान फिल्म महोत्सव ने अपने 77वें संस्करण के लिए अभिनेत्री और फिल्म निर्देशक ग्रेटा गेरविग को निर्णायक मंडल अध्यक्ष नियुक्त किया। मनोरंजन समाचार पोर्टल डेडलाइन की रिपोर्ट मे गेरविग को आधुनिक समय की नायिका कहा गया, जिसने यथास्थिति को बदलकर रख दिया था। फिल्म महोत्सव के आयोजकों ने बृहस्पतिवार को सुबह यह खबर साझा की। गेरविग, कान फिल्म महोत्सव में निर्णायक मंडल की अध्यक्ष की भूमिका निभाने वाली पहली अमेरिकी महिला निर्देशक बन जाएंगी, वही दूसरी अमेरिकी महिला होंगी। उनसे पहले 1965 मे अभिनेत्री ओलिविया डि हैविलैंड निर्णायक मंडल की अध्यक्ष रह चुकी है। उन्होंने कहा, अनजान जगह पर रहना, अजनबियो से भरे अंधेरे थिएटर मे, एक बिल्कुल नई फिल्म देखना मेरी पसंदीदा जगह है। मै कान फिल्म महोत्सव के निर्णायक मंडल के अध्यक्ष के रूप में काम करने को लेकर बेहद रोमांचित हूं। एक सिनेमा प्रेमी के रूप में फिल्मो की सार्वभौमिक भाषा क्या हो सकती है, कान हमेशा से इसका केंद्र बिंदु रहा है। गेरविग, फिल्म महोत्सव के निर्णायक मंडल की अध्यक्ष बनने वाली दूसरी महिला निर्देशक होंगी, इससे पहले 2014 मे न्यूजीलैंड की जेन कैंपियन इसकी अध्यक्ष बनी थी।

टीआईई सिलिकॉन वैली भारतीय स्टार्टअप को अमेरिका में अपना बाजार बढ़ाने में करेगी मदद

पालो आल्टो (अमेरिका)। टीआईई सिलिकॉन की अध्यक्ष अनिता मनवानी ने कहा कि आईएस क्षेत्र के उद्यमियों का शीर्ष संगठन भारतीय स्टार्टअप को अमेरिका में अपने बाजार को विकसित करने के लिए मदद करेगा। टीआईई (द इंडस एंटरप्रेन्योर) सिलिकॉन की अध्यक्ष अनिता मनवानी ने पीटीआई-भाषा को हाल ही मे दिए एक साक्षात्कार मे कहा, टीआईई सिलिकॉन वैली वैश्विक उद्यमियो के लिए प्रवेश द्वार है। इन वैश्विक उद्यमियो का एक बड़ा हिस्सा भारत से आता है... हाल ही मे टीआईई सिलिकॉन वैली ने भारतीय स्टार्टअप को अमेरिका मे अपने पैर जमाने के लिए सलाह देने और मदद करने की प्रक्रिया शुरू की है। मनवानी ने भारत मे डिजिटलीकरण मे हुई प्रगति के लिए प्रधानमंत्री की सराहना की और कहा, हमे इसी की उम्मीद की थी... उन्होंने पीटीआई-भाषा से कहा, डिजिटल स्टैक को आम आदमी तक पहुंचाने के लिए यह सभी देशो के लिए मार्ग दर्शक है। यह आश्चर्यजनक है। आज 20 देश भारतीय डिजिटल स्टैक का इस्तेमाल कर रहे है। मै सुना है कि अगले साल इनकी संख्या बढ़कर 50 हो जाएगी। जब आप इसके बारे मे सोचते है अगर भारत मे 80 करोड़ से अधिक लोग पूरी तरह से डिजिटल स्टैक पर है, तो यहां हम करीब 30 करोड़ की आबादी है और इसके आसपास भी नही है। डिजिटल स्टैक वांछित विपणन मंच और सेवाओं का एक प्रबंधन मंच है। मनवानी ने साथ ही कहा कि उन्हें भारतीय मूल का होने पर गर्व है। उन्होने कहा, मुझे लगता है कि भारत के पास देने के लिए बहुत कुछ है, एक युवा आबादी जो बेहद शिक्षित है, जो प्रौद्योगिकी प्रेमी है और उद्यमिता के प्रति यह प्रतिबद्धता ही भारत को अगली सदी मे ले जाएगी।

डेनमार्क और नीदरलैंड में आतंकवादी हमलों की साजिश रचने वाले चार लोग गिरफ्तार

कोपनहेगन। डेनमार्क और नीदरलैंड मे संयुक्त रूप से चलाए गए एक अभियान मे आतंकवादी हमलो की साजिश रचने के संदेह मे कुल चार लोगो को गिरफ्तार किया गया है। डेनमार्क की पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। डेनमार्क मे की गई समन्वित कार्वाई मे तीन लोगो को गिरफ्तार किया गया जबकि नीदरलैंड मे एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया। डेनमार्क की सुरक्षा और खुफिया सेवा के संचालन प्रमुख फ्लेमिंग ड्रेजर ने कहा कि डेनमार्क आतंकवादी हमलो के खतरे के स्तर को नही बदल रहा है, जो 2010 के बाद से देश मे गंभीर रूप से दूसरे सबसे उच्चतम स्तर पर है। फ्लेमिंग ड्रेजर ने कहा कि इस मामले के तार विदेशो से जुड़े हुए थे और इसका संबंध आपराधिक गिरोहो से है। इसमें लॉयल टू फैमीलिया (एलटीएफ) का नाम सामने आया था। जनवरी 2020 मे, डेनमार्क की एक अदालत ने इस गिरोह पर राष्ट्रव्यापी पुलिस प्रतिबंध को बरकरार रखते हुए कहा कि एलटीएफ को डेनमार्क के संविधान के तहत अवैध मानते हुए भंग कर दिया जाना चाहिए।

भारत-अमेरिका संबंध सकारात्मक दिशा में आगे बढ़े हैं : अमेरिकी उद्यमी मुकेश अघी

वाशिंगटन। अमेरिका-भारत रणनीतिक एवं साझेदारी मंच (यूएसआईएसपीएफ) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मुकेश अघी ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच संबंध व्यापार से लेकर रक्षा तक सकारात्मक दिशा मे आगे बढ़े हैं। एक दशक से भी अधिक समय से अमेरिका के साथ भारत के संबंधों में अहम भूमिका निभाने वाले अघी ने कहा कि दोनों देश इस बात पर सहमत है कि संबंध महत्वपूर्ण हैं। उन्होने कहा, हां, कनाडा मे जो हुआ, न्यूयॉर्क शहर के दक्षिणी जिले मे जो हुआ उसकी जांच करना महत्वपूर्ण है। लेकिन इससे दोनो देशो के बीच साझेदारी की गति नही रुकेगी। उन्होंने कहा, भारत ने कहा है कि उसने जांच करने के लिए उच्च स्तरीय समिति गठित की है क्योंकि (विदेशी जमीन पर लोगो की) हत्या करना नीति नही है। मुझे यकीन है कि वे इसे हल कर लेंगे। अघी ने कहा, कनाडा के मामले मे प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रुडो ने संसद जाकर और घोषणा या आरोप लगाकर परिपक्वता की कमी दिखाई। मुझे लगता है कि अमेरिकियों ने जानकारी साझा करने, आम सहमति बनाने और इसे आगे ले जाने की कोशिश कर बेहतर काम किया है। इसलिए मुझे लगता है कि उन दो मुद्दो का अल्पकालिक और दीर्घकालिक समय मे कोई असर नही पड़ेगा। वह ट्रुडो के उन आरोपो पर एक सवाल का जवाब दे रहे थे कि एक सिख अलगाववादी की हत्या मे भारत मे संलिप्तता थी। अमेरिका ने भी आरोप लगाया है कि एक अमेरिकी नागरिक एवं सिख अलगाववादी की हत्या की साजिश मे भारतीय शामिल थे। यूएसआईएसपीएफ के प्रमुख अघी ने कहा कि जब भूराजनीतिक कांड के परिप्रेक्ष्य से देखा जाता है तो दोनों देशो के बीच अधिक तालमेल है। उन्होंने बुधवार को कहा, मुझे लगता है कि हर पहलू मे हम (भारत-अमेरिका संबंध) सकारात्मक दिशा मे आगे बढ़े है। आप व्यापार को देखे जो आगे बढ़ गया है। आप सैन्य अभ्यासो को देखें, हम और भी ज्यादा अभ्यास कर रहे है। हमने अमेरिका के साथ कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए है खासकर रक्षा और अंतरिक्ष क्षेत्र मे।

कनाडा के अधिकारियों को कोकीन तस्करी मामले में दोषी सिख ट्रक चालक की तलाश

टोरंटो। कनाडा के अधिकारी उस सिख ट्रक चालक की तलाश कर रहे है जो मादक पदार्थ तस्करी मामले मे दोषी पाए जाने से पहले भारत भाग गया था। खबरों के अनुसार, 60 वर्षीय सिख ट्रक चालक अमेरिका से कनाडा मे 80 किलोग्राम कोकीन की तस्करी करने के मामले मे दोषी पाए जाने से पहले भारत भाग गया था। सीबीसी की खबर मे कहा गया कि राजकुमार मेहमी को कोकीन की तस्करी के आरोप मे 2017 मे गिरफ्तारी के बाद नवंबर मे ब्रिटिश कोलंबिया की एक प्रांतीय अदालत ने 15 साल जेल की सजा सुनाई थी। वैंकूवर सन की खबर के अनुसार, सजा सुनाए जाने से एक महीने पहले मेहमी वैंकूवर से भारत भाग गया।

चीन में कोयला खदान में दुर्घटना में तीन लोगों की मौत

बीजिंग। उत्तरी चीन के शांक्सी प्रांत मे एक कोयला खदान मे दुर्घटना होने से तीन लोगों की मौत हो गई। चीन के सरकारी प्रसारक सीसीटीवी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।सरकारी प्रसारक के मुताबिक, बुधवार को जब यह हादसा हुआ, उस वक्त चार लोग कोयला भंडारण के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बंकर की सफाई कर रहे थे। यह स्पष्ट नही है कि दुर्घटना की वजह क्या है। रिपोर्ट के मुताबिक, हादसे मे तीन लोगो की मौत हो गई तथा बचावकर्मी एक व्यक्ति को बचाने मे सफल रहे। यह दुर्घटना प्रमुख कोयला उत्पादक क्षेत्र शांक्सी स्थित हुआजिन कोकिंग कोल कंपनी मे हुई। चीन बार-बार होने वाली दुर्घटनाओं से निपटने के लिए खदान की सुरक्षा मे सुधार के लिए काम कर रहा है। अगस्त मे शांक्सी मे कोयला खदान मे विस्फोट होने से 11 लोगो की मौत हो गई थी। वही, सितंबर मे दक्षिणी चीन के गुइझोउ प्रांत मे कोयला खदान मे आग लगने से 16 लोगो ने अपनी जान गंवाई थी।

अमेरिका में लड़ाकू वाहन पलटने से नौसेना के एक जवान की मौत, 14 घायल

सैन डिएगो (अमेरिका)। अमेरिका के सैन डिएगो मे प्रशिक्षण के दौरान एक लड़ाकू वाहन के पलट जाने से नौसेना के एक जवान की मौत हो गई और 14 अन्य घायल हो गए। अधिकारियो ने बुधवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि ग्राउंड मूवमेंट ट्रेनिंग के दौरान मरीन कॉर्प्स बेस कैंप पेंडलटन मे मंगलवार शाम करीब छह बजे यह हादसा हुआ। अमेरिकी नौसेना ने कहा कि घायलो को इलाज और जांच के लिए क्षेत्रीय अस्पतालो मे भर्ती कराया गया है। हालांकि अधिकारी ने घायलो की हालत के बारे मे कोई जानकारी नही दी। सेना ने कहा कि मृतक सैनिक की पहचान तब तक उजागर नही की जाएगी, जब तक कि सैन्य नीति के अनुसार उसके परिवार को सूचित नही किया जाता। अधिकारियो ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है।

पोप ने कृत्रिम मेधा को विनियमित करने के लिए एक संधि का आह्वान किया

रोम। पोप फ्रांसिस ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास और इस्तेमाल नैतिक रूप से किए जाने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संधि का आह्वान करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि अनुकंपा, दया, नैतिकता और क्षमा के मानवीय मूल्यों से रहित प्रौद्योगिकी के खतरे बहुत बड़े है। फ्रांसिस ने विश्व शांति दिवस के लिए अपने वार्षिक संबोधन मे कृत्रिम मेधा (एआई) के वैश्विक नियमन पर जोर दिया। कैथलिक चर्च हर साल एक जनवरी को विश्व शांति दिवस मनाता है। वेटिकन ने बृहस्पतिवार को यह संदेश जारी किया। पोप ने यह अपील तब की है जब इस साल की शुरुआत मे एआई द्वारा तैयार उनकी एक तस्वीर वायरल हो गई थी जिसमे वह सफेद रंग की एक महंगी जैकेट पहने हुए दिखे थे जो यह दिखाता है कि कैसे एक फर्जी तस्वीर तेजी से ऑनलाइन प्रसारित हो सकती है।

पीपीपी ने बिलावल भुट्टो-जरदारी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) ने बृहस्पतिवार को घोषणा की कि उसके अध्यक्ष बिलावल भुट्टो-जरदारी आठ फरवरी को होने वाले आम चुनाव में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे। पार्टी ने कहा कि बिलावल भुट्टो-जरदारी के पिता आसिफ अली जरदारी राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार होंगे। पीपीपी ने यह घोषणा, पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएन-एल) पार्टी द्वारा हाल में अपने प्रमुख एवं पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार होने का ऐलान किए जाने के बाद की है। यहां मीडिया को संबोधित करते हुए पीपीपी के सूचना सचिव फैसल करीम कुंडी ने कहा कि बिलावल प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे और हमारी यह इच्छा कि हम 2008 को फिर से दोहराएं और आसिफ जरदारी को राष्ट्रपति बनाएं। उन्होंने कहा कि पीपीपी चुनाव के लिए पूरी तरह से तैयार है। आसिफ जरदारी (68) वर्ष 2008 में हुए चुनावों के बाद पाकिस्तान के राष्ट्रपति बने थे।

इज़राइल हताहतों की संख्या कम करने की अमेरिकी अपील को नजरअंदाज करेगा

भाषा। लॉस एंजिल्स

अमेरिका ने इज़राइल के युद्ध आचरण की आलोचना की है। इज़राइल ने उस आलोचना को नजरअंदाज कर दिया है। यह बाइडेन प्रशासन के लिए अपमान जैसा लगता है। क्या हो रहा है? यह एक ऐसा पैटर्न है जिसे हमने पहले देखा है। हमने इसे 2006 में लेबनान में हिज़्बुल्लाह के खिलाफ इज़राइल द्वारा लड़े गए युद्ध में देखा था। अमेरिका इज़राइल पर अधिक मानवीय होने के लिए दबाव डालने की कोशिश कर रहा था, जिस तरह से उन्होंने उस युद्ध को संचालित किया था। तो असहमति हालांकि कोई खास नई नहीं है, यह न केवल अपमानजनक है बल्कि प्रभाव की सीमा को भी दर्शाती है।वास्तव में, पूरे अमेरिका-इज़रायल संबंधों की बात करें तो इज़राइल अमेरिकी राजनीति खेलने में अच्छा रहा है। और इसलिए इजराइल पर उस तरह का दबाव डालना कठिन है जिसके वस्तुनिष्ठ तथ्य यह सुझाव देंगे कि अमेरिका को इसका इस्तेमाल करने में सक्षम होना चाहिए। आखिरकार, इज़राइल अब तक अमेरिकी विदेशी सहायता का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता है। और अमेरिका काफी लंबे समय से इजरायल के साथ मजबूती से खड़ा है। तो उस हद तक, यह थोड़ा अपमानजनक है कि उसकी बात को नहीं सुना जाता है। क्या इज़राइल, जैसा कि आप कहते हैं, इसमें बहुत अच्छा है क्योंकि वह एक अस्थिर पड़ोस में रहते हैं, या घरेलू राजनीति के कारण बाइडेन पर दबाव है? उन्हें ऐसा करने की शक्ति कहां से मिलती है? निश्चित रूप से यह आंशिक रूप से एक अस्थिर पड़ोस है - इज़रायली निश्चित रूप से खुद को एक बहुत ही अस्थिर पड़ोस में रहने वाले के रूप में देखते हैं। तो सामान्य पैटर्न यह है कि अमेरिका कहता है आराम से चलो। इज़राइल कहता है हमें कुछ दिन और दीजिए। 2006 में यही पैटर्न था और इस बार भी यही पैटर्न है - इज़राइल अपने सैन्य उद्देश्य को पूरा करने के लिए थोड़ा और समय मांगता है। लेकिन अगर अमेरिका की मांगों को नजरअंदाज करने की उसकी क्षमता मुख्य रूप से एक अस्थिर पड़ोस में रहने से पैदा होती है, तो इजरायल का अमेरिका में बहुत प्रभाव है। कांग्रेस में दोनों पार्टियों का बहुमत इज़राइल का समर्थन करता है, हालाँकि कॉलेज परिसरों और अन्य जगहों पर उस समर्थन पर असंतोष बढ़ रहा है।हाल के प्यू पोल में, अमेरिका में रिपब्लिकन की तुलना में चार गुना अधिक डेमोक्रेट ने सोचा कि इज़राइल अपने सैन्य अभियान में बहुत आगे जा रहा है।

अमेरिका के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण हैं भारतीय अमेरिकीः भूटोरिया

फ्रेमॉन्ट (कैलिफोर्निया)। अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के लिए एक साल से भी कम समय बचा है, ऐसे में भारतवंशी समुदाय के प्रतिष्ठित नेता और डेमोक्रेटिक पार्टी के धन संचयकर्ता अजय भूटोरिया का मानना है कि भारतीय अमेरिकी देश के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। डेमोक्रेटिक नेशनल कमेटी की नेशनल फाइनेंस कमेटी के सदस्य अजय भूटोरिया ने पीटीआई-भाषा को दिए साक्षात्कार में कहा कि कई राज्यों में, भारतीय अमेरिकी 5 नवंबर, 2024 को होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति पद के चुनाव में जीत के अंतर को प्रभावित कर सकते हैं। राष्ट्रपति जो बाइडन के पहले कार्यकाल में उनके प्रचार अभियान के पहले दिन से शामिल रहे भूटोरिया ने कहा, यह चुनाव सबसे महत्वपूर्ण चुनावों में शामिल है। एशियाई-अमेरिकियों, खासतौर पर दक्षिण एशियाई अमेरिकियों और भारतीय अमेरिकियों की इस चुनाव में ऐतिहासिक भूमिका हो सकती है। उन्होंने कहा, प्रतिस्पर्धा वाले कई राज्यों में अगर हम मिशीगन की बात करें, नेवादा की बात करें,।

इमरान खान को तोशाखाना मामले में एनएबी की हिरासत में भेजा गया

अदालत के बाहर वकील गिरफ्तार

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान की एक अदालत ने तोशाखाना भ्रष्टाचार मामले में जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को दो दिन के लिए राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) की हिरासत में भेज दिया।इस मामले में, खान (71) पर तोशाखाना नियमों के उल्लंघन का आरोप है। पाकिस्तान के शीर्ष नेताओं को विदेश यात्रा के दौरान मिलने वाले उपहारों को तोशाखाना में रखा जाता है। द एक्सप्रेस ट्रब्यिून समाचार पत्र की खबर के अनुसार, इस्लामाबाद में जवाबदेही अदालत के न्यायाधीश मुहम्मद बशीर ने तोशाखाना मामले में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के पूर्व प्रमुख खान को दो दिन के लिए एनएबी की हिरासत में भेज दिया।

जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के वकील और उनकी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के एक नेता को बृहस्पतिवार को लाहौर उच्च न्यायालय के बाहर गिरफ्तार कर लिया गया। इमरान का यह वकील उच्चतम न्यायालय के उस फैसले के खिलाफ वकीलों की हड़ताल में भाग ले रहा था, जिसमें नौ मई की हिंसा में कथित रूप से शामिल नागरिकों पर मुकदमा चलाने की सैन्य अदालतों को अनुमति दी गई है। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की पुलिस के मुताबिक पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं वकील शेर अफजल मारवत को लोक व्यवस्था अध्यादेश के तहत गिरफ्तार किया गया। सादे कपड़े पहने पुलिसकर्मियों के साथ पुलिस की एक बड़ी टीम मारवत पर टूट पड़ी, उसे सड़क से खींच लिया और पास की पुलिस वैन में डाल दिया। पुलिस ने कहा, मारवत खैबर पख्तूनख्वा (केपीके) प्रांत के एक मामले में भी वांछित है और उसे वहां की पुलिस की हिरासत में दिया जा सकता है।

अयोध्या में प्राणप्रतिष्ठा समारोह का जश्न मनाएंगे अमेरिकी हिंदू

वाशिंगटन। अमेरिका में रहने वाले हिंदू समुदाय के लोग अगले महीने अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर अपने घरों में पांच दीए जला कर इसका जश्न मनाने की योजना बना रहे हैं। अमेरिकी हिंदू समुदाय ने इस मौके पर कई कार्यक्रम भी आयोजित करने की योजना बनाई है, जिसमें विभिन्न शहरों में कार रैलियां निकालना, भव्य उद्घाटन समारोह का सीधा प्रसारण करना तथा सामुदायिक सभा आदि शामिल हैं। शिकागो में हिंदू समुदाय के नेता भरत बराई ने पीटीआई को बताया, यह हम सभी के लिए एक सपने के सच होने जैसा है। हमने अपने जीवन में कभी नहीं सोचा था कि हम यह दिन देख पाएंगे। वह क्षण आ गया है। यह अयोध्या में राम मंदिर (उद्घाटन) का जश्न मनाने का समय है। अगले साल 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भाग लेने के लिए मंदिर अधिकारियों द्वारा आमंत्रित लोगों में से एक डॉ. बराई ने कहा कि बड़ी संख्या में हिंदू अमेरिकियों ने राम जन्मभूमि आंदोलन में भाग लिया था। विश्व हिंदू परिषद ऑफ अमेरिका (वीएचपीए) ने इन समारोहों में 1,000 से अधिक मंदिरों और व्यक्तियों की भागीदारी की सुविधा के लिए एक वेबसाइट लॉन्च की है। यह संस्था यहां समारोहों का नेतृत्व कर रही है। वीएचपीए ने सभी हिंदू अमेरिकियों से मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह का जश्न मनाने के लिए अपने घरों में कम से कम पांच दीए जलाने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा, हिंदू अमेरिकियों के बीच अभूतपूर्व उत्साह है। बड़ी संख्या में भारतीय अमेरिकी इस ऐतिहासिक समारोह का हिस्सा बनने के लिए अयोध्या जाना चाहते हैं।

शराब पीने से बच्चों के पालन-पोषण का तरीका हो सकता है प्रभावित

भाषा। ओहायो (अमेरिका)

आप आम तौर पर एक सप्ताह, एक महीने, एक साल में कितनी शराब पीते हैं? क्या आपके उत्तर में इस बात पर ध्यान दिया गया कि आप नए साल की पूर्वसंध्या पर, क्रिस्मस पर, सुपर बाउल या विश्व कप के दौरान कितनी शराब पीते हैं?जब शोधकर्ता तुलना करते हैं कि कितनी शराब बेची जाती है और लोग कितनी शराब पीने की मात्रा के बारे में बताते हैं, तो अमेरिका में शराब की खपत 30ऽ से लेकर ऑस्ट्रेलिया में 80ऽ तक कम आंकी गई है।छुट्टियों, शादियों या प्रमुख खेल आयोजनों जैसे विशेष अवसरों में यह अंतर बहुत अधिक होता है। किसी विशेष कार्यक्रम में कोई व्यक्ति कितना पीता है, यह काफी भिन्न हो सकता है, पुरुषों के लिए प्रति सप्ताह चार अतिरिक्त पेय और महिलाओं के लिए प्रति सप्ताह तीन पेय अतिरिक्त होते हैं, और लोग आमतौर पर इस बढ़ोतरी को अपनी शराब की नियमित खपत में शामिल नहीं करते हैं।मेरी शोध टीम शराब के उपयोग और बच्चों के पालन-पोषण पर इसके प्रभावों का अध्ययन करती है, जिसका अंतिम लक्ष्य सकारात्मक पालन-पोषण का समर्थन करने वाली रणनीतियों की पहचान करना है। विशेष रूप से त्योहारों की छुट्टियों के मौसम में - ऐसे आयोजन जहां शराब पीना आम बात है - यह समझना कि विशेष अवसर पर शराब पीने से माता-पिता अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इससे लोगों को अपनी दिनचर्या बदलने में मदद मिल सकती है, जिससे इन अवसरों को सभी के लिए और अधिक मनोरंजक बनाया जा सके। सामाजिक समस्याओं पर शराब का प्रभाव: यह कोई नई बात नहीं है कि शराब कई सामाजिक समस्याओं से संबंधित है: हिंसा, यातायात दुर्घटनाएं, बाल शोषण और उपेक्षा। शराब विशेष अवसरों के दौरान बुरे व्यवहार को बढ़ावा दे सकती है। उदाहरण के लिए, नए साल की पूर्व संध्या के बाद नशे में गाड़ी चलाने की घटनाएं सबसे ज्यादा होती हैं।प्रमुख खेल आयोजनों के दिनों में पुरुषों द्वारा शराब का सेवन उनके परिवारों के प्रति अधिक हिंसा से संबंधित है। हालाँकि, इस रिश्ते का अध्ययन चूंकि मुख्य रूप से पुरुषों के बीच किया गया है, हम नहीं जानते कि क्या यह महिलाओं के लिए भी ऐसा ही है। पिछले कई दशकों में महिलाओं का शराब पीना बढ़ गया है, जिससे यह समझने योग्य एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

स्विचऑफ़ डे से मजबूत होंगे रिश्ते

पारिवारिक संबंधों को फिर से जगाने के लिए फ़ोन को स्विच ऑफ़ करने का आग्रह ग्राहको से किया जा रहा है । स्मार्टफोन के प्रभुत्व वाले युग में, सार्थक रिश्तों का सार, खासकर माता-पिता और बच्चों के बीच, अक्सर पीछे छूट जाता है। इस चिंता को आगे बढ़ाते हुए, ट्रस्टेड ग्लोबल स्मार्टफोन वीवो स्विचऑफ कैम्पेन का पांचवां संस्करण पेश कर रहा है। स्विचऑफ इनीशिएटिव को आगे बढ़ाने के लिए, वीवो ने 20 दिसंबर, 2023 को स्विच ऑफ डे के रूप में मनाने का संकल्प लिया है। सार्थक टेक्नोलॉजी उपयोग के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाने के लिए, वीवो ने प्रसिद्ध स्वास्थ्य और विज्ञान लेखिका कैथरीन प्राइस के साथ कोलैब्रेट किया है। हाउ टू ब्रेक अप विद योर फोन की लेखिका और स्क्रीन/लाइफ बैलेंस की फाउंडर स्मार्टफोन के साथ स्वस्थ संबंध को बढ़ावा देने के लिए सॉल्यूशन तैयार करने के लिए वीवो को सलाह देंगी। भारतीयों को इसमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, वीवो ने लोगों से इस दिन रात 8 बजे से 9 बजे के दौरान अपने स्मार्टफोन ऑफ करने का आग्रह किया है, जिससे वे अपने परिवार के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिता सकें। इस अवसर पर, वीवो इंडिया के कॉर्पोरेट स्ट्रेटजी हेड, गीताज चन्नाना ने कहा, हालांकि स्मार्टफोन हमारे जीवन में अमूल्य उपकरण के रूप में काम करते हैं, लेकिन सार्थक उपयोग की वकालत करना महत्वपूर्ण है। इस कैम्पेन के पांचवें एडिश के साथ, हम अपने ऑडियंस को अपना प्तस्विचऑफ टाइम चुनने, प्यार का इजहार करने और परिवार के साथ मजबूत संबंधों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। आइए सामूहिक रूप से 20 दिसंबर को अपने परिवारों के लिए स्विचऑफ की प्रतिज्ञा करें और साथ बिताए गए मोमेंट में वास्तव में लीव द जॉय पाएं। इसके अतिरिक्त, इन चिंताओं को सक्रिय रूप से संबोधित करने की हमारी प्रतिबद्धता में, हमने अपने रिलेशनशिप एडवाइजर, कैथरीन प्राइस के कोलैब्रेशन से एक पर्सनलाइजड प्लान दिया है।

सूर्य कुमार का शतकीय प्रहार

● टी20 : दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत के सात विकेट पर 201 रन

भाषा। जोहानिसबर्ग

कप्तान सूर्यकुमार यादव के आक्रामक शतक की मदद से भारत ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीसरे और आखिरी टी20 मैच में सात विकेट पर 201 रन बनाए। श्रृंखला में 0–1 से पीछे चल रही भारतीय टीम को श्रृंखला गंवाने से बचने के लिए यह मैच हर हालत में जीतना है। दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर भारत को पहले बल्लेबाजी के लिए भेजा। सूर्यकुमार ने 56 गेंद में सात चौकों और आठ छक्कों की मदद से 100 रन बनाए जो उनका चौथा टी20 शतक है। वहीं युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने 41 गेंद में 60 रन की पारी खेली। दोनों ने तीसरे विकेट के लिए 112 रन की साझेदारी की। शुभमन गिल और जायसवाल ने पारी का आगाज करते हुए 14 गेंद में ही 29 रन जोड़ लिए लेकिन बाएं हाथ के स्पिनर केशव महाराज ने इस साझेदारी को बड़ा नहीं होने दिया। उन्होंने दो गेंद में दो विकेट लेकर गिल और तिलक वर्मा को पवेलियन भेजा। पावरप्ले के बाद भारत का स्कोर दो विकेट पर 62 रन था। अगले चार ओवर में 25 रन ही बने और दस ओवर के बाद स्कोर दो विकेट पर 87 रन था। इसके बाद दोनों ने आक्रामक तेवर अख्तियार कर लिए। सूर्यकुमार ने दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों को मैदान के चारों ओर शॉट खेले। तेज गेंदबाज एंडिले फेलुकवायो की उन्होंने सबसे ज्यादा धुनाई की। उन्होंने फेलुकवायो के 13वें ओवर में 22 रन निकाले जिसमें तीन छक्के और एक चौका शामिल था। उन्होंने छक्के के साथ अपना अर्धशतक पूरा किया। जायसवाल ने भी लिजाड विलियम्स को मिडविकेट पर छक्का लगाया। वह कलाई के स्पिनर तबरेज शम्सी को लांग आफ पर ऊंचा शॉट खेलने के प्रयास में रीजा हेंड्रिक्स को कैच दे बैठे। सूर्यकुमार ने विलियम्स की गेंद पर दो रन लेकर अपना शतक पूरा किया। इसके तुरंत बाद वह विलियम्स की गेंद पर सीमारेखा पर मैथ्यू ब्रीत्जके को कैच देकर लौटे।

स्कोरबोर्ड

भारत पारी : जायसवाल का हेंडरिक्स बो शम्सी 60,गिल पगबाधा बो महाराज 8,वर्मा का मार्कराम बो महाराज 0, सूर्यकुमार का ब्रीज्के बो विलियम्स 100, रिंकू का स्टब्स बो बरगर 14, जितेश हिट विकेट बो विलियम्स 4,जडेजा रन आउट 4, अर्शदीप नाबाद 0,सिराज नाबाद 2, **अतिरिक्त** : नौ रन,**कुल योग** : 20 ओवर में सात विकेट पर 201 रन,**विकेट पतन** :1- 29, 2- 29, 3- 141, 4- 188, 5- 194, 6- 199, 7- 199 , **गेंदबाजी** : बरगर 4- 0- 39- 1,मार्कराम 1- 0- 15- 0,महाराज 4- 0- 26- 2,विलियम्स 4- 0- 46- 2, फेलुक्वायो 3 - 0- 33- 0, शम्सी 4- 0- 38-1

दीपक हुड्डा के 180 रन से कर्नाटक को हराकर राजस्थान विजय हजारे ट्रॉफी के फाइनल में

भाषा। राजकोट

कप्तान दीपक हुड्डा के शानदार 180 रन की मदद से राजस्थान ने कर्नाटक को छह विकेट से हराकर विजय हजारे ट्रॉफी के फाइनल में प्रवेश कर लिया। हुड्डा ने 128 गेंद की पारी में 19 चौके और पांच छक्के लगाए। राजस्थान ने जीत का लक्ष्य 38 गेंद बाकी रहते हासिल कर लिया। करण लाम्बा ने हुड्डा का बखूबी साथ निभाते हुए 112 गेंद में नाबाद 73 रन बनाए। राजस्थान ने छठे ओवर में तीन विकेट सिर्फ 23 रन पर गंवा दिए थे जिसके बाद इन दोनों ने चौथे विकेट के लिए 255 रन जोड़े। राजस्थान का सामना शनिवार को फाइनल में हरियाणा से होगा। हरियाणा ने पांच बार की चैम्पियन तमिलनाडु को 63 रन से हराकर पहली बार फाइनल में जगह बनाई है। इससे पहले कर्नाटक के लिए अभिनव मनोहर ने 91 और मनोज भंडागे ने 63 रन की पारियां खेली।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला में शमी का खेलना संदिग्ध

● इंग्लैंड के खिलाफ कर सकते है वापसी

भाषा। बेंगलुरू

टखने की चोट से उबर रहे भारत के सीनियर तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी के लिए दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 26 दिसंबर से सेंचुरियन में शुरू हो रही टेस्ट श्रृंखला के लिए समय पर फिट होने की राह आसान नहीं होगी। शमी को 30 नवंबर को घोषित भारत की टेस्ट टीम में शामिल किया गया था लेकिन इस 33 वर्षीय तेज गेंदबाज की उपलब्धता चोट से उनके उबरने पर निर्भर करेगी। इस संदर्भ में पीटीआई का अनुमान है कि शमी कप्तान रोहित शर्मा, सीनियर बल्लेबाज विराट कोहली, साथी तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और टेस्ट टीम के अन्य सदस्यों के साथ शायद दक्षिण अफ्रीका रवाना नहीं हो पाएंगे। इन सभी को शुक्रवार को जोहानिसबर्ग के लिए रवाना होना है। शमी के उबरने की प्रक्रिया को अपने घर में जारी रखने की उम्मीद है और यह तेज गेंदबाज इंग्लैंड के खिलाफ 25 जनवरी से हैदराबाद में शुरू हो रही घरेलू टेस्ट श्रृंखला के साथ वापसी कर सकता है। अगर शमी के विकल्प की जरूरत पड़ी है तो अजित अगरकर के नेतृत्व वाली चयन समिति के पास भारत ए टीम से गेंदबाज को सीनियर टीम में शामिल करने का विकल्प होगा। भारत ए टीम भी दक्षिण अफ्रीका दौरे पर है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले मैच से पूर्व टेस्ट टीम के सदस्य 20 दिसंबर से आपस में टीम बनाकर तीन दिवसीय मैच खेलेंगे। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरा टेस्ट तीन जनवरी से केपटाउन में खेला जाएगा। इस बीच शमी के लिए खुशखबरी है क्योंकि बुधवार को उन्हें प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार के लिए नामित किया गया। खेल मंत्रालय से मिली सूचना के अनुसार भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने मंत्रालय से शमी के नाम को शामिल करने का विशेष आग्रह किया क्योंकि शुरुआती सूची में उनका नाम नहीं था।

एएफसी के छह विदेशी खिलाड़ियों के नियम का पालन करेगा सुपर कप

नई दिल्ली। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने गुरुवार को घोषणा की कि कलिंगा सुपर कप टूर्नामेंट एएफसी (एशियाई फुटबॉल परिसंघ) के छह विदेशी खिलाड़ियों के नियम का पालन करेगा। इसमें भाग लेने वाली 16 प्रतिभागी टीम अपने शुरूआती लाइन अप मे छह विदेशी खिलाड़ियों को शामिल कर सकती हैं जिसमें से एक एशिया से हो। यह एएफसी क्लब प्रतियोगिता के दिशानिर्देशो के अनुसार ही है। एआईएफएफ ने कहा, यह फैसला इस बात को ध्यान में रखते हुए लिया गया है कि कलिंगा सुपर कप की विजेता टीम 2024-25 एएफसी चैम्पियंस लीग 2 के लिए क्वालीफाई करेगी।

भारत को एशियाई युवा रैपिड शतरंज में चार स्वर्ण, तीन रजत और दो कांस्य

नई दिल्ली। भारत ने संयुक्त अरब अमीरात में चल रही एशियाई युवा रैपिड शतरंज चैम्पियनशिप में चार स्वर्ण, तीन रजत और दो कांस्य पदक जीते।भाग्यश्री पाटिल (अंडर 18, लड़कियां), सपरिया घोष (अंडर 14 लड़कियां), मुहम्मद श्यान नौशी इब्राहिम (अंडर 8 लड़के) और श्रवणिका (अंडर 8 लड़कियां) ने स्वर्ण पदक जीता। रजत पदक शेराली पटनायक(अंडर 8 लड़कियां), आरित कपिल (अंडर 8 लड़के) और कियाना परिहार (अंडर 8 लड़कियां) ने जीता। सेरा डगारिया और दिवि बिजेश को अंडर 16 लड़कियों के वर्ग में कांस्य पदक मिला। क्लासिकल मुकाबले बृहस्पतिवार से शुरू हुए। भारत के 60 खिलाड़ी इसमें भाग ले रहे है।

श्रीलंका क्रिकेट ने जयसूर्या को एक साल के लिए क्रिकेट सलाहकार नियुक्त किया

कोलंबो। श्रीलंका क्रिकेट ने बृहस्पतिवार को पूर्व सलामी बल्लेबाज सनत जयसूर्या को एक साल के लिए पूर्णकालिक क्रिकेट सलाहकार नियुक्त किया। इससे पहले बुधवार को नई चयन समिति का गठन किया गया था जिसके अध्यक्ष पूर्व सलामी बल्लेबाज उपुल थरंगा है। श्रीलंका क्रिकेट ने एक विज्ञप्ति मे कहा , इस भूमिका मे जयसूर्या की जिम्मेदारी यह देखने की होगी कि श्रीलंका क्रिकेट के राष्ट्रीय कार्यक्रम पूरे पेशेवरपन के साथ लागू हो रहे है और उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सभी खिलाड़ियों और कोचिंग स्टाफ पर नजरें है। जयसूर्या तुरंत अपना कार्यभार संभालेंगे। वह कोलंबो के प्रेमदासा स्टेडियम के हाई परफार्मेंस सेंटर से काम करेंगे।

पूर्व अधिकारी ने रिश्वत लेने से इनकार किया

तोक्यो। तोक्यो ओलंपिक आयोजन समिति के पूर्व सदस्य हारयुकी ताकाहाशी गुरुवार को तोक्यो जिला अदालत में पेश हुए और खेलों से जुड़े रिश्वत के मामले में खुद को निर्दोष बताया। ताकाहाशी को एक साल से भी अधिक समय पहले गिरफ्तार किया गया था और अभी यह स्पष्ट नही है कि उनके मामले की सुनवाई कब खत्म होगी। बचाव पक्ष अगले साल की शुरूआत में अपना पक्ष रखेगा।

चोपड़ा को धैर्य रखने की जरूरत: कोलिन जैक्सन

कोलकाता। वेल्स के 110 मीटर बाधा दौड़ के पूर्व विश्व रिकॉर्ड धारक कोलिन जैक्सन का मानना है कि ओलंपिक खिताब का बचाव करना एक बड़ी उपलब्धि है और भारत के चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा को अगले साल पेरिस में यह उपलब्धि हासिल करने के लिए धैर्य रखने की जरूरत है।तोक्यो ओलंपिक में एतिहासिक स्वर्ण पदक जीतने के बाद से चोपड़ा भारतीय एथलेटिक्स का चेहरा है।

वल्ली, डुप्लेसी के अर्धशतक से दक्षिण अफ्रीका ए ने भारत ए से ड्रॉ खेला

पोशेफ्स्ट्रूम। यासीन वल्ली और जीन डु प्लेसी के नाबाद अर्धशतकों की मदद से दक्षिण अफ्रीका ए ने पहले अनधिकृत टेस्ट के चौथे और आखिरी दिन भारत ए को ड्रॉ पर रोका। दक्षिण अफ्रीका ए ने दूसरी पारी में 42 ओवर में दो विकेट पर 152 रन बनाए जिसके बाद दोनों टीमों ने ड्रॉ पर सहमति जताई। इससे पहले

भारत ए टीम पहली पारी में 417 रन पर आउट हुई। मेजबान टीम ने 12वें ओवर में दो विकेट 48 रन पर गंवा दिए थे। सलामी बल्लेबाज कैमरन डीन एस और तीसरे नंबर पर उतरे रुबिन हरमन सस्ते में आउट हो गए। इसके बाद वल्ली ने 137 गेंद में आठ चौकों की मदद से नाबाद 72 और डु प्लेसी ने 82 गेंद में पांच चौकों की मदद से नाबाद 50 रन बनाए। उन्होंने भारतीय तेज गेंदबाजों को आसानी से खेला खासतौर पर प्रसिद्ध कृष्णा को जिन्होंने पहली पारी में हैट्रिक समेत पांच विकेट लिए थे। इससे पहले भारत ने पहली पारी में छह विकेट पर 377 रन से आगे खेलना शुरू किया जब शार्दुल ठाकुर 70 रन पर खेल रहे थे। वह अपने स्कोर में छह रन ही जोड़ सके और तेज गेंदबाज इवान जोंस की गेंद पर वल्ली को कैच दे बैठे। सौरभ कुमार ने 22 रन बनाए और भारत को 400 रन के पार ले गए। दक्षिण अफ्रीका के लिए जोंस ने चार विकेट लिए जबकि तेज गेंदबाज सिया प्लाजी ने तीन विकेट चटकाए। दूसरा अनधिकृत टेस्ट 26 दिसंबर से बेनोनी में शुरू होगा।

शुभा-जेमिमा के खेल से भारत का रनों का पहाड़

● स्टंप तक बनाए सात विकेट पर 410 रन

भाषा। नवी मुंबई

पदार्पण कर रही शुभा सतीश (69) और जेमिमा रोड्रिग्स (68) के शानदार अर्धशतकों से भारतीय महिला टीम ने बल्ले से आक्रामक प्रदर्शन करते हुए गुरुवार को यहां इंग्लैंड के खिलाफ एकमात्र महिला टेस्ट के पहले दिन स्टंप तक सात विकेट पर 410 रन का विशाल स्कोर बना लिया। करीब दो साल में पहला टेस्ट और अपनी सरजमीं पर नौ साल में लाल गेंद का अपना पहला मैच खेल रही भारतीय टीम ने डीवाई पाटिल स्टेडियम की बल्लेबाजी के मुफीद पिच पर दमदार खेल दिखाया और प्रति ओवर लगभग पांच रन जोड़े। चौबीस साल की शुभा ने शानदार फुटवर्क के साथ गेंदबाजों को लाइन एवं लेंथ को अच्छी तरह पढ़ते हुए 76 गेंद में 13 चौकों से 69 रन की पारी खेली। उन्होंने करीब 91 के स्ट्राइक रेट से रन जुटाए। इस तरह शुभा पदार्पण में अर्धशतक जड़ने वाली भारत की 12वीं बल्लेबाज बन गईं। लेकिन वह अपनी

पारी को सैकड़े तक नहीं ले जा सकीं जिससे वह देश के लिए पदार्पण में शतक जड़ने वाली पहली महिला क्रिकेटर बन सकती थीं। सोफी एक्लेस्टन (85 रन देकर एक विकेट) ने उन्हें नैट साइवर ब्रंट के हाथों कैच आउट कराया। जेमिमा ने भी अपने अनुभव के दम पर 99 गेंद की पारी के दौरान 11 चौके जमाए। यह युवा बल्लेबाज भी अच्छी लय में थी लेकिन लॉरेन बेल (64 रन देकर दो विकेट) की गेंद पर बोल्ड हो गई। भारतीय टीम तेज शुरुआत के बाद लड़खड़ाती दिख रही थी जिसके बाद शुभा और जेमिमा मेजबान टीम के लिए दबदबा बनाने में अहम रहीं। इन दोनों ने तीसरे विकेट के लिए रिकॉर्ड 115 रन की साझेदारी निभाई। शुभा और जेमिमा के बीच यह भागीदारी तीसरे विकेट के लिए टेस्ट क्रिकेट में दूसरी सबसे बड़ी साझेदारी बन गई है। भारतीय टीम कई रिकॉर्ड बनाने के करीब थी लेकिन चूक गई। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने स्वीप शॉट से शुरूआत की और वह अच्छी फॉर्म में दिख रही थीं लेकिन एक रन लेने के प्रयास में डैनी वियाट के थ्रो ने उन्हें रन आउट कर दिया। हरमनप्रीत ने 81 गेंद में छह चौकों की मदद से 49 रन बनाए।

स्कोरबोर्ड

भारत पहली पारी :मंधाना बो बेल 17,वर्मा बो क्रॉस 19,शुभा का ब्रंट बो एक्सेलेटन 69, रौड्रिग्स बो बेल 68,कौर रन आउट 49,भाटिया का बेल बो डीन 66, शर्मा नाबाद 60,राणा बो ब्रंट 30,वस्त्राकर नाबाद 4, अतिरिक्त : 28 रन, कुल योग : 94 ओवर में सात विकेट पर 410 रन, विकेट पतन :1-25, 2-47, 3-162, 4-190, 5-306, 6-313, 7-405, गेंदबाजी : क्रॉस 14-0-64-1, बेल 15-1-64 -2, ब्रंट 11 -4 - 25 -1, फिलेर 15-1 -84 - 0, डीन 17-1-62-1, एक्सेलेटन 22-4-85-1

वॉर्नर के 164 रन, आस्ट्रेलिया के पांच विकेट पर 346 रन

पर्थ (आस्ट्रेलिया)। सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर ने अपनी विदाई टेस्ट श्रृखंला मे शानदार शतक जड़ा जिससे आस्ट्रेलिया ने गुरुवार का यहां तीन मैचो की श्रृंखला के पहले मुकाबले के शुरूआती दिन पाकिस्तान के कम अनुभवी गेंदबाजों के खिलाफ स्टंप तक पांच विकेट पर 346 रन बना लिए। वॉर्नर ने 211 गेंद मे 164 रन की शतकीय पारी खेली और यह उनका साल का पहला टेस्ट शतक था जिससे उन्होंने कप्तान पैट कमिंस के उछाल भरी पिच पर टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने के फैसले को सही साबित किया। सैंतीस साल के वॉर्नर अपने गृहनगर सिडनी में अंतिम टेस्ट के बाद संन्यास ले लेंगे। उन्होंने पहले दो सत्र मे पाकिस्तानी गेंदबाजो को जरा भी राहत नही लेने दी और अंतिम घंटे मे डीप स्क्वायर लेग पर आउट होने से पहले 16 चौके और चार छक्के जमाए। स्टंप तक मिचेल मार्श 15 और एलेक्स कैरी 14 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे।

केकेआर की कप्तानी फिर अय्यर को, राणा उप कप्तान

कोलकाता। कोलकाता नाइटराइडर्स के टीम प्रबंधन ने गुरुवार को घोषणा की कि भारतीय मध्यक्रम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 मे टीम की अगुआई करेंगे। अय्यर पीठ की चोट के कारण आईपीएल के पूरे 2023 चरण में नही खेल पाए थे जिससे कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) को कप्तानी की जिम्मेदारी नीतिश राणा को सौंपनी पड़ी थी। अय्यर ने फिर अप्रैल में लंदन मे सर्जरी कराई थी। केकेआर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी वेंकी मैसूर ने यह घोषणा करते हुए कहा, हमें खुशी है कि वह वापस आ गए है और कप्तानी की जिम्मेदारी उठाएंगे।

क्रॉनिक किडनी रोग से पीड़ित हैं कैमरन ग्रीन

पर्थ। आस्ट्रेलिया के आल राउंडर कैमरन ग्रीन ने खुलासा किया कि जब वह पैदा हुए थे तो वह इररिवर्सिबल क्रॉनिक किडनी रोग से पीड़ित थे। आस्ट्रेलिया के इस दुबले पतले हरफनमौला खिलाड़ी ने कहा कि एक समय उनके 12 साल से ज्यादा जीने की उम्मीद नही थी। उन्होंने कहा कि इस बीमारी के कोई लक्षण नही होते और इसमें किडनी (वृक्क) को ठीक भी नही किया जा सकता। ग्रीन ने चैनल 7 से कहा, जब मेरा जन्म हुआ तो मेरे माता पिता को बताया गया कि मुझे इररिवर्सिबल क्रॉनिक किडनी बीमारी है जिसके कोई लक्षण नही होते लेकिन अल्ट्रासाउंड के जरिए इसका पता चला। उन्होंने कहा, क्रॉनिक किडनी बीमारी बढ़ती रहती है। दुर्भाग्य से मेरा गुर्दा अन्य लोगों के गुर्दे की तरह खून को साफ नही करता। यह 24 साल का खिलाड़ी आस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम का अहम सदस्य है।

गेमिंग एक्सपीरियंस को और बढ़ाने की योजना

नई दिल्ली। हाई-परफॉर्मेंस स्मार्टफोन आईकू ने सुपर कंप्यूटिंग चिप क्यू1 - आईकू 12 के साथ स्नैपड्रैगन 8 जेन 3 वाला भारत का पहला स्मार्टफोन उतारा है। पहला 3000नीट्स पीक ब्राइटनेस डिस्प्ले और इमर्सिव गेमिंग फीचर्स से लैस है, जो मोबाइल गेमिंग एक्सपीरियंस के स्टैंडर्ड को बढ़ाता है।12 जी बी 256 जी बी के लिए कीमत 52,999 रुपए और 16 जी बी 512 जी बी वैरिएंट के लिए कीमत 57,999 रुपए है। आईकू 12 एक बेजोड़ और लुभावना फ्लैगशिप एक्सपीरियंस देने के लिए बीएमडब्ल्यू एम मोटरस्पोर्ट से इंस्पायर्ड है। आईकू 12 में अत्याधुनिक परफॉर्मेंस के साथ-साथ टॉप लेवल मटेरियल का इस्तेमाल और सोफेस्टिकेटेड डिजाइन भी शामिल है। यह डिवाइस हाई-डेफिनेशन 144 हर्ट्ज एमोलेड डिस्प्ले, 50 एम पी 50 एम पी 64 एम पी लीजेंडरी ट्रिपल रियर कैमरा सिस्टम के साथ स्मार्टफोन में भारत का आईकू 12 14 दिसंबर 2023 से आईकू ई-स्टोर और अमेजॉन पर दोपहर 12 बजे से दो कलर ऑप्शन लीजेंड और अल्फा में खरीदने के लिए उपलब्ध होगा। फ्लैगशिप स्मार्टफोन के लॉन्च के बारे में, आईकू इंडिया के सीईओ निपुन मार्या ने कहा, आईकू में, हम उपभोक्ताओं की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए लेटेस्ट मोबाइल टेक्नोलॉजी लाने के लिए समर्पित हैं, और हम उन कुछ ब्रांडों में से एक होने पर गर्व करते हैं। अमेजन इंडिया के वायरलेस और टेलीविजन के डायरेक्टर रंजीत बाबू ने कहा कि,हम अमेजनडॉटइन पर, आईकू के कोलैब्रेशन से, बहुप्रतीक्षित आईकू 12 में सुपरकंप्यूटिंग चिप क्यू1 के साथ भारत का पहला स्नैपड्रैगन8 जेन 3 स्मार्टफोन पेश करके रोमांचित हैं।

राजस्थान रॉयल्स टीम मालिकों पर जुर्माने की कटौती बरकरार

मुंबई। बॉम्बे उच्च न्यायालय ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) क्रिकेट फ्रेंचाइजी राजस्थान रॉयल्स के मालिकों पर कथित वित्तीय अनियमितताओं के लिए लगाए गए जुर्माने को कम करने के एक न्यायाधिकरण के आदेश को बरकरार रखा है। न्यायाधिकरण ने जुर्माने की 98 करोड़ रुपए की राशि को घटाकर 15 करोड़ रुपए करने का आदेश पारित किया था। न्यायमूर्ति के आर श्रीराम और न्यायमूर्ति नीला गोखले की खंडपीठ ने बुधवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दायर की गई अपील को खारिज कर दिया जिसमे उसने 11 जुलाई 2019 को न्यायाधिकरण द्वारा पारित आदेश को चुनौती दी थी। उच्च न्यायालय ने अपने आदेश मे कहा कि न्यायाधिकरण सबूत और विश्लेषण के आधार पर ही इस राशि को घटाने के निष्कर्ष पर पहुंचा है। अदालत ने अपने आदेश में कहा, ए निष्कर्ष भ्रष्ट होने से कोसो दूर है। इसलिए मामले मे कानून का सवाल ही पैदा नही होता।

पेरिस सेंट जर्मेन चैम्पिंयस लीग के राउंड 16 में, पोर्टो भी नॉकआउट राउंड में पहुंचा

जिनेवा। पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) ने ग्रुप एफ में बोरूसिया डोर्टमंड से 1-1 के ड्रा के बावजूद चैम्पिंयस लीग के नॉकआउट में जगह बनाई जिसमें न्यूकासल की हार का अहम योगदान रहा। पीएसजी ने ग्रुप एफ मे शीर्ष पर रहे बोरूसिया डोर्टमंड से ड्रा के बावजूद दूसरा स्थान हासिल करने मे सफलता हासिल की क्योंकि न्यूकासल की टीम घरेलू मैदान पर एसी मिलान से 1-2 से हार गई। पोर्टो ने भी सोमवार को शखतर दोनेतस्क पर 5-3 की जीत से राउंड 16 में प्रवेश किया क्योंकि उसे ऐसा करने के लिए जीत की दरकार थी। बोरूसिया डोर्टमंड ने करीम एडेएमी के 51वें मिनट में किए गए गोल से बढ़त बनाई जिसके बाद 17 वर्षीय वारेन जायर एमेरी ने 56वें मिनट मे पीएसजी के लिए बराबरी गोल दागा।

अनुपमा ने पहला सीनियर राष्ट्रीय खिताब जीता

चेन्नई। तमिलनाडु की अनुपमा रामचंद्रन ने 0-2 से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए गत चैम्पियन मध्यप्रदेश की अमी कमानी को 3-2 से हराकर राष्ट्रीय महिला बिलियर्ड्स खिताब जीत लिया है। रविवार को 6 रेड स्नूकर फाइनल और बुधवार को 15 रेड स्नूकर फाइनल में अमी से हारने के बाद अनुपमा ने पहला राष्ट्रीय खिताब जीता। अमी ने 2017 में तीनों खिताब जीते थे। अनुपमा ने उन्हें 101 . 60, 101 . 82, 101 . 54 से मात दी।

मेस्सी, एमबाप्पे और हैलेंड साल के दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पुरुष फुटबॉलर के पुरस्कार की दौड़ में

ज्यूरिख। फीफा के 2023 के साल के सर्वश्रेष्ठ पुरुष फुटबॉल खिलाड़ी के पुरस्कार के लिए इस बार मुकाबला लियोनल मेस्सी, काइलियान एमबाप्पे और एर्लिंग हैलेंड के बीच है।फुटबॉल की वैश्विक संचालन संस्था फीफा ने गुरुवार को पुरस्कार की दौड़ मे शामिल खिलाड़ियों की अंतिम सूची की घोषणा की। यही तीनो खिलाड़ी बेलोन डियोर पुरस्कार की दौड़ मे भी शामिल थे जिसे अक्टूबर मे मेस्सी ने जीता था।बेलोन डियोर मे हालांकि 2022 विश्व कप के प्रदर्शन पर भी गौर किया गया था

सेमीफाइनल में जर्मनी से हारा भारत

● जूनियर हॉकी विश्व कप
● कांस्य पदक के लिए स्पेन से खेलेगा

भाषा। कुआलालंपुर

बारह पेनल्टी कॉर्नर में से एक पर भी गोल नहीं कर पाने का खामियाजा भारत को भुगतना पड़ा और जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप के सेमीफाइनल में जर्मनी ने बृहस्पतिवार को उसे 4–1 से हराकर तीसरी बार खिताब जीतने का सपना तोड़ दिया। अब भारत को कांस्य पदक के लिए शनिवार को स्पेन से खेलना होगा। वहीं जर्मनी की टक्कर फाइनल में फ्रांस से होगी जिसने स्पेन को दूसरे सेमीफाइनल में 3–1 से हराया। छह बार की चैम्पियन जर्मनी को मैच में दो पेनल्टी कॉर्नर मिले और दोनों पर गोल हुए। पिछले मैच में नीदरलैंड पर 4–3 से शानदार जीत दर्ज करने वाली भारतीय

टीम उस लय को सेमीफाइनल में कायम नहीं रख सकी। क्वार्टर फाइनल में दो गोल से पिछड़ने के बाद वापसी करने वाली भारतीय टीम के पास जर्मनी के मजबूत डिफेंस और चुस्त आक्रमण का जवाब नहीं था। जर्मनी ने चारों क्वार्टर में एक एक गोल किया जबकि भारत के लिए एकमात्र गोल चिरमाको सुदीप ने 11वें मिनट में दागा। जर्मनी के लिए हेसबाक बेन ने आठवें मिनट में मैदानी गोल और 30वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर गोल किया जबकि ग्लेंडर पॉल ने 41वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील किया। स्पर्लिंग फ्लोरियन ने आखिरी सीटी बजने से दो मिनट पहले मैदानी गोल करके 4 . 1 से जीत पर मुहर लगाई। पहले क्वार्टर में मुकाबला बराबरी का था जब हेसबाक ने आठवें मिनट में गोल किया तो भारत के लिए चिरमाको ने तीन मिनट बाद बराबरी का गोल दागा। पहले क्वार्टर में भारत को चार पेनल्टी कॉर्नर मिले लेकिन एक पर भी गोल नहीं हो सका। दूसरे क्वार्टर में मिले छह पेनल्टी कॉर्नर बेकार गए। वहीं जर्मनी के लिए हेसबाक ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल कर दिया। तीसरे क्वार्टर में पॉल ने दूसरे पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करके जर्मनी को 3–1 से बढ़त दिला दी। स्पर्लिंग ने 58वें मिनट में चौथा गोल किया। भारत ने 2001 में होबार्ट और 2016 में लखनऊ में जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप जीता था। इसके अलावा वह 1997 में इंग्लैंड के मिल्टन कीज में उपविजेता रहा था। पिछली बार दो साल पहले भुवनेश्वर में उसे चौथे स्थान से संतोष करना पड़ा था। इस साल भारत का सामना जर्मनी से पांच बार हुआ है और पांचों बार उसे पराजय का सामना करना पड़ा।

नेपाल को सात विकेट से हराकर भारत की दृष्टिबाधित महिला टीम ने श्रृंखला जीती

मुंबई। सुषमा पटेल की 37 गेंद में 45 रन की पारी की बदौलत भारत ने गुरुवार को चौथे टी20 मुकाबले में नेपाल को यहां सात विकेट से हराकर दृष्टिबाधित महिलाओं की पांच मैच की द्विपक्षीय क्रिकेट श्रृंखला में 3–1 की विजई बढ़त बना ली। नेपाल की टीम टॉस हारने के बाद बल्लेबाजी करने उतरी। मेहमान टीम ने कप्तान बिंता पुन की 69 रन की पारी और मानकेशी चौधरी के साथ उनकी 101 रन की साझेदारी से 20 ओवर में छह विकेट पर 165 रन का स्कोर खड़ा किया। इस जोड़ी के टूटने के बाद भारत ने नेपाल को लगातार झटके दिए जिससे मेहमान टीम ने अंतिम चार ओवर में चार विकेट गंवाए। मैच की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुनी गई सुषमा के अलावा खानी, बसंती हंसदा और सिमु दास की पारियों की बदौलत भारत ने तीन विकेट गंवाकर 19वें ओवर में लक्ष्य हासिल कर लिया। श्रृंखला का अंतिम मैच शुक्रवार को खेला जाएगा। भारत ने पहले दो टी20 मैच जीते थे जिसके बाद नेपाल ने वापसी करते हुए बुधवार को तीसरे मुकाबले में जीत दर्ज की थी।

खेलो इंडिया पैरा खेल: मनीष नरवाल को एयर पिस्टल में स्वर्ण

भाषा। नई दिल्ली

भारत के शीर्ष पैरा निशानेबाज मनीष नरवाल ने गुरुवार को यहां खेलो इंडिया पैरा खेलों में पुरुष 10 मीटर एयर पिस्टल (एसएच1 वर्ग) स्पर्धा का स्वर्ण पदक जीता। तोक्यो पैरालंपिक की पी4 मिश्रित 50 मीटर पिस्टल एसएच1 वर्ग का स्वर्ण पदक जीतने वाले 21 साल के नरवाल ने कर्णी सिंह निशानेबाजी रेंज में 240.2 अंक के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया। हाल में हांगझोउ पैरा एशियाई खेलों में 10 मीटर एयर पिस्टल एसएच1 वर्ग का कांस्य पदक जीतने वाले हरियाणा के नरवाल ने इससे पहले लिमा विश्व निशानेबाजी पैरा खेल चैंपियनशिप में 239.7 अंक जुटाकर स्वर्ण पदक जीता था लेकिन यहां वह इससे भी बेहतर प्रदर्शन करने में सफल रहे। हांगझोउ में 10 मीटर

एयर पिस्टल एसएच1 वर्ग में मनीष को पछाड़कर रजत पदक जीतने वाले रुद्रांश खंडेलवाल दूसरे स्थान पर रहे। तमिलनाडु की पावरलिफ्टर कस्तूरी राजामनी ने 67 किग्रा वर्ग में अपने तीसरे प्रयास में 100 किग्रा वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता। एलीट 73 किग्रा वर्ग में गुजरात की रेशमा मोगिल 72 किग्रा वजन उठाकर शीर्ष पर रहीं। पुरुष 80 किग्रा वर्ग में पंजाब के गुरसेवक सिंह ने 162 किग्रा वजन उठाकर शुरुआत की। उन्होंने दूसरे प्रयास में 166 किग्रा और फिर तीसरे प्रयास में 171 किग्रा वर्ग उठाकर स्वर्ण पदक अपनी झोली में डाला। केरल के अब्दुल सलाम (155 किग्रा) को रजत जबकि दिल्ली के हनी डबास (152 किग्रा) को कांस्य पदक मिला। कर्नाटक के संदेश बीजी ने एलीट 88 किग्रा वर्ग में 171 किग्रा वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता। पैरा टेबल टेनिस में तोक्यो पैरालंपिक की रजत पदक विजेता गुजरात की भाविना पटेल ने महिला क्लास–4 वर्ग में गुजरात की शमीम चावडा के खिलाफ अपने पहले मैच में 3–0 की आसान जीत दर्ज की। बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेल 2022 की कांस्य पदक विजेता गुजरात की सोनल पटेल ने महिला क्लास 1–3 वर्ग के अपने पहले मैच में तमिलनाडु की फातिमा बीवी को 3–0 से हराया।

ओडिशा मास्टर्स: चिराग तीसरे वरीय क्रिस्टोफरसन को हराकर क्वार्टर फाइनल में

कटक। दुनिया के 106वें नंबर के खिलाड़ी भारत के चिराग सेन ने गुरुवार को यहां डेनमार्क के तीसरे वरीय मैड्स क्रिस्टोफरसन को हराकर उलटफेर करते हुए ओडिशा मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष एकल के क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। महिला एकल प्री क्वार्टर फाइनल में हालांकि चीनी ताइपे की शीर्ष वरीय वेन ची सू को हांगकांग की लो सिन एन हैपी के खिलाफ 15–21, 16–21 से शिकस्त झेलनी पड़ी। गैरवरीय चिराग ने दुनिया के 52वें नंबर के डेनमार्क के खिलाड़ी को प्री क्वार्टर फाइनल में कड़े मुकाबले में 21–10, 15–21, 21–17 से हराया। महिला युगल में अश्विनी पोनप्पा और तनीषा क्रास्टो तथा रुतुपर्णा पांडा और श्वेतपर्णा पांडा की जोड़ी क्वार्टर फाइनल में प्रवेश करने में सफल रहीं जबकि एकल में उन्नति हुड्डा और किरण जॉर्ज ने भी अंतिम आठ में जगह बनाई। मिश्रित युगल में तनीषा और ध्रुव कपिला की जोड़ी ने अमरी सयाहनावी और विनी ओकतावियना कांडोव की इंडोनेशिया की जोड़ी को 21–16, 21–12 से शिकस्त दी जबकि अश्विनी और रोहन कपूर ने सुमित रेड्डी और सिक्की रेड्डी की आठवीं वरीय हमवतन भारतीय जोड़ी को सीधे गेम में 21–13, 21–13 से हराया। उन्नति ने प्री क्वार्टर फाइनल में अस्मिता चालिहा को 21–18, 21–16 से हराया। दुनिया की पूर्व नंबर एक खिलाड़ी और चौथी वरीय जापान की नोजोमी ओकुहारा ने इंडोनेशिया की स्टेफनी विदजाजा को 21–11, 21–16 से हराया। पुरुष एकल में गैरवरीय शुभंकर डे ने उलटफेर करते हुए पांचवें वरीय मिथुन मंजूनाथ को 21–15, 14–21, 15–21 से शिकस्त दी।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।
पत्रवार्ता ऑफिस- एफ-31, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201301, उत्तर प्रदेश, दूरभाष- 120-4879900।